



# भूमिका ।



इंग्लैण्डके सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर सेमुएल स्माइल्स अनेक उपयोगी ग्रन्थ लिख गये हैं । उनके ग्रन्थोंका बड़ा आदर है । यूरोप और भारतवर्षकी अनेक भाषाओंमें उनके अनुवाद हो चुके हैं । डाक्टर स्माइल्सका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ सेल्फ-हेल्प ( Self-Help ) है । यह ग्रन्थ पहले पहल सन् १८५९ में प्रकाशित हुआ और लोगोंकी इतना पसन्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी पाँच हजार प्रतियाँ बिक गईं । उसके बाद आजतक तो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ ग़रप चुकी होंगी । इतने अच्छे और लोकोपकारी ग्रन्थका हिन्दीमें अभाव देखकर मैं आज अपने पाठकोंके सम्मुख सेल्फ-हेल्पका यह हिन्दी रूपान्तर लेकर उपस्थित हुआ हूँ ।

## इस ग्रन्थके बननेका कारण

डाक्टर स्माइल्सने अपनी भूमिकामें इस प्रकार वर्णन किया है:—

“ इंग्लैण्डके उत्तरीय प्रान्तके एक कस्बेमें दो तीन नवयुवकोंने मिलकर विचार किया कि हम लोग शामको एक जगह एकट्ठे हुआ करें और एक दूसरेकी सहायतासे पढ़ने लिखनेका अभ्यास बढ़ावें । ये लोग बहुत ही गरीब थे, इस लिए इन्हें कोई अच्छा स्थान इस कार्यके लिए नहीं मिल सका । इनका एक मित्र एक छोटेसे घरमें रहता था । उसमें एक छोटीसी कोठरी थी । वस, ये लोग उसीमें एकत्र होने लगे और अपना कार्य उत्साहके साथ करने लगे । इनकी देखादेखी और भी कई लोगोंकी इच्छा हुई और वे भी इस मण्डलीमें आने लगे । फल यह हुआ कि जगह ओछी पड़ने लगी । गर्मीका मौसम आ चुका था, इस लिए कोठरीके बाहर जो छोटासा बगीचा था, ये लोग उसीमें खुली हवामें बैठकर अपना काम चलाने लगे । परन्तु कभी कभी आँधी-पानी आजानेके कारण इनके पढ़ने लिखनेमें व्याघात पड़ने लगा और इन्हें कष्ट होने लगा ।

इतनेमें ही जाड़ेके दिन आ गये । रातको खूब ठण्ड पड़ने लगी । थोड़े आदमी होते, तो कोई छोटी मोटी कोठरी देख ली जाती; परन्तु तब तक एकत्र होने-वालोंकी संख्या बहुत बढ़ गई थी । यद्यपि इस पाठशालामें आनेवाले प्रायः मजदूर लोग थे और उनकी आर्थिक अवस्था बहुत ही शोचनीय थी, तो भी इस समय अपने आन्तरिक प्रेमके कारण उन्होंने हिम्मत बाँधी और एक बड़ा कमरा किरायेपर ले लेनेका संकल्प कर लिया । तलाश करनेसे एक ऐसा कमरा



**भूमिका ।**



ह्यू ग्लेण्डके सुप्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर सेमुएल स्माइल्स अनेक उपयोगी ग्रन्थ लिख गये हैं। उनके ग्रन्थोंका बड़ा आदर है। यूरोप और भारतवर्षकी अनेक भाषाओंमें उनके अनुवाद हो चुके हैं। डाक्टर स्माइल्सका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ सेल्फ-हेल्प ( Self-Help ) है। यह ग्रन्थ पहले पहल सन् १८५९ में प्रकाशित हुआ और लोगोंको इतना पसन्द आया कि पहले ही वर्षमें इसकी बीस हजार प्रतियाँ बिक गईं। उसके बाद आजतक तो इसकी न जाने कितनी प्रतियाँ खप चुकी होंगी। इतने अच्छे और लोकोपकारी ग्रन्थका हिन्दीमें अभाव देखकर मैं आज अपने पाठकोंके सम्मुख सेल्फ-हेल्पका यह हिन्दी रूपान्तर लेकर उपस्थित हुआ हूँ।

### इस ग्रन्थके बननेका कारण

डाक्टर स्नाइत्सने अपनी भूमिकामे इस प्रकार वर्णन किया है—

“ इंग्लैण्डके उत्तरीय प्रान्तके एक बस्तीमें दो तीन नवयुवकोंने मिलकर विचार किया कि हम लोग शामको एक जगह एकट्ठे हुआ करें और एक दूसरेकी सहायतासे पढ़ने लिखनेका अभ्यास बढ़ावें । ये लोग बहुत ही गरीब थे, इस लिए इन्हें कोई अच्छा स्थान इस कार्यके लिए नहीं मिल सका । इनका एक मित्र एक छोटास घरमें रहता था । उसमें एक छोटसी कोठरी थी । वस, ये लोग उसीमें एकत्र होने लगे और अपना कार्य उसीमें एक साथ करने लगे । इनकी देखादेखा और भा बड़े लोगोंके इन्तु हई और वे भी इस सण्डलामें जाने लगे । फिर यह हुआ कि जगह अच्छे पढ़ने लगे । गरीबों मेंम सब सुख था इस । रात कोकराक बाहर नी छोटसी बगिचा था, ये लोग उसमें खुदा हवामें बैठकर अपनी काम चलाने लगे परन्तु कभी कभी जाया-पाना जिनके कारण इनके पढ़ने लिखनेमें बाधा पड़ने लगी और इन्हें बुरा हुन लग ।

इतनेमें ही जेडक दिन आ गया । गानका मूख ठण्ड पड़न लगी । घट आदमी होत, तो काई छोटा साटा कटिंग देन ला जाय परन्तु तब तक एक्के हल-वालाकी नहया खुश बंद नई थो । यद्यपि ई अठरादिन जानिकेल प्रायः नज्दूर लोग धे आर उनकी आँख अवसर बहुत ही बाचनीय ना । ना इस समय अपने अनारक प्रमेव बारो उम्माँन हममत बाधी आर एक बड़ा वसरा शिरादेपर ले लेनका महत्त्व बुझिया । लगाम बरजन एक ऐसा बल्तर

मिला जिसमें पहले हैजेके रोगी रखे जाते थे और इस कारण उसे लोग मुफ्तमें भी न लेना चाहते थे। इन्होंने निर्भय होकर इसे ही ले लिया और अपना कान जारी कर दिया।

“जो स्थान पहले भयंकर था वह अब उद्योग और उन्माहका केन्द्र बन गया। यद्यपि इस संस्थामें शिक्षणकी पूरी पूरी व्यवस्था न थी, तो भी जो कुछ भी उसमें पूरा उत्साह और आन्तरिक प्रेरणा भरी हुई थी। जिसको जो कुछ दृष्ट फूटा आता था, वह अपनेसे कम जाननेवालोंको मिसलता था, अपने आर मुधरता था और दूसरोंको सुधारता था; और किसी न किसी तरह दूसरोंके आगे अपना उत्तम उदाहरण उपस्थित करता था। इस तरह वे युवा पुरुष—जिनमें बहुतसे तो पक्षी उम्रके थे—लिखना बोलना, अक्षरगणित, भूगोल, रसायनशास्त्र, और कई वर्तमान भाषायें आप सीखने लगे तथा औरोंको मिसलाने लगे।

“इस तरह उक्त संस्थामें लगभग १०० मनुष्योंका जमाव होने लगा। कुछ दिनोंके बाद उन्हें व्याख्यान सुननेका शौक लगा और उनमेंसे कुछ युवक मेरे पास आये। उन्होंने अपने पैरोंर खड़े होकर जो उद्योग और परिश्रम किया था और जिस नम्रतासे मुझमें व्याख्यान देनेकी प्रार्थना की थी उसका मुझपर बड़ा प्रभाव पड़ा और मैं जानता था कि आम सभाओंमें व्याख्यान देनेका कुछ विशेष फल नहीं होता है तो भी मैंने व्याख्यान देना स्वीकार कर दिया। मैंने निश्चय किया कि हृदयकी वास्तविक प्रणाम और सच्चाईमें जो कुछ कहा जायगा उसका कुछ प्रसर पड़ बिना न रहेगा। इस उद्देश्यसे मैंने उक्त सभामें कई व्याख्यान दिये और उनमें अनेक कमवाय मनुष्योंके उदाहरण देकर बतलाया कि तुममेंमें प्रत्येक मनुष्य, यदि चाहे तो न्यूनाधिक्यमें जैसे ही काम कर सकता है। तुम्हारे आगामा जीवनका नाम और कल्याण स्वयं तुम्हारे ही ऊपर अवलम्बित है, इस बात तुम्हें अपने आपका उपागपूर्वक शिक्षित बनाना चाहिए, अपनेको मध्यममें रखकर अच्छा आदर्श बनाना चाहिए अपने मनको वशमें रखकर चलना चाहिए और इन सबमें बढ़कर अपने कर्तव्यका पालन सच्चाई और एमानेतासे करना चाहिए, क्योंकि मनुष्यक चारित्र्य का नाम स्वर्गियों उसकी कर्तव्यनिष्ठा पर ही अवलम्बित है।

“इस उद्देश्यमें न कोई नई बात थी और न कोई नया विचार हा था—पुरानी सबकी जाना हुई काठ की दोहराई गई थी, ता भी युवकोंने उसकी बड़े आदरके साथ सुनी। वे अपना अभ्यास बसात गये और हउ निश्चयमें उत्साहपूर्वक

परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मौके मिलनेपर वे तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये। उनमेंसे कई लोगोंने तो अच्छी उन्नति कर ली और उनकी गणना प्रतिष्ठित पुरुषोंमें होने लगी। कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषसे मेरी भेंट हुई जिसने अपने उद्योगके बल पर अपनी अच्छी उन्नति कर ली थी—जो एक कारखानेका मालिक बन गया था। उसने कहा “मैं इस समय बहुत सुखी हूँ। आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे साथियोंके सामने जो सच्चे शिक्षाप्रद व्याख्यान दिये थे, उन्हें मैं आज भी कृत-ज्ञतापूर्वक स्मरण करता हूँ। आपने जो मार्ग बतलाया था अपनी शक्तिभर प्रयत्न करके मैं अवतक उसीपर चल रहा हूँ और मुझे पक्का विश्वास है कि उसीके कारण मुझे यह सुखसमृद्धिकी प्राप्ति हुई है।

“इस घटनासे स्वावलम्बनके विषयको और मेरा ध्यान विशेषरूपसे आकर्षित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उक्त नवयुवकोंकी समाके व्याख्यानोंमें जो बातें कही थीं, उनकी शृद्धि करना शुरू किया। मैं जो कुछ बाँचता, निरीक्षण करता अथवा संसारी काम-काजोंमें पढ़कर अनुभव प्राप्त करता था, अवकाश मिलनेपर उन सब बातोंका उतना भाग जो इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था। इस तरह इस विषयका एक अच्छा संग्रह हो गया और वही संग्रह आज इस रूपमें प्रकाशित किया जाता है।”

यह ग्रन्थ मन् १८५९ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद मन् १८६६ में स्माइल्स साहबने इसमें अनेक नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताका आर भी बड़ा दिया है।

### इस ग्रन्थकी शिक्षाये।

इस ग्रन्थमें क्या शिक्षा मिलेगी, यह डाक्टर स्माइल्सके शब्दोंमें ही बतलाना अच्छा होगा। वे कहते हैं—“मूलतः इस पुस्तकका उद्देश्य निम्नलिखित प्राचीन किन्तु लाभदायक उपदेशोंका बार बार दाहरना है। इन बातोंका जितना बार दाहराया जाय उतना ही धोड़ा है,—

१ सुखी बननेके लिए प्रत्येक युवकको काम अवश्य करना चाहिए।

२ उद्योग और परिश्रमके बिना काइ भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है।

३ कठिनाइयोंसे डरना न चाहिए, किन्तु सन्तोष और निरालस्य उनपर विजय प्राप्त करना चाहिए।



परिधम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मीके मिलनेपर वे तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये। उनमेंसे कई लोगोंने तो अच्छी उन्नति कर ली और उनको गणना प्रतिष्ठित पुरुषोंमें होने लगी। कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषसे मेरी भेंट हुई जिसने अपने उद्योगके बल पर अपनी अच्छी उन्नति कर ली थी—जो एक कारखानेका मालिक बन गया था। उसने कहा “मैं इस समय बहुत सुखी हूँ। आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे साथियोंके सामने जो सच्चे शिक्षाप्रद व्याख्यान दिये थे, उन्हें मैं आज भी कृत-ज्ञतापूर्वक स्मरण करता हूँ। आपने जो मार्ग धतलाया था अपनी शक्तिभर प्रयत्न करके मैं अबतक उसीपर चल रहा हूँ और मुझे पक्का विश्वास है कि उसीके कारण मुझे यह सुखसमृद्धिकी प्राप्ति हुई है।

“इस घटनासे स्वावलम्बनके विषयकी ओर मेरा ध्यान विशेषरूपसे आक-र्षित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उक्त नवयुवकोंकी सभाके व्याख्यानोंमें जो बातें कही थीं, उनकी वृद्धि करना शुरू किया। मैं जो कुछ बाँचता, निरोक्षण करता अथवा संसारी काम-काजोंमें पड़कर अनुभव प्राप्त करता था, अवकाश मिलनेपर उन सब बातोंका उतना भाग जो इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था। इस तरह इस विष-यका एक अच्छा संग्रह हो गया और वही संग्रह आज इस रूपमें प्रकाशित किया जाता है।”

यह ग्रन्थ सन् १८५९ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्माइल्स साहबने इसमें अनेक नये उदाहरण शामिल करके इसकी उपयोगिताकी ओर भी बढ़ा दिया है।

### इस ग्रन्थकी शिक्षायें।

इस ग्रन्थसे क्या शिक्षा मिलेगी, यह डाक्टर स्माइल्सके शब्दोंमें ही बतलाना अच्छा होगा। वे कहते हैं:—“संक्षेपमें इस पुस्तकका उद्देश्य निम्नलिखित प्राचीन किन्तु लाभदायक उपदेशोंका बार बार दोहराना है। इन बातोंकी जितनी बार दोहराया जाय उतना ही थोड़ा है,—

१ मुराी बननेके लिए प्रत्येक युवकको काम अवश्य करना चाहिए।

२ उद्योग और परिधमके बिना कोई भी महत्त्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है।

३ कठिनाइयोंसे डरना न चाहिए, किन्तु सन्तोष और <sup>आप</sup> उनपर विजय प्राप्त करनी चाहिए।



मिला जिसमें पहले हैजेके रोगी रखे जाते थे और इस कारण उसे लोग मुझमें भी न लेना चाहते थे। इन्होंने निर्भय होकर इसे ही ले लिया और अपना काम जारी कर दिया।

“जो स्थान पहले भयंकर था वह अब उद्योग और उत्पादका केन्द्र बन गया। यद्यपि इस संस्थामें शिक्षणकी पूरी पूरी व्यवस्था न थी, तो भी जो कुछ भी उसमें पूरा उत्पाद और आन्तरिक प्रेरणा भरी हुई थी। जिसको जो कुछ द्रष्ट फूटा जाता था, वह अपनेसे कम जाननेवालोंको सिखलाना था, अपने भार सुधरता था और दूसरोंको सुधारता था; और किसी न किसी तरह दूसरोंके आगे अपना उत्तम उदाहरण उपस्थित करता था। इस तरह वे युवा पुरुष—जिनमें बहुतसे तो पंडी उम्रके थे—लिसना बौबना, अंकुषगित, भूगोल, रमायनशास्त्र, और कई वर्तमान भाषाएँ आप सीखने लगे तथा औरोंको सिखलाने लगे।

“इस तरह उक्त संस्थामें लगभग १०० मनुष्योंका जमाव होने लगा। कुछ दिनोंके बाद उन्हें व्याख्यान सुननेका शौक लगा और उनमेंसे कुछ युवक मेरे पास आये। उन्होंने अपने परोंपर खड़े होकर जो उद्योग और परिश्रम किया था और जिस नम्रतासे मुझसे व्याख्यान देनेकी प्रार्थना की थी, उसका मुझपर बड़ा प्रभाव पड़ा और मैं जानता था कि आम सभाओंमें व्याख्यान देनेका कुछ विशेष फल नहीं होता है तो भी मैंने व्याख्यान देना स्वीकार कर लिया। मैंने निश्चय किया कि हृदयकी वास्तविक प्रेरणामें और सच्चाईसे जो कुछ कहा जायगा उसका कुछ प्रसर पड़े बिना न रहगा। इस उद्देश्यसे मैंने उक्त सभामें कई व्याख्यान दिये और उनमें अनेक कर्मचार मनुष्योंके उदाहरण देकर बतलाया कि तुममेंसे प्रत्येक मनुष्य, यदि चाहे तो न्यूनतम स्वरूपमें वैसे ही काम कर सकता है। तुम्हारे आगामी जीवनका धर्म और बल्यार्थ स्वयं तुम्हारे ही ऊपर अवलम्बित है, इस प्रमाण तुम्हें अपने आपका उपागपपूर्वक शिक्षित बनाना चाहिए, अपनेको सदासे स्मरण अग्रग्राह्य आदत्तें डालना चाहिए, अपने मनको सशक्त रखकर चलना चाहिए और इन सधन बैठकर अपने कर्तव्यका पालन मचाई और एकनिष्ठासे करना चाहिए, क्योंकि मनुष्यके चरित्रका मारी खुशियाँ उसकी कर्तव्यनिष्ठा पर ही अवलम्बित हैं।

“इस उपदेशमें न कोई नई बात थी और न कोई नया विचार ही था—पुरानी नवकी ज्ञाना हुई बातें ही दोहराई गई थी, तो भी मुझको उसको बड़े आदरके साथ सुना। वे अपना अन्याय बहाल गये और वह निश्चयसे उत्पादपूर्वक

परिश्रम करते रहे। फल यह हुआ कि उनमें योग्यता आती गई और मौके मिलनेपर वे तरह तरहके रोजगारोंसे लगते गये। उनमेंसे कई लोगोंने तो अच्छी उन्नति कर ली और उनकी गणना प्रतिष्ठित पुरुषोंमें होने लगी। कुछ समयके बाद इनमेंसे एक ऐसे पुरुषसे मेरी भेंट हुई जिसने अपने उद्योगके बल पर अपनी अच्छी उन्नति कर ली थी—जो एक कारखानेका मालिक बन गया था। उसने कहा “ मैं इस समय बहुत खुशी हूँ। आपने कई वर्ष पहले मेरे और मेरे साथियोंके सामने जो सच्चे शिक्षाप्रद व्याख्यान दिये थे, उन्हें मैं आज भी कृत-ज्ञतापूर्वक स्मरण करता हूँ। आपने जो मार्ग बतलाया था अपनी शक्तिभर प्रयत्न करके मैं अबतक उसीपर चल रहा हूँ और मुझे पक्का विश्वास है कि उसीके कारण मुझे यह सुखसमृद्धिकी प्राप्ति हुई है।

“ इस घटनासे स्वावलम्बनके विषयकी ओर मेरा ध्यान विशेषरूपसे आक-र्षित हुआ और मुझे इसके विचारमें बहुत आनन्द आने लगा। अतः मैंने उक्त नवयुवकोंकी सभाके व्याख्यानोंमें जो बातें कही थीं, उनको वृद्धि करना शुरू किया। मैं जो कुछ बाँचता, निरीक्षण करता अथवा संसारी काम-काजोंमें पढ़कर अनुभव प्राप्त करता था, अवकाश मिलनेपर उन सब बातोंका उतना भाग जो इस विषयके लिए उपयोगी होता था लिखता जाता था। इस तरह इस विष-यका एक अच्छा संग्रह हो गया और वही संग्रह आज इस रूपमें प्रकाशित किया जाता है। ”

यह ग्रन्थ सन् १८५९ में पहले प्रकाशित हुआ था। उसके बाद सन् १८६६ में स्मार्ट्स साहबने इसमें अनेक नये उदाहरण सामिल करके इसकी उपयोगिताको और भी बढ़ा दिया है।

### इस ग्रन्थकी शिक्षायें।

इस ग्रन्थसे क्या शिक्षा मिलेगी, यह डाक्टर स्मार्ट्सके शब्दोंमें ही बतलाना अच्छा होगा। वे कहते हैं:—“संक्षेपमें इस पुस्तकका उद्देश्य निम्नलिखित प्राचीन विन्तु लाभदायक उपदेशोंका बार बार दोहराना है। इन बातोंको जितनी बार दोहराया जाय उतना ही थोड़ा है,—

१. सुखी बननेके लिए प्रत्येक युवकको काम अवश्य करना चाहिए।
२. उद्योग और परिश्रमके बिना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य नहीं हो सकता है।
३. कठिनाईयोंसे डरना न चाहिए, विन्तु सन्तोष और पैरोंके साथ उनपर विजय प्राप्त करनी चाहिए।



समें अनेक देशी उदाहरण शामिल कर दिये हैं, जिनका प्रभाव हमारे देश-वासियों पर विदेशी उदाहरणोंसे अधिक पड़ेगा; परन्तु इसके साथ ही मूल पुस्तकमें जितने महत्त्वपूर्ण विदेशी उदाहरण हैं वे भी इस रूपान्तरमें रखे गये हैं। अध्यायोंके प्रारंभ और बीचमें कुछ हिन्दी और संस्कृतके सुभाषित बढ़ा दिये गये हैं। इंग्लैण्डकी समाजसंबंधी बातोंमें परिवर्तन करके उनको भारतवर्षके समाजके अनुकूल बनाया गया है। मूल ग्रंथका सातवाँ अध्याय—जो सर्वथा इंग्लैण्डके समाज—वहाँके स्नानदानों रईसोंसे संबंध रखता है—इस पुस्तकमें नहीं रखा गया। इतना हेर फेर करनेके साथ ही मूल ग्रंथके भावोंको भी पूर्णतया रक्षा करनेकी चेष्टा की गई है। इस कार्यमें मुझको बहुत परिश्रम करना पड़ा है। देशी उदाहरणोंकी खोज और चुनावमें बहुत समय खर्च हुआ है। कहीं कहीं तो छोटे छोटे उदाहरणोंकी खोज करनेमें मुझे पढ़ी पढ़ी पुस्तकें आधो-पान्त पढ़नी पड़ी हैं। इस पुस्तकके छिद्रानेमें मैंने अनेक पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओंसे सहायता ली है जिनमेंसे मुख्य मुख्य ये हैं:—

- ( १ ) ईश्वरचन्द्र विद्यासागरका जीवनचरित ।
- ( २ ) सरस्वती ( मासिक पत्रिका ) के फाइल ।
- ( ३ ) मिश्रबंधु-विनोद ( हिन्दी-ग्रन्थप्रसारक मंडली द्वारा प्रकाशित ) ।
- ( ४ ) जावजीकीर्तिप्रकाश ( मराठी ) ।
- ( ५ ) बालबोध ( मराठी मासिकपत्र ) के फाइल ।
- ( ६ ) अस्तोदय तथा स्वाश्रय ( मनःसुखराम सूर्यराम त्रिपाठीकृत, गुजराती ) ।
- ( ७ ) Biographies of Eminent Indians. ( C. A. Natesan & Co., Madras. )
- ( ८ ) The Indian Nation Builders, in three volumes ( Ganesh & Co., Madras. )
- ( ९ ) The Annals and Antiquities of Rajasthan ( James Tod. )
- ( १० ) The ' Leader. '

उपर्युक्त पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओंके लेखकों तथा संपादकोंका मैं अत्यन्त उपकृत हूँ। मराठी पुस्तकोंके पढ़नेमें मुझे एक मराठा सज्जनसे सहायता मिली है। अतएव मैं उनका भी आभारी हूँ। अंतमें मैं श्रीयुक्त पण्डित नाथूरामजी प्रेमीके प्रति कृतज्ञता प्रकट किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने इस पुस्तकका संस्करण

किया है और अपनी बहुमूल्य सम्पत्तियोंसे मुझे बहुत ही सहायता दी है ।  
उन्हींकी कृपासे मुझे आज इस पुस्तकको आपके सामने रखनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

यदि इस पुस्तकसे हमारे भाइयोंमें उत्साहका कुछ भी संचार हुआ, तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूँगा ।

ल्योदी बेगम, आगरा,  
१-२-१५ }

विनीत-  
मोतीलाल ।

## दूसरे संस्करणकी सूचना ।

इस पुस्तकका प्रथम संस्करण बहुत ही जल्द समाप्त हो गया । यह हिन्दीप्रेसि-  
पीठ अनुपग्रहकी ही कृपा है कि इस पुस्तकका दूसरा संस्करण अब तक न  
निकल सका ।

प्रथम संस्करणमें अनेक त्रुटि-पूर्ण स्थानों का सुधार हो गया  
था । इस बार इस कमीकी दुरुस्ती करने के लिये मैंने इस पुस्तक-  
का दूसरा संस्करण तैयार किया है । इस पुस्तक में कुछ सुशोधन  
का कर पड़ा गया है । इस पुस्तक का दूसरा संस्करण अब निकल रहा है ।

ल्योदी बेगम, आगरा )  
१-२-१५ )

मोतीलाल ।

# विषय-सूची ।

## पहला अध्याय ।



### जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

स्वावलम्बनका भाव—प्रजा और उसके नियम—जैसी प्रजा जैसा राज्य—वि-  
क्रमादिपत्रका सहारा और स्वावलम्बन—सब धेनियोंमें धीर और परिश्रमी मनुष्य  
होते हैं—स्वावलम्बन अंगरेज जातिका गुण है—दूसरोंकी व्यावहारिक शिक्षापर  
उद्योगशील मनुष्यका प्रभाव—जीवनचरितोंकी उपयोगिता—नहापुरष किसी  
विशेष जाति या धेर्मीमें उत्पन्न नहीं होते—नीच जातियोंमें जन्म लेनेवाले प्रसिद्ध  
मनुष्य—बहुतसे प्रसिद्ध मनुष्योंकी पहली निम्न अवस्था—संस्कृत और देशी भाषा-  
ओंके अनेक प्रसिद्ध लेखक—भाटजातिके प्रसिद्ध लेखक, प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ और  
सैनिक—प्रसिद्ध व्यवसायी मनुष्य—सेठ जाबजी दादाजी चौधरी—व्यापारियों,  
बकीलों और कर्मचारियोंके प्रसिद्ध पुत्र—साधारण सैनिकोंकी आश्वयंजनक उन्नति  
—समी धनी मनुष्य—आलसी नहीं होते—परिश्रमी घनाडप मनुष्योंके उदाहरण  
—निम्न धेर्मीमें जन्म लेनेवाले प्रसिद्ध विदेशी मनुष्य—शेक्सपियर—बहुतसे म-  
नुष्योंकी पहली दरिद्र अवस्था—प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्रवेत्ता—इसाई धर्मोपदेश-  
कोंके प्रसिद्ध पुत्र—उद्योगशील और उत्साही मनुष्य—जार्ज ब्रोधर्टन—विलि-  
यम जैक्सन—एडमंड ब्रायम—मनुष्य अपना सर्वोत्तम सहायक आप ही है—  
पृष्ठ १ से १८ तक ।

## दूसरा अध्याय ।

### आधोगिक नेतागण ।

भारतवर्षके लिए उद्योगधंधेकी आवश्यकता—प्राचीन भारतके उद्योगधंधे—  
अंगरेजोंकी उद्योगशीलता—रान-राज मनुष्यका सर्वोत्तम शिक्षक है—दारिद्र्य  
और परिश्रमके कारण आइर्लैंडकी कठिनाईयां दुर्जय नहीं होती—निम्न धेर्मीके मनु-  
ष्योंके किये हुए आविष्कार—भारतके अंजनका आविष्कार—जेम्स वाट; उसका  
परिश्रम और ध्यानान्धास—मैप्स वॉल्टन—भारतके अंजनसे क्या क्या काम लिये  
जाते हैं—मशीनसे कपड़ा बुननेका काम—आइराईड; उसका प्रारंभिक जीवन









## नौवाँ अध्याय ।



### धनका सदुपयोग और दुर्गुपयोग ।

समयके सदुपयोगसे विवेक बुद्धिकी परीक्षा होती है—सार्धनिरोधका गुण—अपने ऊपर लगाये हुए देश—मितव्ययता स्वतंत्रताके लिए आवश्यक है—फिजूलखर्च आदमीकी देखनी—मितव्ययता एक महत्त्वपूर्ण जातीय गुण है—रिचर्ड बाबरेन और माइटकी सलाह—मजदूर भी स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं—मानसिक हानिरके पिताका उपदेश—सर्च आमदनीके भीतर ही रगना चाहिए—लाह बेकनका मत—फिजूलखर्ची करनेवाले—कजंदार होना—हाइटनका कर्ज—कर्जके विषयमें डाक्टर जानसनके विचार—जान लाक—सर्चके विषयमें जस्टिस रानटेकी सावधानी—बहुत ऊँचे दरजेके रहनसहनके विषयमें ह्यूमके विचार—जलमैन बननेकी चाह—नेपियरका आज्ञापत्र—प्रलोभनोंका सामना करना—ह्यू मिलर प्रलोभनसे कैसे बचे—टामस राइट—अपराधियोंका सुधार—हर एक धंधा जो ईमानदारीके साथ हो सकता हो आदरणीय है—दुपयेका केवल इकट्ठा करना—धन मनुष्यके सदुपयोगका सुबूत नहीं है—धनकी शक्तिके विषयमें अतिशयोक्ति—सच्ची प्रतिष्ठा—पृष्ठ १४३ तक ।

## दसवाँ अध्याय ।



### अपना सुधार—सुविधायें और काटनाइयाँ ।

आत्मोद्धारके विषयमें एक विद्वान्का कथन—डाक्टर अर्नेल्डका शिक्षण—काममें लगे रहना स्वास्थ्यदायक है—मेलबसका पुत्रोपदेश—तन्दुरुस्तीका महत्त्व—सर आईजक न्यूटन—लड़कपनमें आजारोंका प्रयोग—बड़े आदमियों को तन्दुरुस्तीकी जरूरत—धर्मकी सर्वत्र जय होती है—परिधर्मकी शक्तिके विषयमें सर जोशुआ रेनाल्ड्स और सर फौबेल बक्सटनका विश्वास—शुद्धता, पूर्णता, निर्गुणशक्ति और तत्परता—धैर्यपूर्वक परिधर्म करनेका गुण—मेहनतसे जी चुरानेके हानिका-रक परिणाम—बहुतसे विषयोंकी पुस्तकें पढ़नेसे हानि—ज्ञानका सदुपयोग—पुस्तकोंके पढ़नेसे विद्वत्ता आसकती है, परन्तु बुद्धिज्ञानके सदुपयोग और अनुभवसे ही आसकती है—विंडले, स्टीफिन्सन, हंटर, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, महाराज शिवाजी, रणजितसिंहने यद्यपि बहुत कम पुस्तकें पढ़ी थीं, तो भी वे महापुरुष



## चारहवाँ अध्याय ।

१७२०८८४

### सदाचार और मुजनता ।

मनुष्यके अधिकारकी चीजोंमें चरित्र सबसे बढ़कर है—फैक्लिनका चरित्र—  
सदाचार शक्ति है—लाटें इसकीनके चारित्रिक नियम—जीवनका उद्देश ऊँचा  
होना चाहिए—सचाई—मुंशी गंगाप्रसादके चरित्रके विषयमें निस्टर डीलाफोसका  
विचार—तुम दूसरोंको जैसे मालूम होते हो वास्तवमें भी वैसे ही बनो—काम-  
काजमें ईमानदारी—आदतोंका असर—आदतोंसे ही चरित्र बनता है—आचरण-  
शिष्टाचार और दयालुता—सच्ची मन्नता—विलियम और चार्ल्स फ्रांट—सेठ राणू रा-  
वजी—सच्चा सज्जन—सज्जनका एक गुण आत्मसम्मान—रानदेकी स्वाभाविक न-  
म्रता—एडवर्ट फिजजिरल्ड—सज्जनोंके अन्यान्य गुण—ईमानदार जोन्स हानवे-  
रपूक आफ वेलिंगटन और निजामका मंत्री—उदारचरित बेल्लेजलीका १५ लाखकी  
भेंट अस्वीकार करना—धन और मुजनता—निर्धनोंमें भी वीर और सज्जन होते  
हैं—एक उदाहरण—पालीतानाके जैनबोटिंग ह्रासके मंत्री कुँवरजीका सौजन्य  
और त्याग—सम्राट् फ्रांसिसकी मुजनताका उदाहरण—सज्जन मनुष्य सच्चा  
होता है—फेल्टनहावे—पाण्टवोंका वीरव्यवहार—बरकिन्हेड और टाइटैनिक जहा-  
जोंका डूबना और वीरता मुजनताके उदाहरण—सज्जनोंकी एक सच्ची परीक्षा; वे  
अपने धर्मीनोंके साथ पैसा व्यवहार करते हैं—अन्या ला मोदी और एक युवक—  
राल्फ ऐबर क्रोम्बीका गुण आत्मत्याग—सच्चे सज्जन और कार्यकुशल मनुष्यका  
चरित्र वंसा होता है—पृष्ठ २२३ से २४८ तक ।



[illegible]

“ साथसे बडकर यह बात है—जिन तरह दिनके बाद रात अवश्य आती है उसी तरह जो मनुष्य अपने अन.करणके साथ सच्चाईका बर्ताव करता है वह दूसरोंके साथ कभी झोटा बर्ताव नहीं करता । ”

—शेक्सपियर ।



“ यदि मुझे किसी नवयुवकको उपदेश देना हो तो मैं उससे यह कहूँगा— अपनेसे अच्छे मनुष्योंकी संगति करो । तुमको पुस्तकोंमें और अपने जीवनमें ऐसे ही मनुष्योंकी सत्संगति करना चाहिए, क्योंकि तुम्हारा सबसे अधिक कल्याण इसीमें है । अच्छी बातोंकी कदर करना सीनो, जीवनका सारा सुख इसी बातपर निर्भर है । यह दरा कि महात्माओंने कितनी बातोंकी कदर की थी । उन्होंने महत्त्वपूर्ण बातोंकी कदर का थी । जो मनुष्य सकारण विचारोंके होते हैं वे नीच बातोंकी प्रशंसा और भक्ति करते हैं । ”

—थोकरे ।

# स्वावलम्बन ।

—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—

पाठ्या अध्याय ।

—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—

जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय—

“ अपने महात्म्य का प हो होगा महात्म्य प्रभु तमा,  
यह पाहने में ही किसीको सुख नहीं मिलता कभी । ”

—दीपदीशरण गुप्त ।

“ किसी दर्शक, तुलन जलमें गमव व्यक्तियोंकी स्वायत्ततामें होती है । ”

उ. प्र. मित्र ।

हम व्यवस्थापन—बायद मनुष्योंमें बहुत कुछ कामका आका करत है,  
मनुष्य मनुष्योंमें बहुत काम । —ब. हि. शरणा ।

हम जो भी कहावत है कि हमारे उनको महायत्ना करनी है जो

“ अपने अपने काम पर काम करत है ” हममें मानवी अनुभवका  
आर नर नर है । स्वावलम्बनका भाव प्रत्येक मनुष्यकी उत्पत्तिवा कारण  
है । यदि बहुतसे मनुष्योंमें यह भाव पैदा हो जाता है तो हममें जातीय  
बलका उत्पत्ति होता है । दूसराका महायत्नामें बहुत हा हाता होता है । परन्तु  
अपने काम पर काम करनेमें अवश्यमें ही मिलना सन्तान होता है । यदि  
किसी जातीय काम सरकार कर दिया कर अथवा उसे महायत्ना दिया कर  
ता, उसे जातीय मनुष्योंमें स्वयं काम करनेवा उत्साह कम हो जायगा और





जातिकी उन्नति उसके पृथक् पृथक् मनुष्यके परिधम, उद्योग और सच्चाईसे मिलकर होती है। इसी तरह जातीय अवनति प्रत्येक मनुष्यके आलस्य, स्वार्थपरता और दुराचरणके समूहका नाम है। सामाजिक कुप्रथायें मनुष्यके दुराचारी जीवनसे ही पैदा होती हैं और ये तभी दूर हो सकती हैं जय मनुष्य अपना जीवन और चरित्र सुधार ले। यदि सरकार कानून बनाकर इन्हें दूर करना चाहे, तो ये कुप्रथायें फिर किसी दूसरे रूपमें प्रकट हो जायेंगी। अगर यह मत ठीक है तो हमको नियमोंको बदलने और अच्छा बनानेका ही प्रयत्न न करना चाहिए, किन्तु मनुष्योंको स्वयं उन्नत होनेमें सहायता और उत्तेजना देनी चाहिए; यही सर्वोत्तम देश-भक्ति और परोपकार है।

राष्ट्र शासनकी अपेक्षा हमारा आंतरिक चरित्र हमारे लिए बहुत कामकी चीज है। किसी निर्दय राजाका दास होना बहुत ही बुरा है; परन्तु अज्ञान, स्वार्थ और दुराचरणका दास बनना उससे भी बुरा है। ऐसे दास केवल राजा अथवा राज्यके बदलनेसे स्वतंत्र नहीं हो सकते। यह सोचना केवल भ्रम है। व्यक्तिगत चरित्र ही स्वतंत्रताका मूलधार है और इसीसे सामाजिक रक्षा और जातीय उन्नति प्राप्त हो सकती है।

मानवी उन्नतिके विषयमें हम अब भी भूलें किया करते हैं। कुछ लोग विक्रमादित्य और भोजकी याद करते हैं और कुछ लोग सरकारी नियमोंकी आवश्यकता समझते हैं। “हमारा कल्याण उसी समय होगा जय विक्रमादित्य सरीखा राजा राज्य करेगा।” जिन लोगोंका ऐसा विचार है उनका मतलब यह है कि हमको कुछ न करना पड़े, कोई दूसरा ही हमारे बदले सब कुछ कर दिया करे। यदि ऐसे विचारको आश्रय दिया जाय, तो हमारे स्वतंत्र विचार जाते रहेंगे और अवनतिका मार्ग खुल जायगा। विक्रमादित्यका सहारा ढ़ूँढ़ना मानो उनकी शक्तिकी पूजा करना है और इसका फल वैसा ही अकल्याणकारी होगा जैसा केवल धनकी भक्ति करनेसे होता है। जातियोंमें फैलानेके लिए इससे कहीं अच्छा विचार स्वावलम्बनका विचार है; और जय मनुष्य इसे पूर्णतया समझ जायेंगे और इसके अनुसार चलने लगेंगे तब फिर विक्रमादित्यका आश्रय कदापि न ढ़ूँढ़ेंगे। इसी तरह सरकारी नियमोंकी आवश्यकता समझना भी केवल भ्रम है। हमारी उन्नति हमारे ही



## जानाया और व्यक्तित्वन बचावकर्मन ।

सारमिअद शिक्षा देती है । घरोंमें, शानोंमें, बंधोंमें, बारागानोंमें, बंधोंमें, शिक्षाशास्त्राओंमें और मनुष्योंके नियमके समन्वयमनके ग्यानोंमें जो जीवन-संबंधी शिक्षा मिलती है वह पाठशालाओंकी शिक्षासे कहीं ज्यादा म्हाप-पाठिका होती है । यह शिक्षा हमको मानवी जीवनके कर्मस्य और व्यवहार सिखाती है—यह पुस्तकों द्वारा बर्दापि प्राप्त नहीं हो सकती । एक विद्वानने अपने सारमिअत पाठ्योंमें कहा है कि “ अध्ययन करनेमें हम अध्ययनसे बचन लेता नहीं सीख जाते । यह बात तो अध्ययनके उपरान्त बंधल मिली-क्षणसे—अनुभवसे आती है । ” मनुष्य अध्ययनकी अपेक्षा बचन परबेसे अधिक निपुण होता है । साहित्यकी अपेक्षा जीवन, अध्ययनकी अपेक्षा बचन और जीवनचरितोंके, व्याख्यायकी अपेक्षा चरित्र मनुष्यजातिकी प्रुटियोंको दूर करने हैं और उमको सदैव उन्नत बनाये रहने हैं ।

तो भी बड़े और विशेष कर समान मनुष्योंके जीवनचरित दूरसेको सहायता एवं उत्तेजना देनेमें बड़े शिक्षाप्रद और उपयोगी होते हैं । कुछ महात्माओंके जीवनचरित तो धार्मिक पुस्तकोंके समान हैं । क्यों कि ये अपने और संसारके कल्याणके लिए जीवनको ध्येय बनाना, विचारोंको कैचे रखना, और परिश्रम करना सिखाते हैं । ये अपने पैरोंपर आप सदैव रहने, अपने उद्देश्यकी पूर्तिमें धैर्यपूर्वक लगे रहने, अध्रान्त परिश्रम करने, और सच्चाईपर दृढ़ रहनेके बहुत उत्तम उदाहरण हैं और गुले नब्दोंमें हमको यह बतलाते हैं कि प्रत्येक मनुष्यमें अपनी उन्नति करनेकी कितनी शक्ति मौजूद है । ये हमको यह भी साफ साफ बतलाते हैं कि आमसम्मान और आत्मनिर्भरताके द्वारा छोटेसे छोटे मनुष्य भी प्रतिष्ठापूर्वक अपना निर्वाह कर सकते हैं और धार्मिकिक बचन प्राप्त कर सकते हैं ।

यह बात नहीं है कि किसी एक जाति अथवा धर्णीके ही मनुष्य विज्ञान, साहित्य और कला-कौशलमें विद्वान् हुए हों । ऐसे मनुष्य विद्यालयों, कार-गानों और किमानोंके घरोंमें, निर्धन लोगोंके झोंपड़ों और धनाढ्योंके मह-लोंमें—सभी स्थानोंमें हुए हैं । कई बड़े बड़े धार्मिक नेता साधारण स्थितिके मनुष्य थे । कभी कभी अत्यंत निर्धन मनुष्य भी सर्वोच्च पदोंपर पहुच गये हैं । बड़ी बड़ी कठिनाइयाँ भी, जो अटल मालूम होती थीं, उनके मार्गमें बाधक नहीं हुईं । यदि



## जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

चाणक्य एक निर्धन ब्राह्मण के पुत्र थे। वे स्वयं भी बड़े निर्धन थे। चाणक्य जब पाटलिपुत्र (पटना) में नंदराजाके दरबारमें गये थे तब वहाँके पंडितों और दरबारियोंने उनके फटे और मलीन वस्त्र देखकर उनका बड़ा उपहास किया था। परन्तु चाणक्यने अपने उद्योगसे ऐसी दरिद्रतामें भी विद्या प्राप्त की। कामधेनु और विद्या सदैव फल देती है। अंतमें चाणक्यका बड़ा सम्मान हुआ। महाकवि गोस्वामी तुलसीदासके विषयमें बहुतसम्मति यही है कि वे अत्यंत दरिद्र थे। सूरदास भी अत्यंत दरिद्र थे। वे आठ वर्षकी अवस्थामें ही अपने पिताको छोड़कर मथुरा चले आये थे। सम्राट् बाबरके दरबारके हिन्दी कवि नरहरिके पिता बड़े दरिद्री थे। संस्कृत और ब्रह्मभाषाके प्रसिद्ध विद्वान ईश्वरचंद्र विद्यासागर परम दरिद्री थे। हिन्दीके सुकवि कुम्भनदास भी बहुत दरिद्री थे। वे बहुभाचार्यके शिष्य थे और एकबार सम्राट् अकबरने फतहपुर सीकरीमें इनका बड़ा सम्मान किया था। चैतन्य महाप्रभुने दरिद्र घरमें जन्म लिया था। इसी तरह गुरु नानक, अक्षयकुमार, द्वारकानाथ, कृष्णदास इत्यादि अनेक महात्मा निर्धन घरोंमें उत्पन्न हुए थे। प्रसिद्ध मासिकपत्र 'इंस्ट गंट वेस्ट' के सुयोग्य सम्पादक बहरामजी मेरवानजी मलबारी परम दरिद्र थे। वे बाल्यावस्थामें ही अनाथ हो गये थे और संसारमें उनका कोई आश्रयदाता नहीं था। प्रसिद्ध कौशकार चामन शिवराम आपटे अत्यंत दरिद्र थे। मद्रास हाईकोर्टके जज सर मधुस्वामी ऐयर ऐसे दरिद्र थे कि उनको १२ वर्षकी अवस्थामें ही एक रूपा मासिककी नौकरी करना पड़ी थी। कलकत्ता हाईकोर्टके दुभाषिया श्यामाचरण सरकार भी बाल्यकालमें परम दरिद्र थे।

राजनीतिज्ञों और सैनिकोंको भी लीजिए। द्रोणाचार्य अत्यंत दरिद्र थे। जो अपने बालकोंको दूध मोंल लेकर भी न पिना सकते थे, उनके पास भला क्या रक्खा था! राजा वीरयल्लने गंगादाम नामक एक निर्धन ब्राह्मणको यहाँ जन्म लिया था। वे केवल नीतिज्ञ ही नहीं, किन्तु अच्छे सैनिक भी थे। युद्धमें ही उनकी जान गई। उनमें और भी गुण थे। उनकी हाजिर-जवाबी तो ऐसी प्रसिद्ध है कि प्रायः सभी भारतवासियोंको उनके दो चार चुटकुले याद रहते हैं। 'वीरयल्ल-विनोद' में उनकी हाजिर-जवाबीके अनेक नमूने दिये हैं। वे हिन्दी



## जावजी और व्यक्तिगत व्यावसायिक जीवन ।

उनको बहुत पर्यटन किया और उनकी जिज्ञा गूढ़ रह गई । इस काममें सकलता पाकर जावजीने अपना एक प्रेम शिल्प दिया और उसका नाम ' निर्णयसागर ' रखा । इस काममें भी उन्होंने पैसी ही जुगाड़ दिगाई और देशी भाषाओंकी बहुत अच्छी पुस्तकें छापनेका काम प्रारंभ कर दिया । उन्होंने सब तरहके बहुत सुन्दर टाइप बनाये । फिर तो सम्बद्धी सरकारने भी अपनी बहुमूल्य संस्कृत पुस्तकें इसी प्रेममें प्रकाशित कराईं । रत्नोंके लिए गुजराती और मराठीकी पुस्तकें भी यही प्रकाशित होने लगीं । जावजीने इस प्रेमको उपयोगी और उच्चश्रेणीका बनानेमें कोई बात न उठा रखी । ये स्वयं भी नामी नामी विद्वानोंकी पुस्तकें प्रकाशित करके बहुत थोड़े मूल्यमें बेचने लगे । इससे सर्व साधारणमें शिक्षाका बड़ा प्रचार हुआ ।

उन्होंने अपने यहाँमें तीन नामिक पुस्तकें भी निकालना आरंभ किया, जिनके नाम बालबोध, काव्यमाला और काव्यदर्पग्रह हैं । इन पुस्तकोंने भी जनसाधारणको बड़ा लाभ पहुँचाया । जावजीने कितनी सकलता प्राप्त की, इसका कुछ अनुमान इस बातसे हो सकता है कि जावजीके जीवनकालमें ही उनके प्रेमके सब कर्मचारियोंका वेतन मिलकर ३०००)र० मासिक था और अब यह रकम लगभग दूनी हो गई है । गवर्नमेण्टने उनके काममें प्रयत्न होकर उनको जे० पी० की उपाधिसे विभूषित किया था ।

जावजीका चरित्र भी यही उच्चश्रेणीका था । वे बड़े दयालु और उदार-चिन्त थे । वे दीनदुखियोंमें बड़ा प्रेम रखते थे और उनकी सहायता करनेको मर्दव नज़र रहते थे । एक बार उनके ' बालबोध ' नामिक पत्रकी उत्तमतासे प्रसन्न होकर गायकवाड़ श्रीसयाजीराय महाराजने उनको १००० ) रुपया का पुरस्कार दिया; परन्तु उदारचित्त जावजीने यह रुपया अपने पास न रखकर बालबोधके सम्पादकों दे दिया । जावजीके जीवनमें सबसे अधिक विचित्र बात यह है कि बहुत थोड़ीसी शिक्षा पाकर ही उन्होंने इतनी उन्नति कर ली । व्यवसायमें अपने उद्योग, परिश्रम और सच्चाईके कारण उनकी, आश्चर्यजनक वृद्धि हुई और वे सर्वसाधारणके प्रिय बन गये । उनकी मृत्युसे छापेकी कला और व्यवसायको बड़ी हानि हुई ।

कृष्णपान्तीका जन्म एक दरिद्र घरमें हुआ । उनको बाल्यावस्थासे ही अपने सिरपर नाकड़ी गठरी डटाकर बाज़ारमें बेचने जाना पड़ता था । वे





शाह मेहरजी घाछा, पंडित अयोध्यानाथ और जगित्य चदगद्दीन नरयणजीके पिता व्यापार करते थे । जगित्य महादेय गोविंद रानडेके पिता नागिकमें एक साधारण कर्मचारी थे ।

पंडित मदनमोहन मालवीय, महात्मा तारंग स्वामी, धीरुत गोपाल कृष्ण गोस्वामे, रावटर राजेन्द्रलाल मिश्र, लाला हंसराज, ' एडवोकेट ' के सभासद सुन्नी संग्रहाप्रसाद चर्मा, काशीनाथ इर्ययक तारंग, मेठ माणिकचन्द्र हीराचन्द्र जे. पी. इत्यादिके पिता साधारण स्थितिके पुरुष थे । धीरुत दादाभाई नवरोजीके पिता पुरोहित थे, बल्कि यह काम उनके घनमें कई पीढ़ियोंमें होता था ।

क्रांतिके नेपोलियनके समान अनेक साधारण मैनिकोंने आध्ययनक उत्कृति कर ली है । मराठा-जनिके व्यवस्थापक महाराज शिवाजी कौन थे ? उनके पिता शाहजी बीजापुरके बादशाहके यहाँ नौकर थे । निपार्जितने पूनामें रहकर युद्ध-कौशल सीखे थे । महाराज माधवराव सिंधिया साधारण मैनिक थे । पहले पहल उन्होंने पानीपतके युद्धमें कुछ रयाति पाई । फिर वे राजा हो गये । दिल्ली और मथुरामें रहकर वे मुगल-सम्राट् शाह आलमके नामसे मुगल-राज्य पर भी शासन करते थे । उनके पिता रानोजी, बालाजी विश्वनाथ पेशवाके एक निम्न सेवक थे । मैसूरके मुलतान हुदरबाली उर्मी देशके हिन्दूराजाके यहाँ एक साधारण मैनिक थे । बहमनी राज्यके संस्थापक शाह हुसन गंगू एक ब्राह्मणके सेवक थे और अत्यंत दरिद्र थे । दिल्लीके शासक और मूरवंशके संस्थापक शेरशाह सूरी एक साधारण मैनिक थे । दिल्लीके बादशाह फुतुव-उद्दीन ऐबक गुलाम थे ।

इस लिए स्पष्ट है कि सर्वोत्तम उत्कृतिके लिए यह जरूरी नहीं है कि मनुष्य धनी हो अथवा उसके पास सब तरहके साधन मौजूद हों । यदि ऐसा होता तो संसार सब युगोंमें उन मनुष्योंका प्रणी न होता, जिन्होंने निम्न श्रेणीसे उत्कृति की है । जो मनुष्य आलस्य और ऐश्वर्य आराममें अपने दिन बिताने हैं उनको उद्योग करने अथवा कठिनाइयोंका सामना करनेकी आवश्यकता नहीं पड़ती और न उनको उस गतिकी ज्ञान होता है, जो जीवनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए परम आवश्यक है । गरीबीको लोग मुसीबत समझते हैं, परन्तु वास्तवमें बात यह है कि यदि मनुष्य दृढ़तापूर्वक अपने



## जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

शाह ग़दरजी घाटा, पंडित अयोध्यानाथ और जस्टिस बदरगद्दीन तन्त्रयजीके पिता व्यापार करते थे । जस्टिस महादेव गोविंद रानडेके पिता नायिकमें एक माधारण कर्मचारी थे ।

पंडित मदनमोहन मालवीय, महात्मा तैलंग स्वामी, धीयुत गोपाल कृष्ण गोंगले, डाक्टर राजेन्द्रनाथ मिश्र, ग्वाला हंसराज, ' एडवोकेट ' के सम्पादक मुन्शी गंगाप्रसाद चर्मा, काजीनाथ चंपक तैलंग, गेट माणिकानन्द हीराचन्द्र जे. पी. इत्यादिके पिता माधारण स्थितिके गुरु थे । धीयुत दादासाह नवरोजीके पिता पुरोहित थे, जबकि यह काम उनके मनमें कष्ट पीड़ियोंमें होता था ।

प्रांशके नेपोलियनके समान अनेक माधारण सैनिकोंने आश्रयजनक उन्नति कर ली है । मराठा-शक्तिके व्यवस्थापक महाराज शिवाजी पौन थे । उनके पिता गाहजी बीजापुरके बादशाहके यहाँ नौकर थे । शिवाजीने पनामें रहकर युद्ध-कौशल सीखे थे । महाराज माधवराव सिंधिया माधारण सैनिक थे । पहले पहल उन्होंने पानीपतके युद्धमें कुछ ख्याति पाई । फिर वे राजा हो गये । दिल्ली और मथुरामें रहकर वे मुगल-मग्राह शाह आलमके नामसे मुगल-राज्य पर भी शासन करते थे । उनके पिता रानोजी, बालाजी विश्वनाथ पेशवाके एक निष्ठ सेवक थे । मैसूरके सुल्तान हैदरअली उन्नी देशके हिन्दूराजाके यहाँ एक माधारण सैनिक थे । बहमनी राज्यके संस्थापक शाह हुसन गंगू एक ब्राह्मणके सेवक थे और अत्यंत दरिद्र थे । दिल्लीके शासक और सूरवंशके संस्थापक शेरशाह सूरी एक साधारण सैनिक थे । दिल्लीके बादशाह फुतुच-उद्दीन ऐबक गुलाम थे ।

इस लिए स्पष्ट है कि सर्वोत्तम उन्नतिके लिए यह जरूरी नहीं है कि मनुष्य धनी हो अथवा उसके पास सब तरहके साधन मौजूद हों । यदि ऐसा होता तो संसार सब युगोंमें उन मनुष्योंका क़ण्ठी न होता, जिन्होंने निष्ठ श्रेणीमें उन्नति की है । जो मनुष्य आलस्य और ऐश आराममें अपने दिन बिताते हैं उनको उद्योग करने अथवा कठिनाइयोंका सामना करनेकी आदत नहीं पड़ती और न उनको उस शक्तिका ज्ञान होता है, जो जीवनमें सफलता प्राप्त करनेके लिए परम आवश्यक है । गरीबीको लोग मुसीबत समझते हैं, परन्तु वास्तवमें बात यह है कि यदि मनुष्य दृढ़तापूर्वक अपने

पैरों पर लड़ा रहे, तो बड़ी गरीबी उसमें लिए आती आई हो सकती है। गरीबी मनुष्यको समारके उस युद्धके लिए तैयार करती है जिसमें वषति कुछ लोग जीवता दिलाकर विषम-विष हो जाते हैं, परन्तु समझदार और मध्ये हृदयवाने मनुष्य बल और विद्यामयुक्त बनते हैं और सकलता प्राप्त करते हैं। एक विद्वान्वा कथन है कि “मनुष्योंको न तो अपने धनका यथापं ज्ञान है और न अपनी शक्तिका। धनमें वे इतना महत्त्व समझते हैं जितना उसमें वास्तवमें नहीं है और शक्तिको वे उतनी कद्र नहीं करते जितनी उनको करनी चाहिए। अपने पैरों पर आप लड़े रहनेसे और संय-मया अभ्यास करनेसे मनुष्यको यह शिक्षा मिलती है कि वह अपनी ही कमाईकी रोंटी खावे और अपनी आर्थिकताके लिए और अपने अधिकारमें आवे हुए उत्तम पद्धतीकी वृद्धि करनेके लिए सचे दिलसे परिधम करे।”

सुख और भोगविलासके लिए, जिनकी ओर मनुष्य स्वभावतः झुकते हैं, धन ऐसा प्रबल प्रलोभन है कि वे मनुष्य बड़े धन्य हैं जो धनपुत्रोंके सदा पैदा होकर भी संसारमें कुछ काम कर दिवाने हैं, और भोगविलासमें हाथ उठाकर अपना जीवन परिधममें व्यतीत करते हैं। बड़े दुःखकी बात है कि हमारे देशके अनेक धनिक आलस्यमें, नाच रंगमें और खेल-तमाशोंमें अपने समयको नष्ट कर देते हैं। इसके विपरीत ईंग्लैण्ड इत्यादि देशोंके धनिक देश-सेवाको ही अपने जीवनका एक मात्र उद्देश्य समझते हैं और स्वदेशके लिए सब तरहका परिधम करते हैं और कष्ट उठाते हैं, यहा तक कि अपने देश और अपने भाइयोंके लिए युद्धमें अपनी जान तक दे देते हैं। पर भारतीय श्रीमान् इन बातोंमें कोसा दूर भागत है।

धनाढ्य मनुष्य भी अप्रसिद्ध नहीं रहे हैं। विद्वान्वा एम मेकडा उदाहरण मिलते हैं। भारतमें भी कभी कभी एम एच चमक जाते हैं, जिन्होंने किसी न किसी रूपमें देशसेवा का है और जिनमें अन्य महाविद्यालयों मनुष्योंका शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। साहित्यमें सर रवीन्द्रनाथ ठाकुरका ल नाजिण, जिनकी समारमें आज भी मची हुई है। आपको कुलम सद्व विपुल लक्ष्मीका वास रहा है। आपको सवालाम् एष्यका पुरस्कार मिला वह भी आपने ‘शान्तिनिकेतन’ विद्यालयक नामक दान कर दिया। विज्ञानमें अ-यापक जगदीशचन्द्र बसुकी दार्शनिक जिनक आध्ययनक आधिकारिकों

## जानीय और व्यक्तिगत व्यापारमयन ।

देखकर यूरोप और अमेरिकाके बड़े बड़े विज्ञानवेत्ता दौताँक गये डैगली द्याने हैं । राजनीतिमें राजा सर टी. माधवरायको लीजिए जिन्होंने ट्राव-नफोर, इंदौर और बड़ौदाके दीयान रहकर उक्त राज्योंकी प्रजाका बहुत भारी उपकार किया और अतुल यश और सम्मान प्राप्त किया । आपने एक समृद्धिनाली कुलमें जन्म लिया था । आपके पिता भी ट्रावनफोरके दीयान थे । धर्मवीर देशभक्तोंमें महामा मोहनदास करमचंद गाँधीका नाम सदा अमर रहेगा जिन्होंने अपने देशआह्वोंके दुश्मनों को दूर करना ही अपने जीवनका एक मात्र उद्देश्य बना रखा है । आपके पितामह और पिता पोरबंदरके दीवान थे । जानि-हिर्नेपियोंमें सर सरय्यद आहमदका नाम लिया जा सकता है । उनके पितामह सम्राट आलमगीर ( द्वितीय ) के राजमंत्री थे और उनके पिताको सम्राट अकबर ( द्वितीय ) ने मंत्री-पद पर नियत करना चाहा था । उद्योग-धंधों और व्यापारमें जे. एन. टाटाका नाम लिया नहीं है । दानी धनाढ्योंमें यम्यहंके सेठ प्रेमचन्द रायचन्दको पान नहीं जानता ? आपने अपने ही उद्योगसे विपुल धन उपाजन किया था । आपने अपने जीवनमें सब मिलाकर पचास, साठ लाख रुपये दान किये । आपने कई लाख रुपया कलकत्तेके विश्वविद्यालयको भी दिया, जिसके व्याजमे ऊँची परीक्षा पास करनेवालोंको एक छात्रवृत्ति दी जाती है, जो ' प्रेमचंद-रायचन्द-स्कालरशिप ' के नामसे प्रसिद्ध है । अन्य समृद्ध कुलोंमें जन्म लेनेवालोंमें श्रीयुत रमेशचन्द्रदत्त, सर तारकनाथ पालित, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, गवर्गजा सर दिनकरराय, सर सेठ हनुमन्चंद इत्यादिके नाम लिये जा सकत हैं । परन्तु स्मरण रहे कि इस समय ऐसे मनुष्य भारतवर्षमें इने-गिन हैं ।

अब विद्वानोंमें चलिए । विद्वानोंमें कई प्रकारके उदाहरण तो भारतवर्षमें भी अधिक और उत्तम मिलत हैं । वही पर सैकड़ों नीच स्थितिके मनुष्योंने अमित यश प्राप्त किया है और अपने देशका ही मुख्य उज्ज्वल नहीं किया है, किन्तु समस्त समाजको लाभ पहुँचाया है । भारतवर्षमें, जानि-पोतिका भेद बड़ा प्रबल है इसलिए वही नीच जातिके मनुष्य उठने नहीं पाते परन्तु, इंग्लैण्ड आदि देशोंमें, यह बात नहीं है । वही ऐसे सैकड़ों मनुष्य विज्ञान, साहित्य उद्योग, व्यवसाय इत्यादिमें बहुत बड़ी प्रतिष्ठा प्राप्त कर गये हैं ।



## जातीय और व्यक्तिगत स्वावलम्बन ।

करता रहा । वीर सर जान हाफ्सबुड, जिसने फ्रांसवालोंके विरुद्ध पोशि-असंके युद्धमें विजय पाई थी, अपने आरम्भिक जीवनमें लंडनके एक दर्जीके यहाँ काम सीखा करता था । परन्तु दर्जियोंमें सयसे प्रसिद्ध निःसंदेह युनाइटेड स्टेट्स अमेरिकाके भूतपूर्व प्रेसीडेंट पेंडूषू जानसन हैं, जिनमें विचित्र चरित्र-बल और मानसिक शक्ति थी । एक बार जब वे वार्शिंगटन नगरमें अपने एक व्याख्यानमें वर्णन कर रहे थे कि मैं अपने राजनैतिक जीवनके शुरूमें नहरका हाकिम हुआ था और फिर नियमव्यवस्थाके सभी अंगोंमें होकर बढ़ता चला गया, तब श्रोताओंमेंसे एक आवाज आई, कि “ दर्जीकी श्रेणीमें उठे हो ! ” जानसनका स्वभाव था कि वे ऐसी चुटकी लेनेसे घुरा न मानते थे, उल्टा उसको लाभदायक बना देते थे । घम उन्होंने तुरंत ही कहा कि, “ कोई सज्जन कहते हैं कि मैं दर्जी था, परन्तु मैं इस बातमें किंचित् भी नहीं घबड़ाता; क्यों कि जब मैं दर्जी था, तो भद्रतामें और कपड़े बनानेमें प्रसिद्ध था; मैं अपने प्राणियोंसे अपने वायदेमें कभी न सूकता था और सदैव उत्तम काम करता था । ”

फार्डिनान्ड घुमजी, डीफो कर्कघाइट, इत्यादि कमाई थे । माफके अंजनके आविष्कारके संबंधमें न्यूकोर्मन, वाट और स्टीफिन्सनके नाम प्रसिद्ध हैं । इनमेंसे पहला लुहार था, दूसरा गणितसंबंधी अंजार बनानेवाला था और तीसरा अंजनमें बोयला होकनेवाला था । माइकल फेरेडे, जो एक लुहारव पत्र व शुरूमें जिरफ बंधनका काम संभाले रह और बाईस वर्षकी अवस्थानव वर्षा घटा करने रहे, वे अब दार्शनिकोंके शिरोमणि हैं ।

ज्यानि नागरका उन्नति करनेवालोंका लार्जण । कोपनिस्का पिता लव रॉलिन पकानेका घटा बनता था । कंपाटर जर्मनके एक अति-यारवा लटका था । डॉ. एलिम्बर्टेको एक गिरजकी मरिदियों पर कोई रानका टाल गया था और एक जिला । पॉलिन बननेवालोंकी स्त्री उस दालकका उदा लाई थी और उसने उसका पालन पोषण किया था । एंपरिस्म व वीर विमानका लटका था ।

धमापदमबाव पुत्रोव इंग्लैण्डके इतिहासमें विमोचक ल्यानि पाई है । इनमेंसे समुद्री युद्धाम ड्रेक और नेलसनन, विज्ञानम वॉल्टेस्टन और





भी अभिमान है कि एक मनुष्य, जिसने ऐसी दशासे उन्नति की है, इस देशके खानदानी रईसोंके साथ समान अधिकारों सहित बैठनेके योग्य है । ”

राजसभाके एक सदस्य मिस्टर विलियम जैक्सनका जीवन भी आश्चर्यजनक उन्नतिका उदाहरण है । विलियम जैक्सनके पिता, जो एक धैर्य थे, अपने जिन ग्यारह बच्चोंको छोड़कर मर गये उनमें विलियम जैक्सन सातवाँ पुत्र था । पिताके जीवनकालमें बड़े लड़कोंने तो अच्छी शिक्षा प्राप्त कर ली, परन्तु उनकी मृत्यु होनेपर छोटे लड़कोंको स्वावलम्बनके मार्गका आश्रय देना पड़ा । जब विलियम जैक्सन बारह वर्षका हुआ तब उसका पाठशाला जाना बन्द कर दिया गया और वह एक जहाजमें नौकर करदिया गया, जिसके बाहरी भागपर सरेरे छः बजेसे रातके नौ बजे तक कठिन परिश्रम करना पड़ता था । उसका स्वामी बीमार हो गया और वह विलियमको हिसाब-किताबके कमरेमें रखने लगा । यहाँ विलियमको पहलेकी अपेक्षा अधिक अवकाश मिलने लगा । अब उसे पढ़नेका सुयोग मिल गया । एक प्रसिद्ध अँगरेजी विश्वकोश उसके हाथ पड़गया और उसने उसकी २६ जिल्दें कुछ तो दिनमें और विशेषकर रातमें पढ़ टालीं । उसने फिर निजी व्यापार करना आरम्भ किया । वह मेहनती था, अतएव उसको इस काममें सफलता हुई । अब वह बहुतसे जहाजोंका स्वामी है जो लगभग सब समुद्रोंपर चलते हैं और वह संसारके लगभग सभी देशोंके साथ व्यापार करता है ।

इंग्लैंडके धनाढ्य मनुष्योंमें आधुनिक दर्शनशास्त्रके जन-मदाना वेकन, घार्मस्टर, वोर्डल और रोस्सी इत्यादिके नाम लिये जा सकते हैं । इनमें रोस्सी प्रसिद्ध यन्त्रकार हो गया है । यदि वह धनाढ्य घरानेमें जन्म न लेता, तो कदाचित्त वह आविष्कारकर्ताओंका शिरोमणि होता । रोस्सी लुहारके काममें ऐसा प्रवीण था कि एकबार एक कारखानेके स्वामीने—जिसको उसके धनाढ्य होनेका हाल मालूम न था—उसमें एक बड़े कारखानेका प्रबंधकर्ता बननेके लिए आप्रह किया था । उसने स्वयं जिस टेलीफोनका आविष्कार किया, वह हम प्रकारके अन्य यंत्रोंमें निश्चयपूर्वक अधिक अपूर्व है ।

लार्ड ब्राँघमका अट्टर परिश्रम लोकप्रसिद्ध है । वे जनसाधारणसंबंधी कामोंमें ६० वर्षकी अवस्थासे भी अधिक अवस्थानक योग देत रहें । हम अवस्थामें उन्होंने कानून, माहिन्त्य, राजनीति और विज्ञानसंबंधी अनेक



## दूसरा अध्याय ।



## उद्योगी आविष्कर्ता ।

“ सर्वत्र एक अपूर्व युगका हो रहा सघार है,  
देखो, दिनों दिन बढ़ रहा विज्ञानका विस्तार है ।  
अब तो ठहो क्या पढ़ रहे हो व्यर्थ मोच विचारमें ?  
मुख दूर, जीना भी कठिन है भ्रम विना संसारमें ॥ ”

—मथिलीशरण गुप्त ।

“ निम्नश्रेणीके मनुष्योंने इंग्लैंडके लिए आविष्कारसंबंधी जितने कार्य किये हैं उनको निकाल दो और फिर देखो कि केवल उन्हींके अभावसे इंग्लैंडकी स्थिति कैसी हो जाती है । ”

—आर्थर हल्स ।

“ अब संसारका स्वामित्व उद्योग और विज्ञानशास्त्रके हाथ रहेगा । विज्ञानके पण्डित और उद्योगी पुरुष अपनी शक्तिसे सारी दुनियाको वशीभूत कर लेंगे । ”

—इसाल्वान्दी ।

**प्र**त्येक देशकी महत्ता उस देशके उद्योग-धंधोंपर बहुत कुछ निर्भर है । किमान, उपयोगी पदार्थोंके बनानेवाले, औजारों और मशीनोंके ईजाद करनेवाले, पुस्तकोंके लेखक, शिल्पकार इत्यादि सभी अपने अपने उद्योगमें देशकी उन्नति करते हैं । इसी उद्योगके कारण आज हम पश्चिमी देशोंको फूला-फूला पाते हैं और इसीके अभावमें हमारी दशा ऐसी शोचनीय हो रही है । जब हम देशमें भी उद्योग धन्धे होते थे, तब यह देश भी उन्नतिके शिखरपर था । लटन और पेरिसकी महिलायें भी यहाँके-टाँकोंके कपड़ोंको पहनकर गर्व करती थीं । अबले बंगालमें ही लाखों मनुष्य शिल्प-व्यवसाय करते थे । भारतवासियोंके बनायेहुए पदार्थ समार-भरमें विकते थे । दिल्लीमें जो लोहेका ऊँचा स्तम्भ है वह हमारे ही पूर्वजोंके शिल्पचानुर्यका नमूना है । पश्चिमी शिल्पकार इसको देखकर दोनोंके नले उगली दयाते हैं । इसकी अवस्था इस समय चौदह सौ वर्षकी है, परन्तु हवा और पानीमें निरंतर गुल्ले रहनेपर भी इसपर मोरचेका नाम तक नहीं है । भारतकी गृह-निर्माण-विद्या और चित्रकारीके प्राचीन नमूने अब भी अद्भुत समझे जाते हैं ।



एक बड़े अनुभवी मनुष्यका कथन है कि कष्टों के बड़े परिश्रमों से भी आनन्द मिलता है और उद्योग करने के स्वाधन प्राप्त होते हैं । ईसागद्दीकी साथ परिश्रम करने से सर्वोत्तम शिक्षा मिलती है और परिश्रमकी पाठशाला स्वयं उत्तम है । क्योंकि उसमें उपयोगी घनता मिलाना जाता है, स्वयंज्ञानका भाव आता है और धैर्यपूर्वक उद्योग करनेकी आदत पड़ती है । कारीगरको रोजमर्रा कीजारी और दूसरी चीजोंमें काम करना पड़ता है और संसारके लोगोंके साथ व्यवहार करना पड़ता है । हमसे उसकी निरीक्षण-शक्ति बढ़ती है और वह जीवनयात्रामें अपने पीछेपर आप बड़े होने के और अपने आपको उत्तम बनाने के योग्य हो जाता है । किसी दूसरे पेड़ों से मनुष्य इतनी योग्यता नहीं प्राप्त कर सकता ।

पहले अध्यायमें हम अनेक प्रतिष्ठित मनुष्योंके नाम लिख आये हैं, जिनोंने अपने उद्योगोंके द्वारा निम्न धर्मोंमें उठकर विज्ञान, व्यापार, साहित्य, शिक्षा इत्यादिमें व्यापार पाई है । उनके उदाहरणोंमें मालूम होता है कि गरीबी और धर्मके कारण जो बटिनाएँ सामने आजाती हैं वे दुर्जय नहीं हैं । जिन उपायों और आविष्कारोंकी बदौलत अंगरेज जाति ऐसी शक्तिशालिनी और धनशालिनी हो गई है, उनके अधिकांशके लिए निरसंदेह आवृत निम्न धर्मों से मनुष्योंका आधार मानना चाहिये । इस संबंधमें ऐसे लोगोंने जो कुछ किया है उसको यदि निकाल दो तो फिर मालूम होगा कि अन्य मनुष्यों के द्वारा वास्तवमें बहुत ही कम काम हुआ है ।

आविष्कार-कर्ताओंके द्वारा समारक कई बड़े बड़े व्यवसाय चलपड़े हैं । उनमें प्रायः समारको आवश्यक पदार्थ और सुख तथा नोगविलासकी चीजें प्राप्त हुई हैं और उनकी प्रतिभा तथा परिश्रमोंके कारण मनुष्यजातिका जीवन और सुख और सुखमय हो गया है । हमारा भोजन, हमारा वस्त्र, हमारे घरोंका अलंकार, चीजें जो हमारे घरोंमें प्रकाशकी आनंद देते हैं, परन्तु मशीनों का चलन है, रोम और बिजली जिनसे मर्दों, गलियों और घरोंमें प्रकाश होता है, रेल, उदात्त इत्यादि जिनसे हम स्वयं और जलपर यात्रा करते हैं व्यावसाय जिनसे हम पत्रियोंकी मोति उड़ते फिरते हैं, वे जीवन्त जिनसे नाना प्रकारकी चीजें बनती हैं, जो हमारी आवश्यकताओंकी पूर्ति करती हैं और हमको सुख देती हैं—ये सब हमको बहुतसे मनुष्य तथा



पाटको चालकपालमें भी अपने मिलोंमें विज्ञानका दर्शन होता था। अपने पिताके बटुईगानेमें यह कुछ कैचार्ड मापनेके यंत्रोंको देखकर उसको इति-विद्या और निर्माण-शास्त्रके अध्ययनका दौड़ पैदा हुआ। अपनी आरम्भनाये, कारण उसने शरीर-शास्त्रके अध्ययनको जामना आदा। और अपने आरम्भनाये कामोंमें अनेके प्रमाण करनेसे उसका ध्यान घनमय-विद्या और इतिहासकी ओर आकर्षित हुआ। जब यह गणितसंबंधी औजार बनानेका व्यवसाय किया करता था, तब उसे एक चाजेकी प्रशस्तता काय मिली। और तथापि उसे गान-विद्यासे रुचि न थी, तथापि उसने स्वरविद्याका अध्ययन किया और उस चाजेको सफलतापूर्वक बना दिया। इसी तरहसे जब न्यूकोर्नका बनाया हुआ भाषका अंजन उसके पास प्रशस्तके लिए आया तब यह तुरंत ही तब, चालकभयन और गाड़ीकरणके संबंधमें उस बालमें जो कुछ मान्यता थी उसे सीखनेके लिए तत्पर हो गया और इसके साथ ही संघ विद्या और निर्माण-विद्या भी सीखता रहा। अपने अध्ययनके परिणामोंसे अंतमें उसने स्वयं एक भाषाका अंजन बनाकर दिया दिया।

दस वर्षतक यह यंत्रोंको बनाता और उनके विषयमें विचार करता रहा। उसे आनंदित करनेके लिए भाषाकी बहुत थोड़ी मात्रा थी और उसे उत्साहित करनेके लिए मित्र भी बहुत थोड़े थे। इसके साथ ही साथ यह कई तरहके धंधे करके अपने पुटुम्यका भरण पोषण करता रहा। यह कैचार्ड मापनेके यंत्र बनाता और बेचता था, घोंसुरी और अन्य चाजे बनाता था, मकानोंकी माप करता था, सड़के मापता था, नहरोंकी खुदाईके कामका निरीक्षण करता था; इस तरह जो काम मिल जाता था और जिसमें फायदेकी सुरत दिखाई देती थी वही करने लगता था। अंतमें पाटको एक सुयोग्य साथी मिल गया जिसका नाम मैथ्यू यौल्टन था। यह एक चतुर, उद्योग-शील और दूरदर्शी मनुष्य था जिसने भाषाके अंजनसे सब तरहके काम लेनेका बीड़ा उठा लिया था, और इतिहास अब उन दोनोंकी सफलताका साक्षी है।

यहुतसे चतुर आविष्कार-कर्ताओंने समय समयपर भाषाके अंजनमें नई नई शक्तियाँ बढ़ाई हैं और तरह-तरहके सुधार करके उन्होंने उसको सब तरहकी चीजें बनानेके योग्य कर दिया है। कलौकी चलाना —





चित्त—जो दौड़में अपने आपको फिटड़ा हुआ देखते हैं—एक और यत्न है, और इस कारण यह, स्टीफनसन और आर्कहाइट द्वारा मनुष्योंको अपने व्यावहारिक और सफल आविष्कारकर्ता होनेके स्वप्नों और व्यातिथी बहुत ही दृष्टा करनी पड़ती है ।

आप बहुतसे घंटरातोंके समान आर्कहाइटने भी दर्शनी अपाधाये उद्घाटित की । यह सन् १७१९ ईस्वीमें प्रियटनमें पैदा हुआ । उसके मातापिता बड़े व्यापक थे और यह उनके तेरह सालोंमें सबसे छोटा था । उसमें बहुतसे कमी शिक्षा नहीं पाई; जो कुछ शिक्षा उसे मिली यह उसने अपने आप प्राप्त की और यह अंत समयतक बड़ी कठिनाईके साथ लिपि-पढ़नेके योग्य हुआ । वास्तविकतामें यह एक नार्थके बड़ी काम स्वीकृत लगा और जब यह यह काम सीख चुका, तब बोल्डनमें रहने लगा । उसने यहाँपर एक दूधानक बीघेका सिगाना बिगायेपर १० लिया और उसके ऊपर यह लिखा दिया “—आओ, इस सिगानेके नार्थके पास आओ—यह दो पैसोंमें हजारमत बना देता है । ” दूसरे नार्थोंके प्राहक कम हो चले, क्यों कि य जिगाना दाम देते थे, अतः उनको भी अपनी मजदूरी घटाकर इतनी ही करनी पड़ी । फिर आर्कहाइटने, जो अपने धंधेको चलानेकी क्रियामें था, यह घोषणा करदी कि “ मैं एक ही पैसोंमें अच्छी हजारमत बनाता हूँ । ” कुछ वर्ष बाद उसने यह सिगाना छोड़ दिया और यह ध्यान स्थानमें घूम-घूमकर बालोंका रोजगार करने लगा । उस समयमें इंग्लैण्डके निवासी लम्बे बालोंकी टोपी पहना करते थे और इन टोपियोंका बनाना नार्थोंके व्यवसायका प्रधान भाग था । आर्कहाइट टोपियों बनानेके लिए इधर उधर घूमकर बाल खरीदने लगा । यह एक तरहका गिजाय भी बनाने लगा, जिसमें उसका धंधा खूब चलने लगा; परन्तु इतने-पर भी उसकी आदमनी केवल इतनी होती थी कि यह अपना निर्वाह ही कर सकता था ।

कुछ समयमें बालोंकी टोपी पहननेके रिवाजमें परिवर्तन हो गया, अतएव बालोंकी टोपी बनानेवालोंपर संकटका पहाड़ टूट पड़ा, और आर्कहाइटने जिसकी रुचि यंत्रोंकी ओर थी, अपना ध्यान मशीन बनानेमें लगाया । उस समय काननेकी कल बनानेकी बहुत लोगोंने चंष्टायें की थीं, इस लिए हमारे नार्थने भी आविष्काररूपी समुद्रपर औरोंके साथ अपना जहाज चलाया—



## उद्योगी आविष्कर्ता ।

आविष्कार किया था, तब लोग उसके ऊपर दूट पड़े थे और उसको लैंक-शरमे निकाल दिया था और बेचारे हार्गोन्जने जब पानीसे चलनेवाली कात-नेकी मशीन बनाई थी तब उपद्रवी लोगोंने उसे तोड़ डाला था । अत एव वह नार्थिघम नगरको चला गया और वहाँके सेठोंसे उसने आर्थिक सहायताकी प्रार्थना की । एक बार वह असफल हुआ, परन्तु एक दूसरी जगहसे उसे इस शर्तपर सहायता मिल गई कि वह अपने आविष्कारसे कमाये हुए धनमें उसको भी साझी करे । आर्कगड्टको अपना काम करनेके लिए एक विशिष्ट अधिकार-पत्र भी मिल गया । पहले पहल नार्थिघममें एक रुईका मिल बनाया गया, जो घोड़ोंमें चलाया जाता था और कुछ दिनों बाद एक दूसरा बहुत बड़ा मिल क्रोमफर्डमें बनाया गया, जो पानीके जोरसे चलाया जाता था ।

परन्तु यदि आर्कगड्टके आगामी परिश्रमका ग्ययाल किया जाय, तो कहना पड़ेगा कि अभी तो उसका परिश्रम शुरू ही हुआ था । उसको अभी तो अपनी मशीनके बहुतसे पुर्जोंकी पूर्ति करनी थी । उस मशीनमें वह निरंतर परिवर्तन और सुधार करता रहा, यहाँ तक कि अंतमें वह खूब काम-लायक और लाभदायक बन गई । उसने चिरकालिक धैर्यपूर्वक परिश्रमसे ही सफलता प्राप्त की । कई वर्षोंतक तो निराशा होनी रही, ग्यया भी बहुत खर्च हुआ और कोई नतीजा न निकला । जब सफलता निश्चय मालूम होने लगी तब लैंकशरके कारीगर आर्कगड्टके विशिष्टाधिकार-पत्रपर इस लिए दूट पड़े कि वे उसे फाट डालें । आर्कगड्टको लोग कारीगरोंका शत्रु कहने लग और एक दिन पुलिस तथा शस्त्रधारी सिपाहियोंकी एक बलबली सेनाके दमन देखते लोगोंने आर्कगड्टके एक मिलको नष्ट कर दिया । लैंक-शरके आर्थिकियोंने उसके मूलको खरीदनेमें इनकार किया यद्यपि वह याज्ञ-रामे मयमें बढ़कर था । फिर उन्होंने उसे उसकी मशानोंके प्रयोगके लिए विशिष्टाधिकार न दिया और सबोंने मिलकर उसे न्यायालयमें दायित्व कर-दना चाहा । सुविचारवान मनुष्योंके ना-रसद करनेपर भी आर्कगड्टका विशिष्टाधिकार गटबट कर दिया गया । न्यायालयसे परीक्षा हो चुकनेके बाद जब वह एक मरायके सामन होकर—जिसमें उसके विरोधी ठहरे हुए, निकल रहा था तो उसके एक विरोधीने आर्कगड्टको मुनानके लिए



अंतोमें परस्पर विरोध है; परन्तु आविष्कारकर्ताके नामके विषयमें कुछ भी संशय नहीं है । यह विलियम एडी था और सन् १८६३ ईस्वीमें पैदा हुआ था । कुछ लोगोंका मत है कि उसके पास छोटीसी जर्माईदारी थी और कुछ लोग कहते हैं कि यह एक निर्धन विद्यार्थी था और उसको दुम्मे ही गरीबीका सामना करना पड़ा था । यह सन् १८७८ में वैमिजनेके वाइसट कालिजमें भरती हो गया । उसको भोजन, पख इत्यादि कालिजकी ओरसे ही मिलते थे । फिर यह एक दूसरे कालिजमें भरती हुआ और यहाँसे उसने बी० ए० की परीक्षा पास की । यह एम० ए० की परीक्षाओं में भी पढ़ा था नहीं, यह टीक नहीं मान्य ।

जिस समय एडीने मोजा बनानेकी कलाया आविष्कार किया उस समय यह एक गिरजेमें नौकर था । कहा जाता है कि यह एक युवतीपर आसक्त हो गया, परन्तु उस कुमारीने उसकी कुछ परवा न की । जब ही उस कुमारीके यहाँ जाता था, तब यह अपने मोजे बुननेमें तथा अपने शिष्योंको इस कामकी शिक्षा देनेमें बहुत जियादा ध्यान देती थी और एडीकी बातोंको न सुनती थी । एडीको इस अपमानका पड़ा खयाल हुआ और उसने राज लिया कि अब मैं मोजा बुननेकी एक मशीन बनाऊँगा जिससे हाथकी अपेक्षा अधिक काम होगा और इस लिये हाथसे मोजा बुननेका व्यवसाय लाभहीन हो जायगा । तीन वर्षतक यह अपने आविष्कारमें लगा रहा । जब उसे सफलताकी आशा झलकने लगी, तब यह नौकरी छोड़कर मशीनसे मोजा बनानेके व्यवसायमें लग गया । इस कथाका समर्थन कई प्रमाणोंसे होता है ।

मोजेकी मशीनकी आविष्कारसंबंधी घटनायें चाहे जो रही हों, परन्तु इसमें कुछ संदेह नहीं कि आविष्कारकर्ताकी यंत्रसंबंधी प्रतिभा यही विलक्षण थी । एक गिरजेके नौकरके लिये जो एक दूसरे ग्राममें रहता हो और जिसका जीवन अधिकतर पुस्तकावलोकनमें ही व्यतीत हुआ हो, ऐसी सूक्ष्म और पेचीदा पुर्जाकी मशीन बनाना और उँगलियोंमें सलाइयोंसे सूतके फदे डालकर उनमें ढोरा पिरोनेके धीमे और थकानेवाले कामको मशीनसे कातनेकी सुंदर और शीघ्रपद्धतिमें एकदम पलट देना वास्तवमें एक आश्चर्यजनक सफलता थी, जो यंत्रसंबंधी आविष्कारोंके इतिहासमें अद्वितीय कही जा



चलनेके लिए और घटोंके कारीगरोंको मोजा बुननेकी मशीन बनानेकी और उसमें काम करनेकी शिक्षा देनेके लिए अनुरोध किया, तब उसने उसकी काम शुरू ही स्वीकार करली । घट अपने भाई और बड़े अन्य कारीगरों सहित अपनी मशीनको लेकर चला गया । रोहन नगरमें उसका हार्दिक स्वागत किया गया और उसने एक बड़ा कारखाना खोल दिया, जिसमें उसकी बी मशीनें निरंतर काम करने लगीं; परन्तु इसी समय उस कंपनीको विपत्तिने घिर आ घेरा । फ्रांसका राजा हेनरी चतुर्थ, जो उसका संरक्षक बना था और जिसने उसको पुरस्कार, सम्मान इत्यादि मिलनेकी आशा थी, मार डाला गया । इसमें जो कुछ उत्साह और संरक्षण उसे अत्यंत मिला था, वह सब जाता रहा । अपने स्वार्थोंको प्रकट करनेके लिए वह राजधानी पेरिसमें पहुँचा, परन्तु वह प्रोटेस्टेंट सम्प्रदायका था तथा विदेशी था, अतएव उसकी प्रार्थनाओंपर कुछ भी ध्यान न दिया गया और नाना कारणोंसे संग आकर वह गौरववान् आविष्कारकर्ता थोड़े ही दिनोंमें पेरिसमें बड़ी गरीबी और आपत्ति भुगतते हुए इस संसारसे उठ गया ।

लीका भाई अन्य सात कारीगरोंसहित किसी तरह फ्रांसमें भागकर इंग्लैंडमें आगया और सिवाय दो मशीनोंके अपनी सब मशीनोंको भी ले आया । इंग्लैंडमें आकर उसने एक और आदमीके साथ—जिसको ली ने मशीनसे मोजा बुननेका यह काम सिखलाया था—साक्षात् कर लिया । फिर इन दोनोंने और कारीगरोंकी सहायतासे मोजा बुननेका काम शुरू किया और बहुत सफलता प्राप्त की । जिस जिलेमें यह कारखाना खोला गया था, उसमें भेद बहुत पाली जाती थीं और उनसे बहुत अच्छी ऊन मिल जाती थी । इंग्लैंडमें धीरे धीरे इन मशीनोंका रिवाज बढ़ता गया, और अंतमें मशीनसे मोजे बुनना एक बड़ा भारी व्यवसाय बन गया ।

प्रसिद्ध किन्तु हतभाग्य जैकडका जीवनचरित बड़ी उत्तम रीतीसे बत-छाता है कि चतुर मनुष्य—चाहे वे कितनी ही निम्न श्रेणीके हों—अपनी जातिकी उद्योगशीलतापर बड़ा प्रभाव डालते हैं । जैकडके मातापिता फ्रांस देशके लायोनस नगरमें रहते थे और बड़े निर्धन थे । जैकडका पिता हाथसे कपड़ा बुना करता था । अपनी गरीबीके कारण वह अपने पुत्र जैकडको शिक्षा न दे सकता था । जब जैकड बड़ा हुआ और इस योग्य हुआ कि कुछ धंधा



सील सके तब उसका पिता उसको एक जिह्म बौधनेवालेके यहाँ काम सील-नेके लिए भेजने लगा । एक बड़े गुमास्तेने, जो उस जिह्मसाजका हिसाब किया करता था, जैकर्टको कुछ गणित पिललाया । जैकर्टने बोदे ही समयमें यंत्र-विद्याकी ओर रुचि प्रकट की और उसके कई कार्योंने गुमास्तेको चकित कर दिया । गुमास्तेने जैकर्टके पितासे जैकर्टको कुछ और काम मिलवानेका अनुरोध किया, जिसमें वह अपनी विविध शक्तियोंकी अधिक उन्नति कर-सके । अतएव जैकर्टने एक चाटू-कैची बनानेवालेके यहाँ नौकरी कर ली, और वहाँ वह काम सीलने लगा । परन्तु उसका मालिक उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव करता था, इस लिए जैकर्टने कुछ समय बाद उसकी नौकरी छोड़ दी और वह एक टाट्टर डालनेवालेके यहाँ काम सीलने लगा ।

इसी बीचमें जैकर्टके मातापिताका देहांत हो गया, अतएव जैकर्टने मग़दूर होकर अपने पिताके दो राठोंको लेकर कपड़ा बुननेका धंधा शुरू कर-दिया । वह तुरंत ही उन राठोंको मुधारनेमें लग गया । अपने भाविष्कारोंमें वह ऐसा दत्तचित्त हुआ कि उसने अपना धंधा छोड़ दिया और वह वीथी ही फज़ाल हो गया । इसके बाद उसने अपना कृण चुकानेके लिए राठोंको बेच दिया और अपना विवाह भी कर लिया, जिससे उसके ऊपर और भी भार हो गया । वह और भी गरीब होगया और कर्मस मुक्त होनेके लिए उसने अपनी शोपही भी बेच दी । उसने नौकरी ढूँढनेका प्रयत्न किया, परन्तु उसे सफलता न हुई, क्योंकि लोग समझते थे कि वह आलसी है और अपने भाविष्कारोंके मन्त्रमें आकाशमें महल बनाया करना है । अतमें वह मैस नगरमें एक रस्मी बनानेवालेके यहाँ नौकर हो गया । उसकी स्त्री लायोन्स नगरमें ही रह गई और टोपी बनाकर अपना पेट भरने लगी ।

कुछ वर्षोंतक जैकर्ट उन्नति करता रहा और अन्तमें उसने कपड़ा बुननेकी मशीनका आविष्कार किया । इस मशीनका विवाज धीरेधीरे परन्तु स्थिर रूपसे बढ़ा और दस वर्ष बाद लायोन्स नगरमें ऐसी चार हजार मशीनोंमें काम होने लगा । इसी बीचमें जैकर्टको एक युद्धमें लड़ना पड़ा और उसका काम कुछ दिनों तक बन्द रहा । कदाचित्त वह सैनिक ही बना रहता, परन्तु इस अवसरपर उसका इच्छलौता पुत्र भाग गया और वह लायोन्स नगरमें अपनी स्त्रीके पास सेनामेंस भागकर लौट आया । कुछ दिनोंतक वह वहीं

## उद्योगी आविष्कर्ता ।

छिपा रहा और अब उसे फिर अपने आविष्कारोंका ध्यान आया । परन्तु उसके पास इस कामके लिए रुपया कहाँ था ? उसने एक कारीगरके यहाँ नौकरी करली जैकर्ड दिनमें अपने मालिकका काम करता था और रातको अपने आविष्कारोंमें लगा रहता था । यह समझता था कि कपड़ा बुननेकी कलामें अधिक उन्नति हो सकती है । एक दिन उसने मालिकसे भी अनायास यह बात कह दी और खेद प्रकट करके यह भी कहा कि “ मैं अपनी गरीबीके कारण अपने विचारोंको कार्यरूपमें परिणत नहीं करसकता । ” सौभाग्यवश उसके दयालु मालिकने उसकी बातोंका मूल्य जान लिया और इस कामके लिए उसको रुपया दिया ।

तीन महीनेमें जैकर्डने एक कल बनाई, जिसके द्वारा कठिन और थका देनेवाला परिश्रम जो कारीगरोंको अपने हाथसे करना पड़ता था, यंत्रोंके द्वारा किया जाने लगा । यह मशीन पेरिसकी एक प्रदर्शनीमें रक्खी गई और जैकर्डको इसके पुरस्कारमें एक पीतलका पदक मिला । दूसरे वर्ष लंदनकी सोसायटी आफ आर्ट्सने ऐसी मशीन बनानेके लिए पुरस्कार नियत किया जिसमें मछली पकड़नेका जाल और वायुको जहाजपर चढ़नेमें रोकनेवाला जाल बन सके । जैकर्डको जब यह समाचार मिला, तो उसने तीन सप्ताहमें ही ऐसी मशीनका आविष्कार करदिया । इससे उसका इतना यश हुआ कि फ्रांसके सम्राटने उसको अपने यहाँ बुलाकर उसका स्वागत किया । उसको रहनेके लिए मकान दिया गया और नये आविष्कार करनेके लिए उसका वेतन नियत करदिया गया । यहाँ रहकर उसे तरह तरहकी मशीनें देखनेका सुअवसर प्राप्त हुआ ।

उसने कुछ भेद औराज बनाये और फिर उनकी सहायतासे लकड़ीकी एक घटी बनाई जो बिलकुल ठीक समझ देती थी । एक छोटेसे गिरजेके लिए उसने इबड़नोंकी कुछ मूर्तियाँ बनाई जो अपन पक्षोंको हिलती थीं और कुछ मूर्तियाँ पुजारियोंकी बनाई जो गिरजके मध्यमें कुछ संकेत किया करती थीं । उसने और भी बहुत सभ्य चीजें बनवाए खिलौने बनाये । उसने एक अद्भुत बरतण बनाई जो सेवा बरतण समान पानीमें तैरती थी खेले करती थी, पानी पीती था और खोजता था । उसने एक प्राचीन प्रथम वर्णित घटनाके आधारपर एक स्त्री बनायी जो उसी तरह पुष्पाङ्ग भासता और नाचता था जैसा उस प्रथम स्त्रीका ।



## तीसरा अध्याय ।



### धैर्यकी महिमा ।

“ संसारकी समरस्थलीमें धीरता धारण करो ।

चलतेहुए निज इष्ट पथमें संकटोंसे मत डरो ॥ ”

—मैथिलीशरण गुप्त ।

“ धैर्य या धीरज वीरताका अति उत्तम, मूल्यवान् और दुष्प्राप्य अंग है । धीरज सब आनन्दोंका एवं शक्तियोंका मूल है । आशासे भी, यदि उसके साथ अधीरता हो तो, कदापि सुख नहीं मिलता । ”—जान रस्किन ।

सूक्ष्मस्त जीवनचरितोंमें जो धैर्यके अत्यंत महत्त्वपूर्ण उदाहरण मिलते हैं उनमेंसे कुछको हम कुम्हारोंके इतिहासमें पाते हैं । इनमेंसे हम तीन समयमें विचित्र विदेशी उदाहरण लेते हैं जो फ्रांसनिवासी घरनर्ड पैलिस्सी, जर्मनीनिवासी फ्रेडरिक वूटघर और इंग्लैंडनिवासी जोजिआ वैंजघुटके जीवनचरितोंमें मिलते हैं ।

यद्यपि अधिकांश प्राचीन जातियाँ चिकनी मिट्टीके साधारण बरतन बना-नेकी कला जानती थीं, परन्तु मिट्टीके बरतनोंपर ओप या घमकदारलेप चढ़ाना बहुत कमको मान्य था । इटलीके प्राचीन निवासी इस प्रकारके लेपदार अथवा लकड़ार बरतन बनानेकी कलासे परिचित थे और उनके बरतनोंके नमून अब भी प्राचीन-युद्धार्थ-संग्रहोंमें मिलते हैं । परन्तु इस कलाको लोग वाचमें भूल गये थे; इसका उद्धार अभी थोड़े ही वर्षोंमें हुआ है । प्राचीन वालोंमें इटलीके बरतन बहुत शोभामें आते थे; यही तब कि सन् १८५३ में आगस्तसके समयमें एक बरतनका मध्य दर्जाके बराबर तालकर मोना दना पड़ता था । मूर्ख लोगोंको यह कला मान्य थी और वे सैजी-रिया हाथमें इस बरतन बनाया करते थे । जब सन् १९१५ ईस्वीम पिमावालों ने मंगारिका ले लिया तब वे लूटकी और चीजोंके साथ मूर्ख लोगोंके बनायेहुए बरतन भी ले गये और उन्होंने इन बरतनोंको पिमा नगर ( इटली देश ) में प्राचीन गिरजामें लगा दिया, जहाँ वे बहुतक लगे हैं । दो शताब्दियों के पश्चात् इटलीमें इन बरतनोंकी नवछवरके लेपदार बरतन बनाने लग ।



## धैर्यकी महिमा ।

संसारमें अपना दिवाना हूँ हमें लगा । उसने पहले भीमकर्षाकी और धारा की । यहाँ उसकी वाम मिल गया । यह कभी कभी समय निवाला भूमिको मापनेका काम भी सीखा करता था । फिर यह उत्तरकी तरफ चला गया और वहाँ जगह जा-जाकर रहा ।

पैलिमी इस प्रकार दृढ़ शर्प गक भाग भाग फिरता रहा । इसके बाद उसने अपना पियाह कर लिया, घूमना बंद कर दिया और सिटीज नामक नगरमें रहकर दीधोपर घिघराई और भूमिकी माप करनेका काम करने लगा । उसके तीन बच्चे हुए, जिनके पालन पोषणका भार उसपर आपदा और इसके साथ ही उसका गर्भ बहुत बढ़ गया । जति भर काम करनेवा भी उसकी आमदनी उसकी जरूरतमें बहुत कम होती थी । अतएव उसको अपनी दृढ़ता सेभालना जरूरी हो गया । उसने कुछ और अच्छा काम करनेका विचार लिया और इसलिये उसने सिटीके बरतनोंपर घिघ्र बनाने और स्टेप पढ़ानेके कामपर ध्यान दिया । परन्तु यह इस कामकी विलग्न न जानता था, क्योंकि उसने इसमें पहले किसीको सिटीके बरतन पढ़ाने हुए न देखा था । अतएव उसको सब कुछ अपने आप ही सीखना पड़ा । उसका पोट्टी सफाई न था परन्तु वह सफलताकी आशासे परिपूर्ण था और सीखनेका इच्छुक था । उसमें निस्सीम धैर्य और अनंत संतोष था ।

इसका कनका एक सुन्दर बटोरको देखकर—कदाचित्त यह लूकाका हो बनाया हुआ होगा—पैलिमीन बरतनोंपर स्टेप चढ़ानेकी नई कलापर ध्यान पाल विचार करना शुरू किया । उस बटोरेकी दृढ़ता कभी कुछ बात था कि उसमें किसी सामान्य मस्तिष्कवाले मनुष्यपर कुछ असर न होता। बल्कि स्वयं पैलिमीपर भी किसी साधारण समयमें उसका कुछ असर न पड़ता। अतः यह धटना उस समय हुई जब वह कोई दूसरा धंधा करनेका विचार कर रहा था। अतएव उसका मन उस बरतनकी नकल करनेकी इच्छा नष्ट हो उठी । उस बटोरका दृढ़त्व उसका जीवनमें गलबली मध्य गह और उसका ऊपर जो लप था उसका विषयमें जाननेका उस रोग हो गया । यदि वह अविवाहित होता, तो इस कलाकी रोज़ामें इटलीको जाना परन्तु वह अपनी स्त्री और पक्षीक कारण बंधुआ बन रहा था और उन्हीं छोड़कर कहीं न जा सकता था, अतएव वह रोज़ामें



चरितारमें अपना दिवाना हुँदमे लगा । उसने पहले गीतबनीकी और धारा की । यहाँ उसकी वाम मिल गया । यह वाली वाली समय निवालेन भूमिची माफनेवा वाम भी सीधा करना था । फिर यह उत्तरकी तरफ चला गया और कई जगह जा-जाकर रहा ।

पहिली इस प्रकार दस वर्ष तक भाग भाग फिरता रहा । इसके बाद उसने अपना पिछाट कर लिया, दूसरा बंद कर दिया और गैलरीज सामक जगहमें रहकर दीवारपर चित्रकारी और भूमिची माफ करनेका काम करने लगा । उसके तीन बंधे हुए, जिनके पावन पोषणका भार उसपर आपदा और इसके साथ ही उसका गर्भ बहुत बढ़ गया । दाहि. भर वाम करनेवा भी उसकी आसानी उसकी जरूरतमें बहुत कम होती थी । अतएव उसकी अपनी दसा बेभालना जरूरी हो गया । उसने कुछ और अच्छा काम करनेका विचार किया और इसलिए उसने मिट्टीके घरतनोंपर चित्र बनाने और स्टे चटानेका कामपर ध्यान दिया । परन्तु वह इस कामकी विलग्न न जानता था, क्योंकि उसने इसमें पहले किसीको मिट्टीके घरतन पकाने हुए न देखा था । अतएव उसका सब कुछ अपने आप ही सीखना पड़ा । उसका कोई सहायक न था परन्तु यह सफलताकी आशामें परिपूर्ण था और सीखनेका इरादा था । उसमें निम्नोक्त धैर्य और अनंत मनोप था ।

इसका यत्नाएव सब सुन्दर कठोरको देखकर—कदाचित्त वह लड़ाका ही बनाया हुआ होगा—पहिलीसेन घरतनोंपर लप चढ़ानकी नई कलापर पहल पहल विचार करना शुरू किया । उस कठोरको देखता कभी मुक्त बात या कि इसमें किया सामान्य भावनिककाल मनुष्यपर कुछ असर न होता था कि अन्य पहिलीपर जा किसी साधारण समयमें उसका कुछ असर न पड़ता । परन्तु यह घटना उस समय हुई जब वह कोई दूसरा धंधा करनेका विचार कर रहा था । अतएव उसके मनमें उस घरतनका नकल बनानकी इच्छा बहुत उठी । उस कठोरका देखनमें उसके जीवनमें बदलवाली मध्य गृह और उसके रूप का लप या उसके विषयमें जाननका उस रोग लागया । याद वह अविचारित होता तो इस कलाकी योजनामें हटलीको जाता परन्तु वह अपनी स्त्री और बच्चोंका कारण सेबुजा बन रहा था और उन्हीं छोटकर कहीं न जा सकता था । अतएव वह उन्हींके पास रहा और



## स्वावलम्बन ।

मिट्टीके बरतन बनाने और उनपर लेप करनेकी विधि जाननेकी आगामें भटकने लगा ।

पहले तो उसने त्रिन चीजोंका लेप बना हुआ था उनको केवल भटकलमें जानना चाहा, और उनको जाननेकेलिए उसने तरह तरहकी परीक्षाओंका करना आरंभ किया। उसने उन सब चीजोंको—त्रिनसे उसकी समझमें लेप बन सकता था—चूरकरके एक मसाला तैयार किया। फिर वह साधारण मिट्टीके बरतन मोल लाया और उनके टुकड़े करके उसने उस चूरेको उनके ऊपर भुत्क दिया और एक भट्टी बनाकर उन टुकड़ोंको आगमें रख दिया। उसकी परीक्षायें निष्फल हुईं और बरतन, ईंधन, मसाला, समय और परिश्रम नष्ट होनेके सिवाय कुछ हाथ न आया। जियाँ ऐसी परीक्षाओंकी सृज ही पसंद नहीं करतीं। क्योंकि इनका स्पष्ट परिणाम यह होता है कि बर्तनकेलिए भोजन और बख भोल लेनेके साधन भी नष्ट हो जाते हैं। यद्यपि पैलिमीकी स्त्री और और बानोंमें अपने पतिकी आशका पालन करती थी, तो भी वह इस बातपर राजी न हुई कि मिट्टीके और बरतन खरीदे जायें। क्योंकि वह समझती थी कि ये तोड़नेके ही लिए खरीदे जाते हैं परन्तु उसे अपने पतिकी बात माननी पड़ी, क्योंकि पैलिमीने लेपका रहस्य जाननेका हठ मंजूर कर लिया था और वह उस कामको छोड़ना न चाहता था।

महिनों और वर्षोंतक पैलिमी निरंतर परीक्षाएं करता रहा। पहली भट्टीमें जब काम न चला, तब उसने एक और भट्टी घरके बाहर बनाई। उसमें उसने और अधिक लकड़ियों जलाईं, अधिक मसाला और बरतन नष्ट किये और अधिक समय गवाँया, त्रिममें वह और उसका कुटुम्ब गरमागरम चुगलमें कैम गया। उसने बादमें कहा था कि 'इसी तरह मैंने कष्टपूर्वक कई वर्षे व्यर्थ हो दिये, क्योंकि मुझे अपने मनोरथमें कुछ भी सफलता न हुई।' बीच बीचमें वह अपना पहला गन्था अधीन शाश्वत चित्र चित्रना, तमबारे बनाना और भूमिकी मार करनेका काम करता रहा परन्तु इन कामोंमें उसकी आमदनी बहुत थोड़ा होता था। निम्न इनके लक्ष्य कारण वह अपनी भट्टीमें काम न कर सका, परन्तु उसने मिट्टीके और बरतन मोल लिये और पहलेकी तरह उनका तान चार या टुकड़ किये और उनके ऊपर मसाला डालकर वह उन एक भट्टीपर रखकर लिए ले गया, जहाँपर

हमारे लिये हमारे पताये जाते थे और जो उसके घरमें हो सोममें भी अधिक दूर था । दुपट्टे पर जानेपर निकाले गये और वह उन्हें देखने गया; परन्तु उसे फिर आश्चर्यलला हुई । वस्तुविषय निकाला हो गया तो भी पराप्त न हुआ; उसने उसी जगह फिर गये गिरनेसे बचाने दूर करनेका संकल्प कर लिया ।

वह कुछ समय तक वह काम न कर सका । क्योंकि वह भूमि मापनेके कोई सरकारी कामके करनेपर मजदूर किया गया और इस कामकी उसे मजदूरी भी न्यून मिली । इस काममें लुट्टी पाते ही वह अपने पुराने काममें होने लगाताये साथ गया गया । उसने तीन दर्जन मिट्टीके बरतन और मोल लेकर मोटे, उनके दुकानोंपर उसने कई तरहके मगाले बनाकर दाले और फिर उन्हें पकानेके लिए वह एक पायकी भट्टीपर ले गया, जहाँ दीवार का काम मालाया जाता था । इस घर उसे कुछ कुछ आना हुई । दीवारकी भट्टीकी में जल गर्मीमें कुछ मगाले पिघल गये, परन्तु उनका स्फोट लेप न बना ।

वह हो कार्य तक और परीक्षाये करता रहा, परन्तु कोई संतोषप्रद परिणाम न हुआ । इसी बीचमें भूमि मापनेसे उसे जो मजदूरी मिली थी वह सब खर्च हो गई और वह पुन निर्धन हो गया । परन्तु उसने एक बार और भी जी-नोटकर योजना करनेका संकल्प कांठलया और इस बार उसने सब दृष्टि अधिक बतारन मोटे । उसने तीन सौम भी अधिक दुकाने दीवारकी भट्टीपर भजे दिये और बाह्यपर स्वयं उनका पकनका फल देखनेको गया । बार बार सब वह दृष्टता रहा और फिर भट्टी खोली गई । तीन सौ टिकरोममें बचल एक टिकरका मगाला पिघला और वह निकालकर ठंडा किया गया । रहा हीनपर मगाला कहा ही गया और वह स्वकट-स्वकट तथा चिकनाया दिखन लगा । उस टिकरपर स्वकट लेप चढ़ गया और पालवान उस अपूर्व सुन्दर आगया । इतना कष्ट उठानपर उस वह अवश्य ही सुन्दर मान्दम हुआ होगा । उस लक्ष्मि अपनी खास दिव्यानक लिए घर दादा और उसमें कहा है " मुझे मान्दम जाना है ।" अब मैं एक नया मनुष्य होगया । परन्तु उसका मतारय अभी स्वकट न हुआ था अभी तो वह उसमें सोया कर था । इस चष्टाम जिसका वह मान्दम समझता था, कुछ स्वकटता ही जानस्य उसने और भी पारजाय की और उसका फिर अनेक बार अवकलताय हुई ।



बनाये थे कई दिनोंतक आगमें पकनेसे अब बिलकुल निकम्मे होगये थे । वह अपना रुपया तो सब खर्च कर चुका था; परन्तु उधार ले सकता था । उसकी साख अब भी अच्छी थी । उसने एक मित्रसे अधिक ईंधन और बरतन मोल लेनेके लिए काफी रुपया उधार ले लिया और वह एक बार और परीक्षा करनेके लिए तैयार हो गया । बरतनोंपर नये मसालेका लेप चढ़ाकर उनको भट्टीमें रख दिया गया और आग फिर सुलगाई गई ।

यह परीक्षा अन्तिम थी और सब परीक्षाओंसे अधिक साहसपूर्ण थी । आग दहकने लगी; गर्मी प्रचंड हो गई; परन्तु फिर भी लेप न पिघला । ईंधन निघटने लगा । अब आग कैसे जले ? बागका हाता लकड़ियोंका बना था । ये लकड़ियाँ जल सकती थीं । इनको अवश्य बलिदान करदेना चाहिए; इधरकी दुनिया उधर हो जाय, परन्तु महती परीक्षाका काम न बिगड़ने पाय । ये लकड़ियाँ भी धीरेधीरेचकर तोड़ ली गईं और भट्टीमें झाँक दी गईं । वे भी जल गईं और कुछ न हुआ । लेप अभी तक न पिघला । यदि दस मिनट और गर्मी लगे तो शायद पिघल जाय । चाहे मर्यम्य जाता रहे, परन्तु ईंधन कहींम अवश्य लाना चाहिए । अब केवल घरका लकड़ीका अमबाय और आलमारियो बाँकी थी । घरमें चढ़चढ़ानेका शब्द सुनाई दिया । स्त्री और बच्चे, जो समझते थे कि पैलिसी पागल होगया है, चिल्लाते रह गये और पैलिसीन मंजोको तोड़-नाटकर भट्टीमें झाँक दिया । परन्तु फिर भी लेप न पिघला । अब आलमारियो बाँकी थी । घरमें लकड़ियोंका चढ़चढ़ानेका शब्द फिर सुनाई दिया । आलमारियो भी तोड़कर भट्टीमें झाँक दी गईं । उसकी स्त्री और बच्चे घरमें निकलकर भागे और पागलोंकी तरह नगरमें यह चिल्लाते हुए फिरन लगे कि " बच्चाग पैलिसी आवला हो गया है और ईंधनकेलिए घरका अमबाय तक नष्ट किया टालता है । "

पूरे एक महानिम पैलिसीन अपने शरीरपरम वृत्ता भी न उतारा था । वह मृग्यकर बिलकुल काटा हो गया था—परिधम, चिन्ता, निर्गन्धम और भृग्यम तग जाताया था । वह क्रुधा हो गया था और विनाशोन्मुख मानस होता था । परन्तु उसने अन्तम गति रहस्य जान लिया । क्योंकि गमाकी अन्तिम प्रचढ़ानेमें लेप पिघल गया । जब साधारण मरमेल धरे भट्टीक टट पड़जानेपर उसमेंम निकाल गये तब उनकेपर मरुद चमकदार लेप चढ़गया था ।

## स्वायत्तम्यम् ।

बुद्धा था, तो भी उसको उस कलामें निपुणता प्राप्त करनेके लिए परोक्षाओंमें जाठ वर्ष तक और फिर भारता पड़ा । उसने धीरे धीरे अनुसन्ध्या द्वारा इतल-कौशल्य और निश्चय कल प्राप्त करना सीख लिया और अतकलताओंमें बहुत कुछ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया । हर एक निष्कलतामें उसे एक नवीन शिक्षा मिलती थी । लेख भीर मिट्टीके स्वभाव और गुणोंके विषयमें और भटिपों बनाने और उनमें काम लेनेके सम्बन्धमें उसे हर बार एक न एक नई बात मालूम हो जाती थी ।

निदान सोलह वर्ष तक परिश्रम करनेके बाद पैलिर्मीके जीमें जी भाषा और उसने अपने भाषाको 'कुम्हार' या 'कुम्हार' कहा । इन सोलह वर्षोंमें वह उस कलाको सीखता रहा । उसे अपने भाषाको स्वयं शिक्षा देने पड़ी और विलग्न नये सिरेमें काम करना पड़ा । वह अब अपने बरतनोंके बंधनेके योग्य हो गया, जिनकी आमदनीमें वह अपने कुटुम्बका सुखपूर्वक निर्वाह करने लगा । परन्तु उसने जो कुछ किया था उसीपर वह संतोष करके न बैठ रहा । वह उच्चतमकी एक मंजीमें दृष्टीपर कदम रखने लगा । वह सदैव यहीमें बड़ी प्रवीणतापर लक्ष्य रखता था । उसने नमूने प्राप्त करनेके लिए प्रवृत्ति की नीतिोंका ऐसा सफलतापूर्वक अध्ययन किया कि एक प्रसिद्ध विद्वानने उसके विषयमें कहा है कि, " वह ऐसा बड़ा पदार्थशास्त्र था कि जिसे केवल प्रवृत्ति ही उत्पन्न कर सकना है । " प्रार्थान पदार्थ-संग्रहकर्ता अब उसके अलंकृत पात्रोंको दुष्प्राप्य रूप समझने हैं और वे इनमें मुख्यपर विद्यमान हैं कि वह कल्पित या प्रतीत होता है ।

परन्तु पैलिर्मीके कर्षोका अभी अन्त न आया था । उस समयमें शार्मिक विप्लवका बड़ा प्रेर था । जिस सप्रदायका राजा राजा था, याद काई मनुष्य उसी सप्रदायका न होता, जो उसको बल दिया जाता था । राजा आदमा इसी अग्रगण्य जातिन जन्म लिये जाते थे । पैलिर्मी प्राप्ता ।

(11) सम्प्रदायका या और यह अपने विचारोंको नयमान होने लगे करता था । अन्तर्गत उसको एकदमके लिए सरकारी कमिषारी उसके सम

रदनमें अब प्रसन्न बनेलक प नीन राजे विरत पर नमन शत्रुओंको बनाई हुई एक डी भी रखा था, जिसका त्याग एक कृत् या और 'परा' बाधन एक विप्लवकी बनी थी । वह देखे = । हयवमें विरकी '

घले जामे और उनके चरतन भौंटे जफनाचूर करदिने गये । उन लोगोंने उसके रागमें ही एक कैंधेर कारागारमें ले जाकर बंद करदिना और वे उसके फौसीनर बगाने जाने अथवा जलाने जानेकी घड़ीकी प्रतीक्षा करने लगे । उसको जला देनेका हुक्म जारी हो गया, परन्तु एक शक्तिशाली जमींदारने उसे बचा लिया—इस लिए नहीं कि उसे पैलिस्तीने विशेष प्रेम था, किन्तु इस लिए कि इंडोर्न नगरमें जो विनाश भवन बन रहा था उसका सेरदार उस हंगानेके लिए और कोरं गिल्फकार न मिल सकता था । इसी लिए वह मुक्त करदिना गया ।

अपने दो पुत्रोंको महापताने चरतन बनानेके कामके अतिरिक्त पैलिस्तीने अपने जीवनके अंतिम भागमें चरतन बनानेकी कलाके विषयमें कई पुस्तकें लिखकर इस लिए प्रकाशित कीं कि उनसे देशपातिवोंको शिक्षा मिले और वे उन युद्धियोंसे बच सकें जो उसने स्वयं की थीं । उसने इति-विद्या, गृह-निर्माण-विद्या और प्राकृतिक इतिहासपर भी पुस्तकें लिखीं । वह फलित ज्योतिष, बीजविद्या ( रसायन ), जादू इत्यादिका कट्टर प्रियोधी था । इस कारण उसके बहुतसे शत्रु पैदा हो गये, उसे धनधुत कहकर उसकी निंदा करने लगे और वह अपने धनके कारण फिर कैद करदिना गया । पचास बह अथ ०५ वर्षका बूढ़ा था, और अपना एक पैर कमलें लटका हुआ था, परन्तु उसका हृदय पहलेके समान ही चोर था । उसे सुनसुका भय दिखाया गया; परन्तु उसने अपना धर्म छोड़ना स्वीकार न किया । यह अपने धर्ममें बैठा ही रह रहा जैसा कि सेरकी गोबर्ने रहा था । फ्रांस देशके सम्राट् हेनरी तृतीय भी कैदगानेमें उसके पास इस लिए गये कि उसे धर्म बदलाने-पर राजी करें । सम्राट्ने कहा—“ भले खादनी, तुने मेरी नावाकी और मेरी अबनक ४५ वर्ष सेवा की है । खेद है कि मैं अपना हाठ नहीं छोड़ता है । हम तुसे अब तक क्षमा करते रहे हैं । अब मेरी प्रजा और अन्य लोग तुसे दयाते हैं, अब सब मैं मजबूर हूँ कि तुमे मेरे शत्रुओंके हाथमें छोड़ दूँ । यदि अब भी मैं अपना धर्म न बदलेंगा तो कल जोंता जला दिया जायगा । ” उस अवसर बड़े मनुष्यने उत्तर दिया,—“ राजर्, मैं ईश्वर ( धर्म ) के नामपर यात तक देनेको तैयार हूँ । आपने कई बार कहा है कि इनको मुआमर दया आती है; परन्तु अब मुझे आनर दया आती है, क्योंकि आपने ये शब्द कहे हैं कि

## स्वाध्यायम् ।

पुका था, तो भी उसको उस कदामें निपुणता प्राप्त करनेके लिए परीक्षाओंमें आठ वर्ष तक और मिर मारना पड़ा । उसने धीरे धीरे अनुभवद्वारा हस्त-कौशल्य और निश्चय कल प्राप्त करवा सोंव लिया और अमरकलताओंमें बहुत कुछ व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करलिया । हर एक निपुणतामें उसे एक नवीन शिक्षा मिलती थी । छेप और मिट्टीके स्वभाव और गुणोंके विषयमें और भदिर्यो बनाने और उनसे काम लेनेके सम्बन्धमें उसे हर बार एक न एक नई बात मान्य हो जाती थी ।

निदान सोलह वर्ष तक परिश्रम करनेके बाद पैलिर्मीके ज़िम्मे जी आया और उसने अपने आपको 'कुम्हार' या 'कुम्हार' कहा । इन सोलह वर्षोंमें वह उस कलाको सीखता रहा । उसे अपने आपको स्वयं शिक्षा देने की पड़ी और बिलकुल नये सिरेमें काम करना पड़ा । वह अब अपने बरतनोंके देखनेके योग्य हो गया, जिनकी आमदनीमें वह अपने कुटुम्बका मुख्यपूरक निषाँड करने लगा । परन्तु उसने जो कुछ किया था उसीपर वह संतोष करके न बैठ रहा । वह उच्चतमकी एक सीढ़ीमें दृढ़तर कदम रखने लगा । वह सदैव बर्षोंमें बड़ी प्रवीणतापर लक्ष्य रखता था । उसने नेमूने प्राप्त करनेके लिए प्रकृति की सीखोंका ऐसी सफलतापूर्वक अध्ययन किया कि एक प्रसिद्ध विद्वानने उसके विषयमें कहा है कि, " वह ऐसा बड़ा पदार्थशास्त्रज्ञ था कि जिसे केवल प्रकृति ही उत्पन्न करसकती है । " प्रार्थान पदार्थ-संग्रहकर्ता अब उसके अलंकृत पात्रोंको दुर्भाग्य राज समझते हैं और वे इतने मुख्यपर विद्यते हैं कि वह कल्पित सा प्रतीत होता है ८ ।

परन्तु पैलिर्मीके कष्टोंका अभी अन्त न आया था । उस समयमें धार्मिक विद्रोहका बड़ा जोर था । जिस मंत्रदायका राजा होता था, यदि कोई मनुष्य उसी मंत्रदायका न होता, तो उसको मृद दिया जाता था । हजारों आदमी इसी अपराधमें जीवित जला दिये जाते थे । पैलिर्मी प्रोटेस्टेंट ( Protestant ) मंत्रदायका था और वह अपने विचारोंको नयनीय होकर प्रकट करता था । अनन्व उसको पकड़नेके लिए सरकारी कमेंचारी उसके घरमें

आकर उसका घर घेरेलका आचार्य नामों के साथ, जब उसमें पैलिर्मीका द्वार एक छातीसी रहता थी, जिसका नाम एक कुट था और जिसका

छायाकी बनी थी । वह १८१० ) दशवर्षों के लिए ।

घले आने और उसके घरतन भोंड़े चकनाचूर करदिने गये । उन लोगोंने उमे सानने ही एक धौंधरे कागजारमें से जाकर बंद करदिया और वे उसके फौसीपर चढ़ाये जाने अथवा उल्लाये जानेकी धड़ीकी प्रतीक्षा करने लगे । उसको जला देनेका हुक्म जारी हो गया, परन्तु एक शक्तिशाली जमींदारने उमे बचा लिया—इस लिए नहीं कि उमे पैलिस्तीने निरोध में था, किन्तु इस लिए कि ईकोहन नगरमें जो बिनाल भवन बन रहा था उसका लेनदार फनो हगानेके लिए और कोई गित्तरकर न मिल सकता था । इसी लिए वह मुक्त करदिया गया ।

अपने दो पुत्रोंकी सहायतासे घरतन बनानेके कामके अनिश्चित पैलिस्तीने अपने जीवनके अंतिम भागमें घरतन बनानेकी कलाके नियममें बड़े पुत्रके लिखकर इस लिए प्रयत्नित की कि उनमें देशप्राप्तिपोंकी शिक्षा मिले और वे उन गुटियोंमें रुच सकें जो उसने स्वयं की थीं । उसने कृषि-विद्या, गृह-निर्माण-विद्या और प्राकृतिक इतिहासपर भी पुत्रोंके लियीं । यह कलित ज्योतिष, बौद्धिमा ( समाधन ), जादू इत्यादिवा घर निरोधी था । इस कारण उसके बहुतसे पशु पैदा हो गये, उसे धर्मपुत्र बदबुर उसकी निंदा करने लगे और यह अपने धर्मके कारण सिर बंद करदिया गया । पचासि बह अब ७५ वर्षका बूढ़ा था, और अपना एक पैर बगमें टाँका चुका था, परन्तु उसका हृदय परछेके मनाज हो बीत था । उसे सुशुषा भय दिखाना गया; परन्तु उसने अपना धर्म छोड़ना स्वीकार न किया । यह अपने धर्ममें पैसा ही हृद रहा जैसा कि सेपरी श्रोत्रमें रहा था । प्रोम देसके सत्ताह देवकी कृपा भी पैदावानेमें उसके पास इस लिए गये कि उसे धर्म बदलाने-पर राजी करें । सत्ताहने कहा—“ भले आदमी, हरे मेरी मायाकी और मेरी अकण्ड ७५ वर्ष सेदा की है । सेद है कि नू अपना हठ नहीं छोड़ना है । हम तुमों अह तक क्षमा करने रहे हैं । अह मेरी प्रजा और अन्य लोग तुमों दयाते हैं, अब यह मैं मजबूर हूँ कि तुमों मेरे पशुओंके हाथमें छोड़ दूँ । यदि अब भी नू अपना धर्म न बदलेगा तो बल जीना जला दिया जायगा । ” उस अजेय दूरे अनुपमने उका दिया,—“ राजन्, मैं ईश्वर (धर्म) के मानस जान तक हाँकी मैया हूँ । अकण्ड बहू बात कहा है कि हमको मुक्त कर दया जाता है, परन्तु अब मुझ अपरा दया क्षणी है, क्योंकि आदमे से तान्द कह है कि



स्थायलभ्यन ।

‘मैं मजबूर हूँ।’ राजन्, ये राजाकेसे शब्द नहीं हैं। इन शब्दोंका प्रयोग आप और वे लोग—जो आपको मजबूर करते हैं—मेरे ऊपर नहीं कर सकते। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मरते किम लाह है।” पैलिमीने वास्तवमें कुछ काल पीछे अपने धर्मके लिए प्राण म्योऊवर करदिये, परन्तु वह जलाया नहीं गया। यह लगभग एक वर्ष तक कैद रहकर कैदखानेमें ही मर गया। वहींपर एक ऐसे जीवनका सातिपूर्वक भोग हो गया जो अपने अथक परिश्रम, अगाधारण सहनशीलता, अटल मत्तशीलता और अन्य दुष्प्राप्य मनुष्योंके लिए विख्यात था।

चीनीके भारतमेंका भाविष्कारकनौ जान फ्रेडरिक वूटघरका जीवन पैलिसीके जीवनमें सत्यथा मिश्र है । वूटघरका जन्म सन् १८८५ ईस्वीमें हुआ था । वह १२ वर्षकी अवस्थामें बर्लिन नगरमें एक अन्तारके यहाँ मौकुर हो गया था । उसे शुरूमें ही रमायन-विद्याका बड़ा शौक था । कई वर्ष बाद वूटघरने यह मन्तर उद्घृत की कि मैंने रमायनका अनुमंथान करलिया और उसके द्वारा मोक्ष भी बना लिया है । उसने किसी न किसी बालाकीसे अपने मालिकके सामने ऐसा ही करदिसाया और उसके मालिक और अन्य दूतोंको विवश हो गया कि वूटघरने सचमुच तौषेका मोक्ष बना दिया ।

हिर तो यह स्वर चारों ओर फैल गई और उस अद्भुत सोना बनानेवालेको देखनेके लिए दूकानके सामने लोगोंके छोटे छट लगने लगे । राजाने भी उसको देखने और उससे बातें करनेकी इच्छा प्रकट की । जब प्रतिष्ठाके सम्राट् कैथ-रिक प्रथमको सोनेका वह टुकड़ा दिखलाया गया, जो बूटपरका बनाया हुआ कहा जाता था, तब उसका बेहद सोना पानकी पसी चाट लगी—क्योंकि उसके चेहरे उस समय स्वर्णकी चर्चा जमरत थी—कि उसने बूटपरको बेचकर स्वर्ण परक मार जित्त कुछ मात्रा में सोना बनानेका व्यवसाय कर लिया । परन्तु बूट-परका इस प्रकार काटका जा गई और उसका यह जो लज्ज हुआ कि सोना बूटपर १३५० इमान्ज वर इसका धाभाका ताकतके वैश्वना नाम १८६१

[illegible]



## स्वायलम्बन ।

निकल भागा और तीन दिन तक यात्रा करके आस्ट्रिया देसमें पहुँच गया और वहाँ उसने अपने आपको सुरक्षित समझा । परन्तु आगस्टसके भौकर उमका पीडा किये चले आये । वे उसका पता लगाने लगाने वहाँ आगये जहाँ वह टहरा था और उसे पकड़कर फिर दैसजन ले गये । इस बार उसकी मृत्यु चीकनी की गई और कुछ दिन बाद वह एक किलेमें भेज दिया गया । उगमे कहा गया कि राजाका स्वभावाना दिलकुल खाली पड़ा है और तेरे मुवर्जमसे सोनाके मिश्रदियोका पिठला घेतन चुकाना है । राजा उसके पास स्वयं आया और कुछ होकर बोला, “अगर तू इसी वक्त सोना बनाना शुरू न करेगा, तो चौसीपर छटका दिया जायगा !”

वहाँ हो गये, वृत्परने सोना न बनाया, परन्तु उसको चौसीकी सजा न दी गई । उसको तो तौबेका सोना बनानेसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण अनुसंधान करना था, अर्थात् वह चीनी मिट्टीके बर्तन बनानेकेलिष् पैरा हुआ था । चीनके कुछ बरतन पुर्नगालवाले चीनसे लाये थे, जो तौलमें अपनेसे भी अधिक सोनेमें ढिंके थे । वृत्परका ध्यान इस ओर बाटाने आकर्षित किया, जो स्वयं बड़ा विद्वान् और शिषिदू था । उसने वृत्परसे—जिसे अब भी चौसीका दर लगा था—कहा—“यदि तুম सोना नहीं बना सकते तो कुछ भीर ही करो, चीनी बनाओ ।”

वृत्परने उसकी बात मान ली और वह दिन रात परीक्षा करनेमें लग गया । बहुत दिन हो गये, परन्तु उसका सब परिश्रम निष्फल हुआ । निदान परिया बनानेकेलिष् उसके पास कुछ लाल मिट्टी आई, जिससे वह दीक मार्गपर लग गया । उसने देखा कि वह मिट्टी अग्निमें मृत्यु बनानेसे चौंस बन जाती है, अपना आकार नहीं बदलती और रंगके विचार भीर सब बर्तनोंमें चीनीके समान हो जाती है । उसने अकस्मात् लालचीनीका अनु-सरान करलिया, और वह उसक बरतन बनाकर उन्हें पानाक बहुतकर बचने लगा ।

सन्तु वृत्पर जानता है कि अपना चीनीका रंग पाना सोना पादिष्, इसलिए उसने इस से बहुतकरा बनानेका उपाय किया कि जो सोना मुक्त हो । इसका उपाय कुछ वर्षोंकेलिये सोना बनानेका उपाय निम्नलिखित रूप में किया गया है—इससे सोना बनानेका उपाय जान ली ।

उन दिनों यूरोपियन देशोंमें लम्बे लम्बे बनावटी बालोंकी टोपी पहननेका रिवाज था । सन् १७०७ ईस्वीमें एक बार बूटघरकी अपनी बालदार टोपी अधिक भारी मालूम हुई । उसने नौकरसे इसका कारण पूछा । उसने उत्तर दिया कि, “ इसका कारण यह पौष्टर है, जो बालोंमें लगाया जाता रहा है ।” यह पौष्टर एक प्रकारकी सकेद मिट्टीसे बनाया जाता था । बूटघरने दीर्घ ही अपना विचार दीड़ाया । उसने सोचा कि कदाचिद् यह वही मिट्टी हो जिसकी मैं रोजमें हूँ । बूटघरने उसकी परीक्षा की और उसका अनुमान ठीक उतरा ।

इस बातका मालूम हो जाना पारस पत्थरके मालूम होनेसे भी कहीं जियादा महत्वका था । क्योंकि इससे हमारे बहुत काम निकलते हैं । अक्टूबर सन् १७०७ में उसने चीनीका पहला बरतन बनाकर सम्राट् आगस्टसको दिखाया । ये उसे देख कर बड़े खुश हुए और बूटघरकी उसके इस आविष्कारकी श्रुतिके लिए सहायता देनेकी तैयार हो गये । बूटघरने एक चतुर कारीगरको बुलाकर चीनीके बरतन बड़ी सफलतापूर्वक बनाना शुरू कर दिये । उसने अब रसायनको सर्वथा छोड़कर चीनीके बरतन बनानेका काम उठा लिया और अपने कारखानेके द्वार पर यह लिखवा दिया:—“ सर्व शक्तिमान् ईश्वरने, जो महान् विधाता है, एक सुवर्गकार ( सुनार ) को कुम्भकार ( बुन्दार ) बना दिया है ।”

अब भी बूटघरकी बड़ी चौकसी की जाती थी, क्योंकि यह भय था कि कदायद यह अपने रहस्यको दूसरोंके सामने प्रकाश कर दे, अथवा स्वयं चम्पत हो जाय । बड़े कारखाने और भट्टियों जो उसके लिए बनाई गई थीं, उन पर रात दिन सौजोंका पहरा रहता था और छः उच्चपदाधिकारी उसकी देखभालके लिए उत्तरदाता बना दिये गये थे ।

बूटघरकी और परीक्षाओंमें—जो बड़े भट्टियोंमें की गई थीं—बड़ी सफलता प्राप्त हुई और जो चीनीके बरतन उसने बनाये उनका बहुत मूल्य मिलने लगा । अतएव अब एक राजकीय कारखाना स्थापित करनेका प्रयत्न किया गया । इस बातकी सम्राट्ने घोषणा कर दी और कारखानेमें काम करनेके लिए आत्मा बलवायें । बूटघर कारखानेका प्रबंधकर्ता बनाया गया । परन्तु उमर उमर सम्राट्ने अपने दो कर्मचारी नियत कर दिये और इस तरह बूट-

## स्वायत्तमन्त्र ।

पर कैरी ही बना रहा । जब मैग्निन नगरमें कारखाना बनाया जाने लगा, तब बूटघरको दैगदगमे पहुँतक सैनिक ले गये । काम समाप्त होने पर भी वह रातको तालेमें बंद कर दिया जाता था । इन सब बातोंमे उमे बड़ा दुःख हुआ और उसने सम्राट्की वंशज कम कर देनेके विषयमें अनेक बार पत्र लिखे । कुछ पत्र तो बंदे ही कण्ठागतनक थे । एक पत्रमें उसने लिखा कि मैं पहले आधिकारिकोंकी अपेक्षा अधिक कर दिवाऊँगा, यदि मुझे स्वतंत्रता दे दी जाय ।

इन विवेदनोंके लिए राजा बहारा बन गया । वह शपथ स्वीकार करने और अनुग्रह करनेको तैयार था; परन्तु स्वतंत्रता देनेवाला न था । वह बूटघरको अपना दाय समझता था । इस तरह वह कैरी कुछ समयतक तो काम करता रहा, परन्तु साल दो सालके बाद मुक्त पड़ गया । वह संभारले और अपने आपमे तंग आगया और उसने शराब पीनेकी आदत डाल ली । उसकी देखादेखी सभी कारीगर शराब पीने लग गये; उदाहरणका ऐसा प्रमाण होगा है ! अब तो उन लोगोंमें ऐसे लड़ाई हागदे होने लगे कि बटुआ कौत्र आकर उनको शासन करती थी । कुछ समय बाद ये सब, तिनकी मेल्या तीन मीमे भी अजिक थी, अन्यत्र कैदखानेमें कैद कर दिये गये ।

विद्वान बूटघर बहुत पीड़ित हो गया और सन् १७१३ में बरी मादूम होने लगा कि वह अब मरा और भय मरा । राजाको भय हुआ कि कहीं सोनेकी गिद्धिया हाथमे न जाती रहे, अतएव उसने बूटघरको पारेके साथ गादीमें हवा खानेकी भाजा दी और जब वह कुछ अच्छा हुआ, तो उसको कभी कभी दैगदग जानेकी भी भाजा दी जाने लगी । अक्टूबर सन् १७१४ ईस्वीमें सम्राटने उसे एक पत्र लिखा जिसमें उसने बूटघरको मागूलै स्वतंत्रता दत्तका वायदा किया परन्तु अब क्या होता था । काम करने रहनेसे, शराब पानसे 'बमरा गागा' बनने और कठिन कैद भुगतनेसे बूटघरका शरीर और मज्जक 'नरुडमा' हो गया था । कुछ वर्ष मंग कल्लक बाद सन् १७१९ ईस्वीमें स पून उस सब कष्टोंसे मुक्त कर दिया । वैद्यकीक मतान उपकारक साथ गया बनने 'किया गया और 'महा गया' दु मागूलै मागू हुई' कारीक बन ल'क इज'जत आग'ज'ज'क अजान हो इतना बुद्धि हुई कि अधिकतर पुरोहितन पेश'ज'ज' जो 'मंग'ज'ज'क अनुसरण किया । जोयम गा अब इस कारीगीरीक

काम ही क्या है । यहाँ पर हमके द्वारा बड़ी भारी आप होनी है और यहाँके चीनीके दानन निःसंदेह गर्वपूर्ण होने हैं ।

भारतीय बुद्धका जो जिया पैल्लुडका जीवन पैल्लुड का क्या दृष्टिकोण हम विचार और अधिक करता है । यह अपने दुगमें दृष्टि हुआ था । अन्तर्द्वारा दानादिसे मध्य तक हुंमोंद बन्नाहीनापके विषयमें पूराके दृष्टिमें उपाय धर्मोके द्रव्योंमें विद्यता हुआ था । उस समय भी हुंमोंदमें दृष्टिमें दृष्टिमें बुद्धता थे, परन्तु ये दृष्टि ही नष्ट कराने बनाने थे । अन्तर्द्वारा यहाँ अपने दानन विदेशीमें आते थे । अन्तर्द्वारा हुंमोंदमें चीनीके ऐसे दानन न बने थे जिनको यहाँ चीनमें भी दृष्टिमें उपाय दान न बने मक । अन्तर्द्वारा जो दृष्टि समयतक ' सफेद दानन ' बनते रहे हैं वे सफेद न थे किन्तु भूने रंग रहे थे । जब पैल्लुड सन् १७१० ईस्वीमें पैल्लु हुआ उस समय दानन बनानेकी यह दृष्टि थी । परन्तु जब यह १४ वर्ष बाद मरा तब यह दृष्टि बिलकुल पलट गई । उसने अपने उपाय चातुर्ध्व और प्रतिभासे इस व्यवस्थाकी उद्गमना ही और मजबूत कर दी ।

कभी कभी सामान्य धर्मोंमें भी ऐसे मनुष्य उत्पन्न हो जाते हैं, जो अपने उपायकील चरित्रके द्वारा केवल काम करनेवालोंको परिधमकी आदत दालनेकी व्यापहारिक शिक्षा ही नहीं देते, किन्तु धर्म और धर्मका उदाहरण दिखलानेकर सब साधारणकी मध्य तरहकी व्यवहारकता पर दृष्टि गहरा प्रभाव डालते हैं और जातीय चरित्रगत्यमें अच्छा योग देते हैं । पैल्लुड ऐसा ही मनुष्य था । उसके तेरह भाई थे और उनमें यह सबसे छोटा था । उसके पितामह और पिता दोनों बुद्धका या बुद्धा थे । यह बालक ही था, तब उसके पिता तीन सौ रुपये छोड़कर मर गये । यह प्रानील पादशालामें लिखना पढ़ना सीखता था; परन्तु पिताकी सन्तु होने पर उसका पादशाला जाना बंद करा दिया गया और यह अपने बड़े भाईको दानन बनानेके काममें सहायता देने लगा । उस समय उसकी अवस्था ग्यारह वर्षकी थी । कुछ दिनों बाद उसको ऐसी प्रचण्ड पीतला निकली कि उसके अन्तरसे उसे जीवन-पथ दृष्टि होता रहा, क्योंकि उसमें उसके दाहिने धुटनेमें एक ऐसी बीमारी हो गई जो अन्तर उद भाता था और वह बहुत बड़े पीठे पैरके काटे जाने पर एक महादाघने कुछ वर्ष हुए कहा था कि, " जो लोग उसे हो

## स्वावलम्ब्यता ।

गया था वही बहुत करके उसकी निपुणताका कारण हुआ । उसने सोचा कि मैं वैसा बलवान् और उद्योगी कारीगर नहीं बन सकता जिसके सब हाथ पैर दुरुस्त हों और जो उनका प्रयोग मलीमती जानता हो; परन्तु क्या मैं और किसी तरहका हो सकता हूँ, और क्या मैं अधिक गौरववाद् हो सकता हूँ ? इस विचारने उसके मस्तकमें खलबली मचा दी और वह अपने शिष्यके नियमों और गुप्त रहस्योंपर विचार करने लगा । ”

जब बैजबुद्ध अपने माईके साथ काम सीख चुका, तब वह एक और कारीगरके साथ साझी हो गया और चाकूके दमने, सन्दूक और धरमें काम आनेवाली अन्य चीजोंका छोटासा व्यापार करने लगा । फिर उसने एक और आदर्शको साक्षात् कर लिया और मामूली चीजें बनाता रहा; परन्तु अचानक उसने सन् १७५२ ईस्वीमें अपना नया व्यापार न शुरू किया, तबतक उसने बहुत कम उन्नति की । अपने व्यापारमें उसने बहुत परिश्रम किया । वह नई नई चीजें बनाने लगा और धीरे धीरे उसने अपने व्यापारकी अच्छी उन्नति कर ली । उसने अपना ध्यान विशेषकर ऐसे वस्तुओंके बनानेमें लगाया जैसे उस समय स्टीफर्सरमें बना करते थे; साथ ही उसने उनकी लूबसूती रंग, चमक और मजबूतीमें और भी उन्नति करनी चाही । इस कामको अच्छी तरह समझनेपर उसने रसायनशास्त्रका अध्ययन आरम्भ किया और तरह तरहकी धातुओंको गलाकर प्रवाही करनेके लिए जिस पदार्थका उपयोग होता है उसपर, वस्तुओंपर काच जैसी चमक लानेके लिए जो तरह तरहकी ओषधियाँ जानी है उसपर, और तरह तरहकी मिट्टियोंपर सैकड़ों परीक्षणों करके देखी । उसकी निरीक्षण-शक्ति बढ़ी तेज थी । उसके हाथ एक मिट्टीका वर्तन लग गया । उसमें मिट्टीका नामक चकमककी मिट्टी मिली हुई थी । उसपर प्रयोग करके देखनेसे मालूम हुआ कि यह मिट्टी लज्जे वाले रंगकी होती है, परन्तु तेज आँच लगानेसे सफेद हो जाती है । इस बात पर उसने सब विचार किया । उसे विश्वास हो गया कि वह नए वस्तुओं में जिस मात्र मिट्टीको काममें लाता हूँ यदि उसमें चकमक मिलाने का तो उससे बरतन सफेद हो जायेंगे और यदि इस मिट्टीके बरतन उड़कर उन पर काच मगार्वा चमकदार जिला बसाई जाये तो वे बरतन कम-हारकलाक बहुत बढ़िया बनने लग जायेंगे ।

यैजबुडको कुछ समयतक अपनी भट्टियोंके कारण पड़ा कष्ट उठाना पड़ा; परन्तु यह कष्ट पैलिसीके कष्टसे बहुत कम था । तो भी उसने अपनी कठिनाइयोंका उसी तरह सामना किया जिस तरह पैलिसीने किया था । बारम्बार परीक्षाएँ करनेमें और अटल—अडिग धैर्य रखनेमें उसने भी हद कर दी । उसने पहले-पहल रसोईके कामके लिए चीनीके दस्तन बनानेकी जो चेष्टाएँ कीं उनमें लगातार असफलताएँ हुईं । महीनोंका परिश्रम बहुधा एक दिनमें नष्ट हो जाता था । बहुतसी परीक्षाएँ करनेके बाद, जिनसे उसका बहुत समय, श्रमा और परिश्रम नष्ट हुआ, उसे जैसी चाहिए वैसी जिलाफा पता लगा । दस्तन बनानेके गिल्पको उद्यत बनानेकी उसे पुन हो गई और इससे उसने एक क्षणभर भी उपेक्षा न की । जब यह कठिनाइयोंको दूर करके धनी हो गया, तब भी अपने गिल्लमें निपुणता प्राप्त करता रहा । उसके उदाहरणका प्रभाव सर्वत्र फैल गया, उस जिले भरके लोगोंमें कार्य-कुशलताका संघार हो गया, और अंगरेजी व्यवसायकी एक बड़ी शाखा दृढ़ नीय पर स्थापित हो गई । उसका हृदय सदैव सर्वोच्च उत्तमता पर रहता था और वह कहा करता था कि, “ किसी चीजको सराब बनानेसे यही अच्छा है कि वह टिलकुल ही न बनाई जाय । ”

बहुतसे धन्य और शक्तिशाली अनुमोने यैजबुडको हार्दिक सहायता दी । सबे दिलमें काम करनेवालेको सहायकों और उत्साहदाताओंकी कमी नहीं रहती । उसने सारी शाल्टंडके लिए रसोईके दस्तन बनाये जो इंग्लैंडमें बने हुए सबसे पहले राजकीय दस्तन थे और इससे यह ‘ राजकीय प्रभुभकार ’ बना दिया गया । उसे चीनीके बड़िया दस्तन बकल करनेके लिए दिये गये और इन काममें उसको प्रतापवीर्य सकलता हुई । उसने बड़े बड़े प्राचीन और सुन्दर दस्तनोकी बकल ज्योरी ल्यों उतार दी ।

यैजबुडने समापनशास्त्र पुरातत्त्व और विप्रविद्यामें भी सहायता ली । उसने सर्वप्रथम ईन नामक विप्रवारको ईदु निबाला और उसकी विप्रकुशलताका उपयोग अपने दस्तनोंके काममें किया । इसीकी सहायतासे उसने सर्वप्रथम उत्तम दस्तन बनाये और उनके द्वारा प्राचीन विप्रविद्याको सर्वमाधारगर्भमें फैलाया । उसने साधुधर्मीसे प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करके यह पता लगा लिया कि इर्राविषाके प्राचीनविद्यासी मित्र और चीनीके दस्तनों पर और उन्हींके



## स्वायत्तम्यन ।

समान अन्य चीजों पर किस तरह विपरीत किया करते थे । इस कलाको बीचमें लोग विलकुल मूल गये थे । उसने विज्ञानमें भी अनेक आविष्कार करके ख्याति प्राप्त की । वह सार्वजनिक हितका बड़ा पोरक था । उसके प्रयत्नमें ही एक नहर बनवाई गई । उसने अपने जिलेमें एक अच्छी सड़क बनाई । उसने और भी बहुतसे काम किये जिनमें उसकी ख्याति बहुत ही बढ़ गई । उसके स्थापित किये हुए कारखाने देशमेंके लिए घूरपके प्रायः सारे देशोंके प्रसिद्ध प्रसिद्ध मनुष्य आने लगे ।

वैजयुडके परिधमका यह फल हुआ कि बरतन बनानेकी कला जो बहुत ही गिरी हुई देशोंमें थी इंग्लैंडकी एक प्रधान कला हो गई । वैजयुडके समयके पहले वहाँ दूसरे देशोंसे बरतन आते थे, परन्तु अब इसके विपरीत वहाँके बने हुए बरतन अन्य देशोंको जाने हैं और बहुत जियादा महसूल देकर भी वे विदेशोंमें धड़ाधड़ विकने हैं । वैजयुडके समयमें ही कई हजार आदमी बरतन बनानेका काम करने लगे थे । इस काममें यद्यपि उस समय बहुत उन्नति हो गई थी, तो भी वैजयुडका मत था कि यह शिल्प अभी बाल्यावस्थामें ही है और जो उन्नति मैंने की है वह बहुत थोड़ी है । कारीगरोंके निरन्तर परिधमसे, उनकी बुद्धिमत्तासे और इस देशकी प्राकृतिक सुगमनाओं तथा राजकीय महत्त्वसे इस शिल्पकी बहुत कुछ उन्नति हो सकती है । इस समयमें अब तक जो उन्नति हो चुकी है वह इस मतका समर्थन करती है । सन् १८५२ ईस्वीमें इंग्लैंडमें जो बरतन वहाँके निवासियोंके कामके लिए बनाये गये उनके अनिश्चित लगभग एक करोड़ बरतन विदेशोंको गये ! केवल यही बात नहीं है कि इंग्लैंडमें बरतन बहुत बनने लगे हैं और उनका मूल्य बहुत होता है किन्तु उस देशके पुम्हारोंकी दशा भी सुधर गई है । जिस जिलेमें वैजयुडने अपना काम शुरू किया था वहाँके लोग अर्धसभ्य थे । वे निर्धन और अशिक्षित थे और उनकी संख्या कम थी । अब वैजयुडका काम बम गया तब वहाँ पहले जितनी आबादी थी उससे तिगुने मनुष्योंके लिए अच्छी सड़क्रीका काम निकल आया; और उनकी संसारिक उन्नतिके साथ साथ मानसिक तथा नैतिक उन्नति भी अच्छी होने लगी ।

ऐसे पुरुषोंको सभ्य संसारके ' औद्योगिक वीर ' कहनेमें कुछ अशुक्ति न होगी । इनके लिए यह विशेषण सर्वथा उचित है । प्रायत्तियों और कठिना-



## स्वायलम्बन ।

हैं। यह बात सदासे चली आई है कि मनुष्य इदुतापूर्वक अच्छे काम करनेमें ही अपना कल्याण कर सकता है, और वे ही लोग सबसे अधिक सफलता प्राप्त करते हैं जो सबसे अधिक श्रु करने रहते हैं और सचे हृदयमें काम करनेमें सबसे बड़े रहते हैं।

लोग कहा करते हैं कि तकदीर अंधी होती है; परन्तु सच तो यों है कि तकदीर इतनी अंधी नहीं है जितने मनुष्य। जिन लोगोंको जीवनका कुछ अनुभव है वे जानते हैं कि जिस तरह हवा और लहरें अच्छे मछाहोंके पक्षमें रहती हैं उसी तरह तकदीर भी उद्यमी मनुष्योंका साथ देती है। बड़ेसे बड़े कामोंमें भी समझदारी, ध्यानशीलता, उद्योग, आग्रह इत्यादि साधारण गुण भी परम उपयोगी सिद्ध हुए हैं। बहुतसे कामोंमें प्रतिभाकी आवश्यकता भी नहीं होती, परन्तु बड़े बड़े प्रतिभाशाली मनुष्य भी इन साधारण गुणोंमें काम लेना पुरा नहीं समझते। कुछ मनुष्य तो यह भी नहीं मानते कि प्रतिभा कोई विलक्षण वस्तु है। एक प्रसिद्ध अभ्यासका कथन है कि उद्योग करनेकी शक्ति ही प्रतिभा है।

प्रसिद्ध वैज्ञानिक म्यूटरकी बुद्धि बड़ी विलक्षण थी, तो भी जब लोगोंने उनसे पूछा कि—“आपने अपने अमृत अनुसंधान किम लाइ किये ?” तो उन्होंने अग्रतामें उत्तर दिया, “उन पर सदैव विचार करनेमें।” एक दूसरे अवसर पर उन्होंने अपने अध्ययनकी रीति इस प्रकार वर्णन की थी—“मैं अपने विषयोंके भिन्नतर अपने सम्मुख रखता हूँ और उस समयकी प्रतीक्षा करता हूँ जबतक मैं परलेखी अपनी समझी हुई बातोंको धीरे धीरे पूर्णतया न समझ जाऊँ।” अन्य मनुष्योंके समान पुनर्बीषकर लगे रहनेमें ही म्यूटर-मने ऐसा यत्न प्राप्त किया। जब वे विधाम करना चाहते थे, तब एक विषयको छोड़कर दूसरा विषय पढ़ने लगा जाने थे। अपने एक मित्रमें उन्होंने कहा था कि “यदि मैंने समाजकी कोई सेवा की है, तो वह केवल परिश्रम और धैर्यपूर्वक विचारके द्वारा की है।”

कल्प उत्पत्ति और आग्रहके द्वारा हम बहुत कार्य हुए हैं कि बहुतसे नामी-नामी मनुष्योंका हम बात में मदद हो गया है कि प्रतिभा कोई विशेष-धर्म नहीं है। प्रसिद्ध विद्वान् वायलेटस्का मत है कि प्रतिभाशाली मनुष्योंका आग्रह और मनुष्योंमें बहुत ही मोटा अंतर होता है। बेटारिया कहा करता

या कि सभी मनुष्य कवि और यक्ष हो सकते हैं । रेनोल्ड्सका कथन है कि प्रत्येक मनुष्य चित्रकार और मूर्तिकार हो सकता है । प्रसिद्ध दार्शनिक लौक, हैल्वीटिअस, और डिडीरोटका मत है कि सब मनुष्योंमें प्रतिभाशाली बननेकी एक ही शक्ति मौजूद है और यदि कुछ मनुष्य अपनी मानसिक शक्तियोंको काममें लाकर किसी कार्यको कर सकते हैं तो कोई कारण नहीं है कि और लोग जैसे ही सुयोग और साधन पाकर उस कार्यको न कर सकें । यद्यपि यह सच है कि परिधमसे अनुत्त अद्भुत कार्य हुए हैं और घटे घटे प्रतिभाशाली मनुष्योंने अद्भुत परिधम किया है, तो भी यह स्पष्ट है कि मौलिक मानसिक शक्ति और उत्तम भावोंके बिना चाहे कितना ही परिधम कितनी ही उचित रीतिसे क्यों न किया जाय, तो भी तुलसीदास, चराहमिहिर, चाग्भट अथवा तानसेनका प्रादुर्भाव नहीं हो सकता ।

संसारके महापुरुषोंने बहुत ही कहा है कि हमने प्रतिभासे नहीं, किन्तु निरन्तर परिधम करनेसे सफलता प्राप्त की है । महात्माओंके जीवनचरित देखनेसे भी हमको यही माहृतम होता है कि सुप्रसिद्ध आविष्कारकर्ताओं, शिल्पकारों, विचारवानों, और सब प्रकारके कार्यकर्ताओंको बहुत करके अद्भुत परिधम करने और काममें निरन्तर लगे रहनेसे ही सफलता प्राप्त हुई है । इन महात्माओंन सब चीजोंको यहीँतक कि समयको भी सुवर्णके समान बहु-मूल्य समझा था । एवं महात्माका यथन है कि सफलता प्राप्त करनेका गुप्त रहस्य अपन हाथपर अधिकार प्राप्त करना है । और यह अधिकार निरन्तर लगा रहने पर आययन करनेसे प्राप्त होता है । यही कारण है कि जिन लोकोन सम्मान सम्पत्ति, अग्रिम हलप्रति मचाइ है उनमें प्रतिभावा माया । यद्यपि इन लोकोन प्रतिभा का सब हतनी न थी जितनी कि उनमें सम्मान सम्पत्ति काययता और अद्भुत परिधम करनेका गुण था । उनमें व्याभाविक गुणों का न हो य जितनी कि वे अपन काममें महानतव साध निरन्तर लगा रहने से । वे विचारान अपन बुद्धिमान परन्त लापरवाह लहवक विषयन का वही जो कि 'अपमान' उसमें अद्भुत परिधम करनेका गुण नहीं है । जो लोकोन गहम एवं दारिद्र्यमान मनुष्याय, जो उस कर काम नहीं कर सकत, जो लोकोन और महत्तामी मनुष्य भी दासी ल जान है । इत्यादि भाषाका एक वही लोकोन है जिसका आशय यह है कि जो धीर धीर परन्तु निरन्तर चला करते

## स्थापलम्पन ।

है वे बहुत आगे बढ़ जाते हैं । संस्कृतमें भी ऐसा ही कथन है—“शतैर्ग्रन्थाः शनैः पन्थाः ।”

अतएव मनुष्यका एक बड़ा उद्देश यह होना चाहिए कि वह काम करनेका अभ्यास करे । जब यह गुण आज्ञापणा तब जीवनके सारे काम सुगम मान्य होने लगेंगे । कामका निरन्तर अभ्यास करना चाहिए । सुगमता परिधममे आजाती है । इसके बिना अत्यंत साधारण काम भी नहीं हो सकता । इससे सब कठिनाइयाँ दूर हो जाती हैं । महारानी विक्टोरियाके प्रधान सचिव सर रायर्ट पीछे बाल्यकालमें अभ्यास करने और बार बार प्रयास करनेसे ही राज्यके राज बन गये थे । जब वे बालक थे, तब उनके पिता उन्हें मेजके पास खड़ा करके पहलेमें लीवारी किये बिना ही व्याख्यान देनेका अभ्यास कराया करते थे और ह्मवारके दिन गिरजेमें मुने हुए धर्मोपदेशको बारबार दुहरानेका अभ्यास कराने थे । पहले तो इस कार्यमें थोड़ी ही उद्यति हुई; परन्तु पीछे निरन्तर लगे रहनेमें चित्तकी एकाग्रताका अभ्यास प्रबल हो गया और वे धर्मोपदेशको लगभग शब्दशः सुना जाने लगे । आगे प्रौढ अवस्थामें उनकी स्मरणशक्ति ऐसी अन्दी हो गई थी कि वे राज-सभामें अपने प्रतिद्वन्द्वियोंकी सब युक्तियोंका बिना भूले प्रमश उत्तर देने चले जाते थे । यह उम्मी शिक्षाका फल था जो उन्होंने अपने पितामें बचपनमें पाई थी ।

परन्तु याद रखनी कि सर्वोत्तम उद्यति धीरे धीरे होती है । बड़ बड़ फल तुरन्त ही प्राप्त नहीं हो जाते । हमारी उद्यति यदि धीरे धीरे हो रही हो तो हमें उसपर सन्तोष करना चाहिए । एक महाशयका कथन है कि जो लोग प्रतीक्षा करना जानते हैं, वे सफलता के गुप्त रहस्यको समझते हैं । काटनेके बदले हमको खाना पड़ता है और इस बीचमें हमको आशा साथ हुए लम्बी प्रतीक्षा करना पड़ती है । अच्छे फल बहुत देरमें पड़ते हैं । एक कहावत है त्रिभुक्तिका आशय यह है कि धीरजक साथ बात करनेमें आगे समय जीतनेमें शङ्कनकी प्रतियोगिता रेशम बन जाता है ।

जो मनुष्य ऐसा स्वर्णमें काम करने है व धीरजक साथ प्रतीक्षा कर सकने है । काम करनेके लिए धिक्की प्रसन्नताकी बहुत आवश्यकता है । इसमें बड़ी सहनशीलता आनी है । काम करनेके लिए त्रिभुक्तिका आवश्यकता होती है । यह सुखकर प्रसन्नता और परिधमसे ही प्राप्त होती है । इन दोनों









## स्वायलम्बन ।

हुआ भी यही; मैंने तीन वर्षों फिर सब चित्र बना लिये । " धैर्यका यह कैसा सुन्दर उदाहरण है ।

सर आइज़क न्यूटनके पास एक छोटासा प्यारा कुत्ता था, जिसको वह ' डाइमण्ड ' कह कर पुकारा करता था । एक दिन रातके समय न्यूटन किसी कामके लिए बाहर चला गया और मेजपर मोमबत्ती जलती हुई छोड़ गया । कुत्ता कमरेमें अकेला रह गया । कुछ समय बाद उसके जीमें न मान्द्रम क्या आया कि वह एकएक पेसे जोरसे मेज पर हाथा कि जलती हुई बत्ती लौट गई और सब कागज जिनको लिखकर तैयार करनेमें न्यूटनको कई वर्ष लगे थे, जलकर भस्म हो गये । न्यूटन जब लौटकर आया और उसने यह सब हाल देखा तब उसे बड़ा ही दुःख हुआ, परन्तु उसने प्रथम आकर कुत्तेको मारा नहीं । उसने धैर्यसे काम दिया और वह केवल इतना ही कह कर रह गया कि " डाइमण्ड, मेरी जो हानि हुई है उसकी तुझको क्या खबर है ? " कहा जाना है कि इन कागजोंके जल जानेसे न्यूटनको इतना दुःख हुआ कि उसके स्वास्थ्यको बहुत हानि पहुँची और उसकी बुद्धि टिकाने न रही ।

प्रसिद्ध इतिहास मिस्टर कार्लाइलको भी एक ऐसी ही घटनाका सामना करना पड़ा था । कार्लाइलने प्रान्साके राजपरिवर्तन पर एक पुस्तक लिखी थी । उसने उस पुस्तकके लिखे हुए कागज अपने एक मित्रको पढ़नेके लिए दे दिये । उसके मित्रने ये इस्तखिल्ल कागज अपने कमरेके कोने पर पड़े हुए छोड़ दिये और वह उनकी खबर भूल गया । कई मताह हो जानेपर कार्लाइलने अपने कागज मँगो, क्योंकि छोलेखानेवाले जख्दी मचा रहे थे । अब उन कागजोंकी तलाश होने लगी और वह मान्द्रम हुआ कि मित्रकी बीकरानी, वह समझकर कि कोने पर रही कागज पड़े हैं, उनको भाग जलानेके काममें लगे भाई । मित्रने यही उत्तर कार्लाइलको मुना दिया । खयाल करो कि वह मुझकर कार्लाइलकी क्या दुःखा हुई होगी । परन्तु अब यह कह ही क्या सकता था, मित्राय हमके कि श्री मरकर काम करने बैठ जाना और पुस्तकको फिर लिखना । उसने दिया भी पढ़ा ही । उसको ये सब बातें विचार और वाक्य, जिनको वह मुला मुला या फिर सोचने पड़े । अब हमने अपनी बात पुस्तक लिखी थी तब आनेजल्द लिखी थी, परन्तु हमका वह हमरी बात लिखना बंद ही बहका कार्य था । परन्तु उसने पेशका इन्धन न खान दिया और पुस्तक फिर लिख हाई ।

यह पढ़े आविष्कारकर्ताओंके जीवनचरितोंमें धैर्यके उदाहरण सूच मिलते हैं । रेलके अंजनका आविष्कारकर्ता स्ट्रीफिन्सन जब पुष्पा मनुष्योंके सामने व्याख्यान देता था तब कहता था,—“जैसा मैंने किया है वैसा ही तुम भी करो—धैर्यसे काम लो ।” स्टीफिन्सन अंजन बनानेमें स्वयं पंद्रह वर्ष तक लगा रहा था । घाट अपने भाषकके अंजन बनानेमें तीस वर्ष तक परिश्रम करता रहा था । और लोगोंमें भी धैर्यके अनेक उदाहरण मिलते हैं । प्राचीन दिवालियोंके पढ़ने और समझनेमें अनेक मनुष्योंने ऐसा घोर और अघात परिश्रम किया है कि सुनकर दौनोंगले उंगली दपानी पड़ती है । उसके द्वारा संसारको उन भाषाओंका ज्ञान प्राप्त हो गया है जिनको लोग कभीके शूल चुके थे और जिनके पढ़े जानेकी कोई आशा न थी । पंडित भगवान-रत्नाल इन्द्रजीने इस विषयमें बड़ा परिश्रम किया था ।

साहित्यसेवियोंके चरितोंमें भी धैर्यशक्तिके अनेक उदाहरण मिलते हैं । याम् प्रतापचन्द्र रायने ‘महाभारत’ का एक अंगरेजी अनुवाद प्रकाशित करनेका निश्चय किया था । यह निश्चय इतना दृढ़ था कि बाध साधन न होने पर भी सफल हुए बिना न रहा । उन्होंने इस काममें अपने एक मित्र केसरीमोहन गांगुलीसे सहायता ली थी । ये महाकाव्य संस्कृत अच्छी जानते थे । पुस्तक थोड़ी थोड़ी करके सी भागोंमें प्रकाशित की गई । परन्तु जब इस पुस्तकका ८४ वाँ भाग निकला तब प्रतापचन्द्रका देहान्त हो गया । उन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशित करनेमें बारह वर्षतक कठिन परिश्रम किया और आर्थिक सहायता पानेके लिए भारतवर्षमें घातों और भ्रमण किया । उनको केवल भारतवासियोंने ही नहीं किन्तु यूरोप और अमेरिकावालोंने भी धन दिया । प्रतापचन्द्र स्वयं धनाढ्य न थे; परन्तु उन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशनमें अपनी गौंटका भी रुपया लगा दिया । सन् १८८५ ई० में उनको भ्रमण करनेसे पुष्पार आगया और इसीने उनके जीवनका अंत कर दिया । मृत्युदाय्या पर पड़े हुए भी वे अपनी पुस्तकके विषयमें सोचते थे । क्या अब पुस्तकके संपूर्ण होनेकी कुछ आशा है ? क्या मेरे जीवनका एक मात्र कार्य अधूरा ही रह जायगा ? यहाँ चिन्ता मरते दस तक उनको मानसिक कष्ट देती रही । उनकी प्रयत्न इच्छा थी कि पुस्तक संपूर्ण हो जाय । उन्होंने अपना प्रियपत्नी मुद्रीवालाको बुलाया और कहा,—“पुस्तकको संपूर्ण करना ।

## स्वाध्यासम्भन ।

मेरे धाड़में धन मत लगाता; क्योंकि उस धनकी पुस्तकके प्रकाशनमें जरूरत पड़ेगी। जहाँ तक हो सके तुम साधारण जीवन व्यतीत करना और पुस्तकके लिए रचना बचाना।” उनकी मृत्युके पश्चात् सुंदरीशालाने अपने पतिकी आज्ञाका पालन करना अपना धर्म समझा; केसरी मोहन गांगुलीने भी सहायता देनेसे मुँह न मोड़ा और एक वर्षमें पुस्तकका शेषांश प्रकाशित हो गया।

प्राथम्यविद्यामहर्षि धीयुत नगेन्द्रनाथ यसुका जीवन बड़ा ही शिक्षाप्रद है। उक्त महाराजने बंगभाषामें विश्वकोश नामका एक बृहत् ग्रंथ लिखनेका संकल्प किया और उसे उन्होंने बड़ी योग्यतापूर्वक २८ वर्ष तक निरन्तर कठिन परिश्रम करके संपूर्ण किया। यह पुस्तक २२ खिल्लोंमें संपूर्ण हुई है और सब तरहके ज्ञानका भंडार है। जिस समय नगेन्द्र बाबूने यह काम आरंभ किया था उस समय उनकी अवस्था केवल इक्कीस वर्षकी थी। इतने बड़े कामके लिए उनके पास धन न था। उनका वेतन बहुत थोड़ा था जिससे वे अपने कुटुम्बका निर्वाह करते थे। पहले विश्वकोशकी ग्राहकमंख्या बहुत ही थोड़ी थी, परंतु जब इसके कुछ अंक निकले तब लोग नगेन्द्र बाबूकी योग्यता पर मुग्ध होकर उनके ग्रंथको आश्रय देने लगे। सरकारने भी उनको सहायता करनेके लिए कुछ प्रतिभौ मोल लेना स्वीकार कर लिया। बीचमें नगेन्द्र बाबू कई बार बीमार हो गये और कई आपत्तिविरतिषोंमें पँस गये; परन्तु उन्होंने अपने प्रिय कार्यको त्याग देनेका विचार अपने जीमें कभी न आने दिया। एक बार वे बहुत ही बीमार हो गये थे। उस समय उनकी दत्ता बड़ी ही निराशाजनक थी। उस समय उन्होंने कहा था—“मुझे इस बातका बड़ा शोक है कि मैं विश्वकोशको संपूर्ण किये बिना जाता हूँ।” परन्तु अन्तमें यह कोश संपूर्ण हो गया। कइत है कि इसके लिखनमें नगेन्द्र बाबूको रचनाय हज़ार पुस्तक इन्वरी पड़ी और जगजग दृष्टान्त प्रयास करना पड़ा। यह ग्रंथ बंग-साहित्यमें एक रत्न है और सरासर एक सच्ची विज्ञानज्ञ इसकी मुलकत्तय प्रशंसा की है। नगेन्द्र बाबूय रण्य और भी दो महाजगजग विश्व-कोशके लिखनका प्रयत्न किया म जल्द उन्हें सफलता न हुई। यह ही काम करन पर उनके जीवन समाप्त हो गया। यह नगेन्द्र बाबूका ही प्रिय था उन्होंने अपने समय तक सरासरी २५ वर्ष तक अमूर्तिशायी



### क्यापादुषण ।

पितृदोषिणाने भी उनकी एक पुस्तकको पढ़ा और उनकी बड़ी प्रशंसा की।  
गुरुदेव-आदिश्रियमें उनकी पुस्तकोंका भव्य श्रवण सम्मान है।

[illegible]

और पुनर्वासी द्वारा सर्वसाधारणों समान-सुखारवा दीज अर्थात् करना, वातावरणों का समान कर विचारों की दृष्टि सुधारों की सेवा करना, वास्तविक जीवन भी हिन्दू धर्म के सुख और विचारों की सामान्यता करना, विशेषज्ञों की बातें सुन कर भी अपने ही पर ध्यान न करना, ये सब कामें मानवी धर्म-दानिका एक बहुत ही उत्साहजनक उदाहरण हमारे सामने रखती हैं ।

समुद्राण्ड द्वापरा जीवन भी धर्म-दानिका विधियां उदाहरण हैं । हमारे पास एक मजदूर है । दृष्टि होने पर भी ये अपने ही मजदूरों की एक छोटी साक्षात्कार में बैठते हैं । बड़े मजदूरों परनेमें कृषि भी हमलियां करने लखती रहती कर ही, परन्तु छोटे मजदूरों समुद्राण्ड परनेमें बड़ा मजदूर और उप-द्रव काममें तथा काममें जी सुखमें प्रविष्ट था । जब वह बाट पर्याप्त हुआ तब एक स्थानमें मजदूरों करने लगा और बंद भागों से बसाने लगा । इसके बाद जब वह दस पर्याप्त हुआ तब एक मोपीके बहो काम मानने पर दिया दिया गया । इस काममें उसने बहुत दुःख भोगे । इन दुःखोंके बारे में वह बहुत भाग जानेवा और हीन बन जानेवा विचार विचार करता था । वह ज्यों ज्यों बड़ा होता गया, ज्यों ज्यों अहम् होता गया । धर्मोंके पत्नीकी रहनेमें वह आगार रहता था । जब वह बड़ा हुआ तब उसे मोपीकी बाट पड़ गई । मोपीका काम भीन चुकनेके पहले ही, जब उसकी अदरवा १७ पर्याप्त थी, वह एकदिन इस ह्वादेमें भाग गया कि मैं किसी सद्गुरुके लक्षण पर नौरवी कर दूंगा । परन्तु रातको वह एक गेरा में सो रहा और मर्दी का गया जिससे फिर अपने काम पर लौट आया ।

इसके बाद वह एक गाँवमें आ रहा और वहाँ जूते सीनेवा धंधा करने लगा । इसी समय बीमेष्टमें उसने पेटेवालीमें हनाम पाया; इस काममें वह बड़ा निपुण हो गया था । एक बार उसने एक मनुष्यको महामूली मालकी घोषणा में जानेम कहायता ही । इस कार्यमें उसकी जानतक गई होती । वह इस कामम जाँचक साथ इस लिए जारी हो गया था कि एक तो उसको उस कामका और वह और दूसरे उसकी आमदनी काफ़ी न थी इसलिए उस समय की लोचन पर था । जब वह इस समय नगरम वह बान मजदूर का काम कर रहा कि वह अपनी मजदूरी काफ़ी न जानता था । मनुष्य समुद्राण्ड में एक बार उसकी और बान मजदूर जातकम - नगरकी नेपार ह । वह मज



और इसके बाद यह एक दूकान पर जूता बनानेके काम पर नौकर रह गया । दूध भरते भरते पचा, सायद अब इसी कारण यह गम्भीर हो गया और उपद्रव करनेकी प्रवृत्ति उसकी कम हो गई । कुछ समय पीछे धर्मोपदेशक डाक्टर ग्रेटम हार्जके उपदेशोंने दूध पर बड़ा गहरा प्रभाव डाला और इसी समय उसके पिताका देहान्त हो गया । इस कारण तो यह और भी अधिक गम्भीर हो गया । उसका स्वभाव बिलकुल बदल गया । उसने फिरसे पढ़ना लिखना शुरू कर दिया, क्योंकि यह हम बीघमें प्रायः सय ही कुछ भूल चुका था । उसके एक मित्रके कथनानुसार उसके हस्ताक्षर इस समय ऐसे मादूम होते थे जैसे किसी मकड़ीने अपनी रोंगोंको स्पाहीमें हुषाकर और पागज पर फिरकर एक अजीब तरहके चिह्न बना दिये हों । दृष्टने अपनी उस समयकी रियतिके सम्बन्धमें पीछे पीछे कहा था कि "जितना ही मैं पढ़ता था उतना ही मुझे अपनी अनभिज्ञताका अनुभव होता था; और मुझे अपनी अनभिज्ञताका जितना पता लगता था, उतनी ही मैं उसे दूर करनेकी चेष्टा करता था । अक्सर मिलने पर मैं अपने हर एक क्षणको कुछ न कुछ पढ़नेमें लगाता था । मुझको अपना निर्याह करनेके लिए मजदूरी करनी पड़ती थी इस कारण पढ़नेके लिए बहुत थोड़ा समय मिलता था, और इसीसे मैं अपनी इस समयकी कमीको पूरा करनेके लिए भोजन करनेके समय अपने सामने बिनाय ग्लोबलर रख लेता था और कमसे कम ५-६ घण्टे पढ़ लेता था ।" एक नामक लेखके निबंधोंको पढ़कर उसका ध्यान आत्मज्ञानकी ओर आकर्षित हुआ । उसने कहा कि "इन निबंधोंको पढ़कर मेरी मानसिक निद्रा दूर गई और मैंने अपने नीच विचारोंको छोड़ देनेका पड़ा संकल्प कर लिया ।"

इसके बाद दृष्टने थोड़ेसे वर्षोंमें निजी व्यवसाय शुरू कर दिया । उस समय उसकी धार्यतापताको देखकर एक पड़ोसी धर्मीशहोंने उसको कर्ज दे दिया और इसमें उसका व्यापार अच्छा चलने लगा । इस उद्योगमें ऐसी सफलता हुई कि उसने अब ही वर्षों पश्चात् सारा कर्ज चुका दिया । परन्तु इसका ध्यान उसने बतों बनस बान पकड़ लिया । कर्जदार बननेमें उसे हतनी





अखंड उद्योग और आप्रह ।

प्रेम पहले पहल एक कविताके रूपमें प्रकट हुआ। उसकी कविताके कुछ अंश जो अवतार मौजूद हैं वह सूचित करते हैं कि आत्माके अभूतिक और आविनाशी होनेके सम्बंधमें उसके विचार कविता करने करते ही उत्पन्न हुए थे। उसके पढ़नेका स्थान रसोईघर था। यहाँ यह बूल्हा मुलगानेकी घोंकनी पर फिताय रखकर पड़ा करता था। वध्वे शोर मचाते रहते थे और धूमधाम करते रहते थे। तो भी वह अपने लेख लिखा करता था। उस समय पेन नामक लेकरक ‘ बुद्धिवा युग ’ नामक पुस्तक प्रकाशित हुई थी। लोग उसे बढ़े चावसे पढ़ते थे। इस पुस्तकके प्रतिपादनमें दृष्ट्ने एक छोटीसी पुस्तक लिखी, जो प्रकाशित हो गई। यह अक्षर कहा करता था कि पेन की पुस्तकने ही सुरी लेकर बनाया। फिर तो कुछ समय पश्चात् ही उसने जल्दी जल्दी कई छोटी छोटी पुस्तकें लिख दाहीं। कुछ वर्षोंके बाद उसने ‘ अनुष्यवा आत्मा भ्रम है और अभूर्त है’ हर नामकी प्रसिद्द पुस्तक लिखी, प्रकाशित कराई और उसको ₹२० रु॰ में बेच दिया। इस स्वप्नों के वह उस समय बहुत जिज्ञासा समझता था। इस पुस्तककी कई आहृतियाँ हो चुकी हैं और अब भी उसकी कद्र की जाती है। बहुतमे युवा लेकर अपनी दोस्तीगी सफलता पर भी पूरा जाने हैं; अभिमान घरने लगभगे हैं; परन्तु दुर्बली बिभिन्न भी घमंड न हुआ। प्रसिद्द लेकर-कोंमें गणना हो जानेपर भी वह अपने घरके द्वारके आगेची गल्लीको हाड़ा करता था और अपने निष्ठाओं को जाड़ेके लिए बीदाहे खानेमें स्वाद्यता दिया करता था। उसने कुछ समय तक तो साहित्यको, अपना रोज़गार भी न बनाया था; वह मोपीबा काम करवे ह। ईमानदारीमें उदारनिर्वास करता था और उसमें जो समय व्यथा था उस प्राप्त दिवसनम लगाता था। परन्तु पीछे वह अपना स्तरा ही समय सर्ति व्यवसाय लगाने लगा। उसने एक भासिकवरप्रभा समादान बनाने का फैला किया। पुस्तकिका प्रकाशनका वह प्रयत्न करने लगा। उसने बहुत सी बातें अपने जीवन के बारे में लिखीं। उनमें से कुछ नीचे दी गई हैं:

(1) मैं जिस प्रकार जी रहा हूँ

(2) मैं किस प्रकार जी रहा हूँ

(3) मैं किस प्रकार जी रहा हूँ







## साधनोंकी सहायता और सुयोग ।

तक युरोपवालोंको अमेरिकाका पता भी न था । इस सफरमें कोलम्बसको एक माससे भी अधिक समय लगा । जब उसको जहाजमें चलने चलते बहुत दिन बीत गये, तब उसके साथी निराश हो गये । उन्होंने समझ लिया कि अब स्थल कभी न आवेगा । उन्होंने निश्चय कर लिया कि अब कोलम्बसको समुद्रमें ढकेल कर घरको लौट चलना चाहिए । उसी समय कोलम्बसने समुद्रमें तैरती हुई घास देखी । उसको देखकर वह समझ गया कि भूमि निकट है और तब उसने अपने साथियोंको भी समझाया । ये मान गये और शान्त हो गये । कोई चीज इतनी छोटी नहीं है जिसकी तरफसे हम उपेक्षा कर सकें और कोई बात ऐसी तुच्छ नहीं है जिसका अभिप्राय मालूम होने पर वह किसी काममें उपयोगी न हो सके ।

छोटी छोटी चीजोंका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना, व्यवसाय, शिल्प, विज्ञान और जीवनके हर काममें सफलता प्राप्त करनेका गुप्त रहस्य है । मानव जातिका ज्ञान छोटी छोटी बातोंसे ही मिलकर बना है । ये बातें पीढ़ियोंकी परम्परासे इकट्ठी हो रही हैं । ज्ञान और अनुभवके छोटे छोटे अंदा यड़ी सावधानीसे इकट्ठे किये गये हैं और अब उनका बहुत बड़ा समूह हो गया है । यद्यपि ऐसी बहुतसी छोटी छोटी बातें पहले पहल महत्वहीन ही मालूम हुई होंगी तो भी पीछेसे ये बड़ी उपयोगी सिद्ध हुई होंगी और तदनुसार उन्हें ज्ञानभंडारमें उचित स्थान मिल गया होगा । बहुतसे विचार जो व्यवहारसे सर्वथा अतीत जैसे मालूम होते थे स्वतंत्रता व्यवहारोपयोगी फलोंके नीजरूप सिद्ध हुए हैं । जब फ्रैंक्लिनने मालूम किया कि आसमानी बिजली और घर्षणसे उत्पन्न हुई विपुल एक ही वस्तु है तब लोग उनका उपहास करते थे और कहते थे कि “ये दोनों बिजलियाँ एक जातिकी हैं, यदि यह ज्ञान भी लिया तो इसमें क्या लाभ हुआ ? यह किम्वदन्तीकी बात है ?” इसका उत्तर फ्रैंक्लिन यह देने में कि “एक छोटासा बालक किस कामका होता है ? तुम्हें सोचना चाहिए कि यही बालक एक दिन बालकोंका पार हो सकता है ।” जब गैल्वनीने यह मालूम किया कि बैटरीकी टोंगके साथ भिन्न भिन्न धातुओंका रस्य देनेमें उसकी टोंग बीच आती है, तब यह किम्वदन्ती ख्याल था कि यह बात जा देनेमें तुच्छ ज्ञान पड़ता था, ऐसे महत्वपूर्ण परिणाम पर ।” परन्तु इसका तब द्वारा समाचार भेजनेके उपायका

## क्यायलम्बन ।

विनाय हुआ, जिसके द्वारा संसारके समस्त देशोंके समाचार हमारे ऊपर आया करते हैं । हमी प्रकार पृथ्वीके नीचे दूधे हुए पशु और वन-स्थानियोंके छोटे छोटे भंशोंका बुद्धिमानीसे अभिप्राय समझनेसे भूलाविनाय विनाय हुआ और स्नान सोनेका काम निकला, जिसमें अब करोड़ों स्नान कराया जाता है और करोड़ों मनुष्योंके लिए उपयोगी धंधा निकल आया है ।

पानीकी सैद्धि उष्णता लगानेसे भातका पैदा होना सामान्य बात है । हम अपने हमोर्ध्वरोमें यह बात प्रतिदिन देखते हैं । हमी भातको जब हम पचुराईमें बनाई हुई कलोंके द्वारा काममें लाते हैं, तब इसकी शक्ति करोड़ों पौर्ण्यी शक्तिके बराबर हो जाती है । यह अपने बलसे समुद्रकी लहरोंसे फटकारती है और बड़े बड़े मृदानोंका सामना करती है । शान्तिमें पानी निकालनेमें पेश और कारखानोंके चलानेमें तथा जहाज व रेलके हॉकरोंमें तिन मशीनोंका प्रयोग किया जाता है, वे भातकी ही शक्ति पर अवलम्बित हैं । पानी शक्ति जब पृथ्वीके भीतर काम करती है तब पर्वतोंमेंसे गायब निकलती है और मूकपर्वतोंके रूपमें पृथ्वीको कम्पातमान कर देती है जिससे संसारके इतिहासमें बड़े बड़े भारी परिवर्तन हो जाने हैं ।

कहा जाता है कि पहले परल मारुतिंग आफ, योरकशिरका ज्ञान भातकी शक्ति और भातर्निग हुआ था । यह जेटनके टवर ( बंदीगुह ) में कैद था । वहीं पर एक बड़ा भारी बरतन लून्ने पर बाड़ा हुआ था । उसमें पानी मौल रहा था । बरतनके मुँह पर कहा उहल लगा हुआ था । उसने कदापि देखा कि भातके जोरसे यह उहल उछल कर दूर जा पड़ा । हमने उसे भातकी शक्तिका ज्ञान हुआ और फिर हमने अपने इस अनुभवका कल कुछ पुस्तकमें प्रकाशित करा दिया, जिसकी महानकाली अनेक लोग भातकी शक्तिकी ओरसे आगे गये । इसके बाद मेदेरी, म्यूनेन आदिने भातकी क्षमतामें लोका कुछ अंश देवार दिया, जिसको यादने उहलनी दी । यादने बदला साग जीवम भातके अंशकी पूर्ति करनेमें ही लग्न दिया ।

मृपंजरी और मयोजीसे लाभ उठाना, और उन्को किसी कार्यके लिए निर्देशित करना कदापि नहीं कहा जाता । जो मनुष्य कोई न कोई कार्य विना-अनेक संशय कर लेते हैं, उन्को हममाने मृपंजरी सिध माने हैं, और यदि मृपंजरी वदलेसे मी-रुन मही रहते तो वे उन्को बुरा माने हैं । यह सब मयोजी

विज्ञानियों, अन्वेषकों, और प्रयोगियों ने नाम प्रयोगों में ही विज्ञान और विद्यार्थियों के मन में अधिक काम किया है। और यह प्रमाण भी दीव नहीं है कि जो सबसे अधिक प्रसिद्ध संस्था और आयोगों के रूप में उन्होंने विद्यार्थियों में शिक्षा पाई थी। प्रसिद्ध विद्यार्थी राजा विश्वनाथ के विद्या विद्यार्थियों के भी शिक्षा पाई गई है। आधुनिकता आधुनिकताओं की जननी है। आधुनिकता के कारण ही हमारे आधुनिक रूप हैं—मनुष्य के विवेक, विज्ञान और अन्य उद्योगों पर जोर देना गया। सबसे अधिक प्रसिद्ध पाठ-शास्त्र 'वैदिक' था। पाठशास्त्र है। संस्कृत और विज्ञानियों में ही यह मह-हत्त्व का विचार होता है। कुछ सर्वोत्तम विद्यार्थियों ने बहुत भरे भीतों में काम किया है। परन्तु बाद में हमें वि मनुष्य भीतों के द्वारा नहीं मिले अर्थात् अनुसंधान और धर्म के कारण विद्यार्थी बनता है। ऐसे विद्यार्थी के लिए अपने भी भीतों में हैं। एक विद्यार्थी के विद्या में कहा कि, "आप अपने रत साधन नहीं कि विविध विद्या में मिलते हैं।" उनमें उत्तर दिया, "महा-शय! मैं उन्हें अपने साधन के द्वारा मिलता हूँ।" हर एक प्रसिद्ध विद्यार्थी के विषय में यह बात समझना चाहिए। परन्तु मनुष्य ने अनेक अद्भुत चीजें—जैसे लकड़ी की घड़ी, जो ठीक घंटे बताती थी—एक साधारण पाद में बनाई। पाद एक ऐसा भीत है, जो हर मनुष्य के पास होता है। परन्तु प्रायः मनुष्य परन्तु नहीं होता। पानी का एक ताला और दो तापमापक यंत्र, केवल इन्हीं भीतों में दाक्टर र्लेफने अमर तापका अनुसंधान किया, यह विद्वत् किया कि नृपति तमाम चीजों में सुधी हुई गयी रहती है। दाक्टर र्लेफने ने बहुत से महत्पूर्ण वैज्ञानिक अनुसंधान केवल पाद की एक पुरानी स्थायी, घड़ी के दीर्घ, वाहन, एक छोटी से तराजू और एक फेंकनी से किये थे।

यद्यपि (उद्दिष्ट) निवासी महामहोपाय पं० चन्द्रशेखर सिंह ने ज्योतिषसंबन्धी अनेक अनुसंधान साधारण यंत्रों से कर डाले थे। उनके पास एक जलघड़ी, एक दिक्चक्र, एक रत्नोल, एक सांख और एक स्वयंप्रह यंत्र के विषय कुछ न था। और ये यंत्र भी उन्होंने प्राचीन भारतीय ज्योतिष पुस्तकों से स्वयं पढ़ पढ़कर बना लिये थे। आज कल के पश्चिमी यंत्रों का तो उन्होंने बहुत समय तक नाम भी न सुना था। केवल प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के आधार पर पुराने ढंग से ज्योतिष विद्या सीखी थी; बहुत दिनों तक तो नये



पश्चिमी ज्योतिषशास्त्रही उन्हें हवा तक न लगी थी। चन्द्रशेखरमिहिर ने बाल्यकालमें संस्कृत पढ़ाई गई थी। उनको गुरुमें ही मद्र मन्त्र इत्यादि देवनेका और ज्योतिषशास्त्र जाननेका बड़ा शौक था। उनके वाचाने उनके दो चार तारे आकाशमें बतला दिये थे, इसमें अधिक वे कुछ न बतला सके थे। चन्द्रशेखरमिहिरने जब कोर्ट सदरा न देखा तब स्वयं ही संस्कृतके ज्योतिष-ग्रन्थोंके पढ़ने और समझनेका प्रयत्न किया और इस कार्यमें उन्हें बड़ी सफलता हुई। उनका जीवन व्यावल्म्वनका एक बढ़िया उदाहरण है। उन्होंने प्राचीन संस्कृत ग्रंथोंको पढ़ा, फिर उनमें लिखी हुई बातोंकी मध्यमायी परीक्षा करनेके लिए प्रयत्न किया और तब ग्रन्थ भाषासामे उन बातोंमें मिलान न आया तब ग्रन्थोंका बारबार अध्ययन और मनन किया। इसने पर भी जब अन्तर नूर न हुआ तब उन्होंने यत्न बनाये और उनके द्वारा वे व्योमक निरंतर परीक्षाएं करते रहे।

कटक-कालिका मन्थानक बाबू योगेशचन्द्रजी भेट जब पहली बार चन्द्र-  
योगेश ने कुछ नव उन्हें उनकी शिक्षाको जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ । एक  
साधारण ग्राममें रहकर केवल संन्यासधर्मोकी मर्यादनामे इतना ज्ञान प्राप्त कर  
लेना कोई छोटी बात न थी । योगेश बाबूने पहिला सेनेके लिए उनको कई  
प्रश्न पूछे और उनका सम्बोधनक उत्तर पाया । एक दिन रात्रिके समय  
उन्होंने कुछ और मंगलका भजन पूछा । इस पर चन्द्रयोगेशने मुँह ही काटी  
निराई लहजिसे जगाकर एक मात्र-ईश मेवार दिया और उसमे दोनों  
करीब अन्तर मात्र कर टीक टीक बजा दिया । बिना वृत्तीवके केवल एक-  
दिनीमे ऐसा टीक टीक मात्र करना योगेशचन्द्रजी बड़ा कुतूहलजनक सम्प्र-  
दया । फिर योगेशचन्द्रने उनको वृत्तीव दिनाई जिसे देनाकर उन्हें बड़ा  
आनन्द हुआ ।

अष्टमेष्टाने संस्कृतमं वरिदा कृतमं आ मीन विना भीर ३३ वरिदा अ-  
ष्टाने 'विद्वान्' नामक एक अष्टमेष्ट संस्कृत अष्ट विना कृतमं । इत्ये  
ष्टमेष्टे अष्टमेष्ट वरिदा विना । इत्येष्ट अष्टमेष्ट अने विद्वान् अनेष्ट  
अष्टमेष्ट विना । अष्ट १८८८ ईस्वीमं वरिदा अष्टमेष्ट अनेष्ट अनेष्ट  
विना । इष्ट अष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट । इष्ट  
अनेष्ट अष्टमेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट अनेष्ट

[illegible]

इसीमें हम विचारते हैं कि विचारोंमें वे सबोंको समानता देकर  
 रखी थी । वह बहुत बड़ा काम था कि “बोले जाते जानता कि मैं  
 इन लोगों को बोलोंका विचार करती हूँ ।” फिरका विचार करने  
 करनेमें सामान्य और जाते हुए सबोंमें विचारका काम निरा-  
 रण था । सामान्य विचारोंमें सबोंमें ही जाते पर फिर बनाया करता  
 था । विचारोंमें ही हमें सब पदों में विचारों ही जाते पर फिर बनाया था ।  
 परसुम्नर लोगोंमें सबका ओहदा पदा रहता था और सब दोरेमें निम्नमें  
 रखीये विचारों हुए थे, विचारोंका समान बनाया करता था । अधोल पद एक  
 एक तारेकी जगह अपने धर्मोंमें एक एक रखीये अथवा देता था । प्रो-  
 नने पदों पदों अपनी पदोंमें एक रचनामें समान और दो आदमी लवहियोंकी  
 लगा कर उभे भावनामें उदाया और उभे द्वारा सरजते हुए बाह्योंमें  
 विचारों रखी । विचारों जय कि पद एक समानके पदों और था, समानके  
 छोटे छोटे विचारों विचारों हुए हुए दो पर विचारोंके समान विचार करता था ।  
 ज्योतिषी विचारों द्वारा प्रदर्शित विचारों अपने हल पर लगाया करता था ।

आयन्त्र माधारण अक्षरों पर भी मनुष्यको उन्नति करनेके मौके अथवा माधन मिल सकते हैं, यदि वह उनमें लाभ प्राप्त करनेके लिए तत्पर हो। अध्यापक ह्रीषा ध्यान, जब वे पढ़ाई का काम करते थे, हिम् भाषामें लिखी हुई पाठ्यपुस्तकों देखकर हिम् भाषाके सीखनेकी ओर आकर्षित हुआ। उन्होंने एक पुराना व्याकरण मौल ले लिया और उस भाषाको वे स्वयं सीखने लगे। तब फ्लेमिन्गस्टोनमें, जो एक गरीब मालीका रहता था, एक महाशयने पूछा कि, "तुम लैटिन भाषाकी पुस्तकें पढ़नेके योग्य कैसे हो गये?" तो उसने उत्तर दिया कि "यदि मनुष्य केवल वर्णमालाके सब अक्षर सीख ले, तो वह जो कुछ चाहे सीख सकता है।" लगातारके प्रयत्न तथा धैर्यसे और मृदुभाषा धनपूर्वक सदुपयोग करनेसे सारे काम सिद्ध हो जाते हैं।

हैलेंडका प्रसिद्ध कवि, उपन्यास-लेखक और इतिहासज्ञ सर वाल्टर स्कॉट हर काममें आत्मोन्नतिके मौके ढूँढ़ लेता था और संयोगोंमें भी लाभ उठा लिया करता था। उसने एक लेखकके यहाँ नौकरी करके हार्लैंड्स देश देखा, यहाँ पर सन् १७४५ के विद्रोहसे बचे हुए धीरोंमें मित्रता की, और उनसे अपने भारी भ्रष्टोंके लिये सामग्री प्राप्त कर ली। इसके कुछ काल बाद उसे संयोगवश एक घोड़ेने छाल मार दी, जिसमें वह कुछ दिनोंतक चलने फिरनेमें असमर्थ हो गया और घरके भीतर पड़े रहनेको मजबूर हो गया। परन्तु वह आलस्यका कहर बेरी था, इसलिये उस समय उसने अपने मस्तकमें काम करना शुरू कर दिया। तीन दिनोंमें उसने अपनी सबसे प्रथम और प्रसिद्ध कविताका प्रथम सर्ग लिख डाला और घोड़े की दिनोंमें उसे समाप्त कर दिया।

इन सब उदाहरणोंमें मान्यता होता है कि संसारमें दैवयोग मनुष्यका उतना सहायक नहीं है जितना उद्देश्य व निरंतरता परिश्रम है। निर्धन, आकस्मिक और उद्देशरहित मनुष्योंके लिये सर्वोत्कृष्ट सुयोग भी इसी कामके नहीं है। वे उन्हें निरर्थक समझकर उन पर ध्यान तक नहीं देते। परन्तु यह जानकर आश्चर्य होता है कि यदि हम कार्य और प्रयत्न करनेके सुयोगोंको—जो हमको सदैव मिलने रहे हैं—जाने न दें और उन्नति की ओर जितना कार्य हो सक्ता है। याद गलियमव्यवस्था भीतारोंके बनानेका व्यापार करने हुए भी समावधाना और संश्लेषणाका अध्ययन करना या और विद्वत्ताके एक वैदिकमें ज्ञान भाग सीखा जाता था। गतिवान् भंडारका आदिभारकर्ता क्री.वि.मन्त्र दिनोंमें भंडारकी नौकरी करता था, राजको भंडारालय और मातृ-विद्या सीखा करता था और दिनोंमें भंडारके लिए उसे जितने समयकी सुविधा मिलती थी उसमेंसे कुछ दिनके विद्यालय का कोचलेकी गतिविधि पर गतिवान् गतिवान् सहायक दिया जाता था। धीरे-धीरे हमें यह स्पष्ट हो जाता है कि वही वीर है। वे दिनभर अपने भागीदार काम किया करते थे, परन्तु फिर भी कुछ समय बचाकर इतिहासकी जाने सीखा करते थे। इस तरह उन्होंने बहुत दिनोंतक परिश्रम करके कलकत्तेके पास एक इतिहासज्ञ स्थापित की, जिसके द्वारा देशका बहुत बड़ा उपहार हो रहा है। जी. एम. पार्सन्स परसे बने निर्धन थे। वे एक महापुरुषके यहाँ नौकरी करके उनके साथ आश्रय पड़े गये। वहाँ आने पूर्वकके कामसे







## स्वावलम्बन ।

चिकित्साके द्वारा उसको जो थोड़ीसी आसानी होती थी वह भी जाती रही और वह मिश्रहीन हो गया । कुछ वर्षोंतक वही हाल रहा । परन्तु वह सिद्धान्त, जिसपर हावें इतने कष्ट सहन करनेपर भी बराबर दृढ़ रहा, धीरे धीरे आगामी निरीक्षणोंमें सिद्ध होता गया और पश्चीम धर्मके बाद तो सर्वसाधारणने उसे एक वैज्ञानिक सिद्धान्त मानकर ग्रहण कर लिया ।

चेचक ( क्षीतला ) से बचनेके लिए टीकेके अनुसंधानको प्रकाशित करने और स्थापित करनेमें डाक्टर जैनरको जिन कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा था वे भी हार्वेकी कठिनाइयोंसे कम न थीं । उनमें पहले बहुत अनुपयोगी गोयन-क्षीतला देखी थीं और ग्वालाओंकी यह धृष्टि मुनी थी कि जो कोई गायके घनकी क्षीतलामें पीड़ित हो जाता है वह चेचकमें पड़ा रहना है । इस बातको लोग एक कुछ गप्प जानकर सर्वथा निरर्थक समझने लगे और उस समय तक कोई भी इसकी खोज करना सार्थक न समझता था जबतक कि संयोगवश जैनरका ध्यान इसकी ओर न गया । यह युवक उस समय विद्यार्थी था । एक ग्रामीण लड़की अपने भालिककी दूकानपर दूध लेने आई थी । उस समय उसने जो कुछ कहा उसमें जैनरका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ । जब चेचकका नाम लिया गया, तब लड़कीने कहा, “ मैं इस रोगमें ग्रसित नहीं हो सकती, क्योंकि मैं गोयन-क्षीतलामें पीड़ित रह चुकी हूँ । ” इस बातकी ओर जैनरका ध्यान तुरंत ही आकर्षित हुआ और वह उसी समयसे इस विषयका अन्वेषण करने तथा द्रष्टव्यमान करनेमें लग गया । जब उसने अपने मित्रोंसे गोयन-क्षीतलाके रोगनाशक गुणोंके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट किये तब वे उसका उपशम करने लगे और उसको अपने सम्भाव्य निकाल देनेका भय दिखाने लगे । मौभायवश जैनर लड़कनमें जान हँटरके यहाँ विद्याध्ययन करने लगा । एक दिन जब उसने उनके सामने अपने विचार प्रकट किये तब तब जान हँटरने योग्यतापूर्ण उत्तर दिया कि “ कबल विचार ही न करो, चेष्टा करो, धर्मज्ञ रक्तों और शरीरकोष टीक काम करो । ” इस सम्मतिमें जैनरको दादम पैदा भीर इसमें उसके शोधमें विरिधिरूपक खोज करनेकी मर्जी कला आगई । इसका बाद वह पड़ा करने और इस विषयमें निरीक्षण आर अनुभव करनेकी दृष्टिसे अपन घर चला आया । इस कामको वह लगातार बीस वर्ष तक करता रहा । उसको अपने अनुसंधान पर ऐसा

विश्वास था कि उसने स्वयं अपने विचार एक पुस्तकमें प्रकाशित किये और उसमें उन तेईस मनुष्योंकी सफलतापूर्वक टीका लगानेका हाल लिखा, जिनकी फिर किसी विधिसे चेचकका रोगी बनाना असंभव था । उसकी यह पुस्तक सन् १७७८ ई० में प्रकाशित हुई ।

प्रथम तो इस अनुसन्धानकी ओर ध्यान ही न दिया गया और फिर इसका बलपूर्वक विरोध किया गया । डाक्टर जैनर टीका लगानेकी विधि और उसके परिणाम डाक्टरोंको दिखानेके लिए लंदन गये; परन्तु वे एक भी डाक्टरको उस विषयकी परीक्षा करनेके लिए उत्साहित न कर सके और व्यर्थ ही तीन मासतक प्रतीक्षा करके अपने घर लौट आये । लोग कहते थे कि वे गोधनमेंसे रोग उत्पन्न करनेवाली चीजको निकालकर मनुष्योंके शरीरमें प्रवेश कराके उनको पशु जैसे बनाना चाहते हैं । इससे वे उनके तरह तरहके हास्यपूर्ण विप्र बनाते थे और उनकी गालियाँ देते थे । पादरी लोग टीका लगानेकी रीतानका कान समझते थे । गाँवके लोग तो छाती थोककर कहते थे कि " जिन बच्चोंको टीका लगे हैं उनके मुँह पैलके मुँहके समान हो जायेंगे और उनके जो फोड़े निकले हैं वे प्रकट करने हैं कि उन स्थानोंसे सींग फूटनेवाले हैं ! उनकी सूरत गावके समान और आवाज सोंढ़के दहानेके समान हो जायगी ! " परन्तु टीकेमें वास्तवमें लाभ होता था, इसलिए धीरे धीरे विरोध होने-पर भी लोगोंकी धीरे धीरे उसपर धृष्टा होने लगी । एक ग्राममें एक सज्जनने टीकेके कानको आरंभ किया । यहाँ पहले पहल जिन्होंने टीका लगवाया उनपर लोगोंने पाप्यर फेंके और कुछ दिनोंतक तो उन्हें घरके बाहर न निरुहने दिया । दो अमीर खियोंने, जिनका हमें आदरके साथ स्मरण करना चाहिए हिम्मत करके अपने बच्चोंको टीके लगवाये और इससे और लोगोंने बहुत कुछ दृढ़ छोड़ दिया । डाक्टर लोग भी धीरे धीरे मान गये और जब टीकेका महारय सालूम हो गया तब कई डाक्टरोंने तो जैनरके इस अनुसन्धानको अपना ही बतलाना चाहा । परन्तु जैनरकी ही अन्तमें विजय हुई । सर्वसाधारणने उनका आदर किया और उनके कार्यका प्रतिफल दिया । वे अपने वैद्यके कालमें भी ऐसे ही नष्ट रहे, जिनने वे अपनी अग्रसिद्धिके समय थे । लोगोंने उनसे अनुरोध किया कि " आप लंदनमें चलकर रहें । यहाँ रहकर आप देड़ लाख रपया वार्षिक पैदा कर सकेंगे । " परन्तु उन्होंने उत्तर दिया







भूगोल-विद्याप्रकाशक सभाके सभापति सर रोडेरिक मर्चिसनको कुछ वर्ष हुए रायर्ड डोक नामक मनुष्य मिला जो एक भट्टेपर काम करता था; परन्तु भूगर्भविद्यामें सूत्र निपुण था । जब रोडेरिक मर्चिसन उसमें भट्टेपर मिले, जहाँ वह ईंटें इत्यादि पकाकर अपनी गुजर किया करता था, तब उसने अपने प्रामके सम्बन्धमें बहुतसी भूगर्भ तथा भूगोलविद्यासंबंधी बातें बतलाई और उस समयके सबेरे हुए बकशोंमें श्रुटियाँ भी बतलाई, जो उसने अयकाश मिलनेपर प्राममें घूम घूम कर मालूम की थीं । अधिक पूछनेपर सर रोडेरिकको मान्यता हुआ कि वह दीन मनुष्य केवल एक निपुण ईंट पकानेवाला और भूगर्भविद्याविशारद ही नहीं है, किन्तु वनस्पतिशास्त्रका भी उच्च श्रेणीका ज्ञानकार है । सर रोडेरिकने कहा है कि “ मैं यह जानकर बड़ा लज्जित हुआ कि भट्टा पकानेवाला वनस्पतिशास्त्रमें मुझमें कहीं अधिक ज्ञानकारी रखता था । उसका ज्ञान मेरे ज्ञानमें दस गुना था और उसके संग्रहमें केवल बीस या तीस फूल ही संग्रह किये बिना रह गये थे । कुछ उसको औरोंसे मिले थे, और कुछ उसने अपने प्राममें अपने परिध्रममें इकट्ठे किये थे । ये नमूने अत्यंत सुन्दर रीतिमें व्यवस्थित थे और उनपर उनके वैज्ञानिक नाम लिखे थे । ”

## छठा अध्याय ।



शिल्पकार ।



“ यदि तुम किसी दूरकी चीजको महत्वपूर्ण समझ कर प्राप्त करो, परन्तु वह हाथमें आनेपर महत्वहीन गिद्ध हो, तो और आगे बढ़ो, तारीफ तो चेष्टा करनेमें ई, न कि निर्दिष्टमें । ” —आर एम मिलनबीज ।

“ विद्वत् पुन पुनराप्य प्रसिद्धयमाना ।

प्रपञ्चमुत्तमनना न पाव यजन्ति । ” —मन्दार ।

**जी** तोड़कर लगातार परिध्रम किये बिना कुछ भी नहीं हा सकता । जाह कला कांशक्यका काम हो चाहे और काई काम हा, बिना कर्मन शिल्पमके उसमें कानि नहीं मिल सकती । एक मन्दार शिल्प शीतले

“ नार ५५ ” बल्कि अनवर भी उसमें पुष्ट काम करना नहीं छावने ।



## स्वायत्तमन ।

हैलैंडके अर्थात् मसिद्ध शिल्पकार भी ऐसी स्थितिमें पैदा हुए हैं जो शिल्पविषयक प्रतिभाकी उन्नतिके लिए बिल्कुल सामान्य थे । मैन्सवरो और घेफनके पिता जुलाहे थे । घैरी एक मस्लाइका लड़का था । रोमने और जोन्स बड़ई थे । नार्थकोट घड़ीसाज था । जैक्सन दर्जी था । टर्नर नार्ईका लड़का था ।

इन मनुष्योंने सामान्य अथवा दैवमे नहीं; उद्योग और परिश्रममे गौरव पाया है । यद्यपि इनमेंसे कुछने धन प्राप्त किया, तो भी यही उनका एक मात्र उद्देश्य न था, केवल धनका प्रेम ही उनको प्रारम्भिक जीवनमें आत्म-संयमन और धुन बाँधकर परिश्रम करनेमें स्थिर न रख सकता । काम करनेका आनंद ही उनके लिए सर्वोत्तम फल था; धन जो उन्हें मिला वह तो केवल संयोगवश मिल गया । बहुतमे शिल्पकार अपने काममें मग्न रहना पसंद करते थे, और अपनी चीजोंके दामोंमें लोगोंमे शिलशिल करना पसंद न करते थे । स्पैंगनोलेट्टोने धनवान् होनेके सब साधन प्राप्त करके भी उनको छोड़ दिया और निर्धन होकर परिश्रम करना पसंद किया । जब माइकल ऐं-जेलोमे एक चित्रके संबंधमें, जो एक चित्रकारने बड़े परिश्रममे अच्छी रकम कमानेके लिए तैयार किया था, पूछा गया, तो उसने कहा कि “जब तक वह धनाढ्य होनेकी इतनी अधिक मृच्छा रखेगा तब तक मैं समस्या हूँ कि वह निर्धन ही रहेगा ।”

सर जोशुआ रेनारड्सके समान, माइकल ऐंजेलोकी भी उद्योगशक्तिमें बड़ी धृष्टा थी । उसका विधान था कि यदि हाथ मनकी आज्ञानुसार ठीक ठीक काम करें तो मस्तरकमें चाहे जैसी विलक्षण कसरना उठे, उसकी हूबहू प्रतिमा पर्यन्त स्वीची जा सकती है । वह स्वयं बिना थकावटके परिश्रम करनेवाला था, और अपने सहयोगियोंकी अपेक्षा अधिक समयतक अप्रयत्न कर सकता था । इसका कारण यह था कि वह बहुत ही साधारण भोजन करता था । जब वह अपने काममें लगा रहता था, तब उसे दिनमें थोड़ी रोटी और शराबकी आवश्यकता होती थी । वह बहुत करके आधी रातमे अपना काम शुरू कर देता था । रातको वह अपनी दीर्घामें मोमबत्ती लगा कर काम किया करता था । कभी कभी वह इतना थक जाता था कि उसमे स्पष्ट तब न उतारे जाने थे—कपड़े पहने ही सो रहता था और ज्योंही



## स्यायलम्बन ।

लगी, इस कारण वह अभिमानी होकर चिगड़ने लगा। यदि ऐसा न हुआ होता, तो वह और भी बड़ा चित्रकार बनता। उसकी क्वालिटी यद्यपि, अच्छी हो गई थी, तथापि वह अध्ययन, प्रयत्न और चेष्टासे प्राप्त न हुई थी।

जब रिचर्ड चिल्डर्सन बालक था, तब अपने पिताके घरकी दीवारोंपर जहाँ दुर्ह लकड़ोंसे मनुष्यों और पशुओंकी शकलें बनाया करता था। उसने पहले अपना ध्यान मनुष्यों और पशुओंकी आकृति बनानेमें लगाया; परन्तु जब एक बार वह अपने एक मित्रके घरपर गया और उसके बाहर आनेकी घाट देखते देखते मग्न आ गया तब अपने मित्रके घरकी स्तिङ्कीके सामनेके दृश्यका चित्र खींचने लगा। जब उसका मित्र आया, तो वह चित्रको देखकर मोहित हो गया। उसने चिन्मनमें पूछा, “क्या तुमने प्राकृतिक दृष्यके चित्र खींचनेका अभ्यास किया है ?” चिन्मनने उत्तर दिया “नहीं”। इसपर उसके मित्रने कहा, “तो मैं तुमको सम्मति देता हूँ कि प्रयत्न करो, तुम्हें इस कार्यमें अवश्यमेव अच्छी सफलता प्राप्त होगी।” चिन्मनने इस सम्मतिको स्वीकार किया, अध्ययन किया, घोर परिश्रम किया और इसमें वह अंगरेजोंमें सृष्टिसौन्दर्यको चित्रित करनेवाला सबसे पहिला चित्रकार हुआ।

सर जोनुआ रेनाल्ड्स वास्तुशालामें अपना पाठ भूल जाता था और कुछ न कुछ चित्रित करनेमें मग्न रहता था। इसी कारण उसके पिता उसको बुरा भला कहा करते थे। वे अपने पुत्रको शक्ती मिथाना चाहते थे, परन्तु शिक्षकें प्रति उसकी प्रबल रुचि रुक न सकी और वह चित्रकार बन गया। रेनल्ड्सवरो, जब पाठशालामें पढ़ते थे तब जंगलोंमें जाकर चित्र खींचा करते थे। केवल बारह वर्षकी अवस्थामें वे पके चित्रकार हो गये थे। उनकी निरीक्षण-शक्ति बड़ी तीव्र थी और वे परिश्रम भी स्वीकार करते थे। किसी मनोहर दृश्यको एक बार देखकर वे उसे अपनी पैमिलसे खींचे बिना न रहते थे। एटलसबर्ड बर्ड, जब केवल तीन चार वर्षके थे, तब कुर्सीपर चढ़कर घरकी दीवारोंपर चित्र खींचा करते थे और उन चित्रोंको गिनाही कहते थे। उनको रंगोंका एक बक्स मिला दे दिया गया और उनके पिताने—जो अपने पुत्रके चित्र बनानेके प्रेमको कार्यरूपमें परिणत करना चाहते थे—उसको एक बरतन बनानेवालेके यहाँ नौकर रख दिया। इस धीमेसे वे धीरे धीरे आगे बढ़े और अपने अभ्यास तथा परिश्रमसे उन्नति करके बहुत बड़े आदमी बन गये।





## स्वायत्तमन ।

और कभी कभी असफल होते थे । उन्होंने रंगोंके भरनेमें बहुत परिश्रम किया, परन्तु उनको उत्साहित करनेवाला कोई न था । सन् १८७३ में मिस्टर चिमहोम, जो मद्रासकी शिक्षाशालाके अधिष्ठाता थे, दावनकोरमें पधारे । रविशर्माके कामको देखकर और यह जानकर कि उन्होंने चित्रकारीकी शिक्षा किसी दूरीमें नहीं किन्तु अपने भाप प्राप्त की है—उनको बहुत आश्चर्य हुआ । उन्होंने यह सोचकर कि 'यदि रविशर्माका काम मद्रासको न दिखाया जायगा तो यह व्यर्थ जायगा' रविशर्मासे कहा कि मद्रासकी प्रदर्शनीके लिए तुम एक अच्छा चित्र तैयार करो । इधर दावनकोरके महाराज रविशर्माकी योग्यताको जान चुके थे, इसलिए उन्होंने इस कामके लिए रविशर्माको विशेष आर्थिक सहायता देना स्वीकार कर लिया । कई महीने परिश्रम करके रविशर्माने एक चित्र तैयार किया । यह चित्र एक बेर-महिलाका था जो अपने बालोंको चमेलीके फूलोंके हारमें रूँथ रही थी । चित्रने प्रदर्शनीकी शोभाको द्विगुणित कर दिया । उसकी बड़ी प्रशंसा हुई और रविशर्माको इसके उपलक्ष्यमें प्रदर्शनीकी ओरसे एक मुबर्गएक भेट दिया गया । इसमें उसका उम्माड़ बड़ा गया—उन्हें विश्वास हो गया कि मैं भी कुछ कर सकता हूँ । दूसरी बार उन्होंने एक लामिन्-महिलाका चित्र बनाया । यह भी अच्छा बना और इसके उपलक्ष्यमें भी उन्हें एक पदक मिला । इसके बाद उन्होंने अपना 'शाकुन्तला-प्रत्येक्षण' नामक प्रसिद्ध चित्र बनाया, जो लोगोंको बहुत ही पसन्द आया और मद्रासक गवर्नरने उसे अपने लिए खरीद लिया । अब उन्होंने पौराणिक चित्र बनाना शुरू कर दिया जिनके द्वारा हिन्दुओंके पौराणिक देव लोगोंकी आँखोंके सामने खींचे जाने लगे । इसी समय सर टी. माधवराजन उसका एक चित्र बर्मा-जंगलको दिखाया । उसे देखकर महाराज बहुत ही प्रसन्न हुए । उन्होंने अपने राज्याभिषेकके अवसर पर रविशर्माको आमन्त्रित किया और उसका बड़ा सम्मान दिया । इसी तरह उसका पश्चिम मैसूरराज्यमें भी हो गया और प्रत्यक्ष वे भारतवर्षके अपने समयके सर्वोत्तम चित्रकार हो गये । भारतको उसके चित्रोंका अभिमान है । इस तरह एक माधवराज बल्कि हिमाचली महाराज के अपने भाप ही तथा लाल और तिमिरम रीतिमें बड़े इसमें सामने एक इसमें उदाहरण हो गए । इसका अनुमान करके वह एक बड़े सामान्यतः प्रदर्शनीका अवसर पर चित्रकार इसमें लेख-चित्र बनाये गये हैं ।

वैक्स नामका संगतराश उद्योग और धर्मको कार्यसिद्धिका मूलमंत्र समझता था । वह स्वयं इस मंत्रकी आराधना करता था और दूसरोंको भी इसके अनुसार चलनेकी सम्मति देता था । वह बड़ा दयालु और प्रेमी पुरुष था, इस कारण अनेक उस्ताही पुत्रक उसके पास सम्मति और सहायता लेनेके लिए जाते थे । एक बार एक लड़केने उसके घरका दरवाजा खटखटाया । जोरकी खटखटाहट सुनकर वैक्सकी दामीकी क्रोध आगया । उसने लड़केको मृदु धमकाया और पहलसे चले जानेके लिए कहा । इतनेमें शोरगुल सुनकर वैक्स स्वयं बाहर आगया । उसने देखा कि एक लड़का अपने हाथमें एक चित्र लिए खड़ा है और दामी उसपर लाल-ताती हो रही है । पूजा, "लड़के, मुझमें क्या बान है ?" उसने उच्चर दिया—"मैं आपके पास इस लिए आया हूँ कि आप कृपा करके मेरी सिफारिश कर दें और मुझे निष्पक्षविद्यालयमें चित्र-विद्या सीखनेके लिए भरती करा दें ।" वैक्सने लड़केसे कहा—"उक्त विद्यालयमें भरती होना महत्व नहीं है । यह मेरे हाथकी बात भी नहीं है । पर तुम्हारे हाथमें जो चित्र है उसे तो मुझे दिखलाओ ।" चित्रको अच्छी तरह देखकर वैक्सने कहा—"लड़के, अभी उक्त विद्यालयमें भरती होनेके लिए बहुत समय चाहिए । इस समय घर जाओ और अपनी पाठशालाका अभ्यास जारी रखो । मैं मनसूता हूँ तुम इस चित्रको लगभग एक महीनेमें अधिक अच्छा बना लोगे, उस समय-तैयार हो जानेपर-मुझे यह दिखला जाना ।" लड़का घर चला गया और उस चित्रके तयार करनेमें परिश्रम करने लगा । पहलेकी अपेक्षा दूनी मेहनतमें उसने यह चित्र तैयार किया और महीनेके अन्तमें वैक्सको जाकर दिखाया । चित्र पहलेकी अपेक्षा अच्छा था; परन्तु वैक्सने उसे फिर लौटा दिया और यह कहा कि "और भी परिश्रम करो, और भी अभ्यास बढ़ाओ ।" एक सप्ताहके बाद लड़का फिर उसके घर गया । इस बार उसका चित्र बहुत अच्छा था । वैक्सने कहा—"लड़के, प्रसन्न हो; माहस रम्य । यदि दू जीता रहा तो संसारमें अपना नाम कर पायगा ।" वैक्सकी भविष्यवाणी पूरी उतरी । इस लड़केका नाम मुल्लेरडी था । यह कहा बामी चित्रकार हुआ ।

देनदेनूटी संगिनी बामका एक और प्रसिद्ध चित्रकार हो गया है । उसका जीवनपरिचर बड़ा ही विचक्षण है । वह केवल चित्रकार ही न था;

क्रिष्ण मूनार, गीतगोविन्द, नकाश, हमारंग बनायेकी विद्याका जाननेवाला भीत कसक भी था। उसके पिता बाबा बजाना बहुत अच्छा जानने थे और हंगी काम पर एक रातके सहा बीकर थे। उनकी प्रवक्तृ कृष्ण थी कि मेरा कपड़ा बीगरी बजानेमें निपुण हो जाय। परन्तु उनकी बीकरी छूट गई और इस कारण उन्हें अपनी इस कृष्णसे हाथ धो लेना पड़ा। अब उन्होंने मैत्रिणीको एक मूनारके पत्रों काम मीलनेके लिए रस दिया। मैत्रिणीको मिलनेसे हार्दिक प्रेम था, इस कारण कुछ समय तक परिधम करनेमें वह कुछ कमर मूनार बन गया। इनमें वह एक मास्टरके संगेमें पैस गवार और कुछ सर्वज्ञके लिए नगरमें निकाल दिया गया। तब इनने दिलों तक उसे एक और मूनारके पत्रों सहजा पत्रा और उसके पास उसने सोनेक लहसु तर-इके काम और अनादरानका अनादर काम करना भी सीख लिया।

मैत्रिणीक पिताजी वरु दुवारा अर्जीपत्र बनी ही थी कि वह बीवृत्ति  
 बचाना सीने, दुसरे लिए मैत्रिणी दुसरे सीनेमें भी कुछ समय लगाया  
 था, वहन्य वास्तवमें उसे वह काम पसन्द न था । पिता-पिताजी और  
 ही दुसरी पिताजी अभिमान थी । जब वह क्लोथिंग मगरमें और आया,  
 सब दुसरे मातृत्व में ही थीं और प्रसिद्ध पिताजीक पिताजी नेवा और  
 दुसरी पिताजीआपस मगर पिताजी किया । इसी समय मोनेके काममें पिताजी  
 कुछकाल मगर करने के लिए वह पिता मगरोंक पीछे ही रोममगरमें आकर  
 पहुँचा और वही मगर मगर के दिग्गज के काम करने लगा । रोममगर मगराद्वय  
 वह वृद्ध ने वह मगर किंवा क्लोथिंग और आया । सब वह बहुत ही प्रसिद्ध  
 मगर करने लगा और दुसरे काम बहुत काम करने लगा । पिताजी ही वह  
 क्लोथिंग या दुसरा ही पिताजी और मगराद्वय था । वह रोम जाने से वे क्लोथिंग  
 मगर वह मगर था और दुसरे दुसरे क्लोथिंग मगरों मगर मगराद्वय मगराद्वय  
 वरुण था । मगर काममें वह मगराद्वय नेव मगराद्वय मगराद्वय और पिताजी मगर-  
 मगराद्वय था ।

ਅਭਾਸੀ ਵਾਹ ਸੀਤਲ ਤਪਾਵ। ਕਰਾ ਸਾਧਾਭ ਸੁਖਾ। ਬਖਸ਼ਿਸ਼ੁ ਬੋਧੀ ਤਕੇ ਸੁਖਾ।  
 ਰਾਜ ਬਾਸ ਕਰਕ ਭੀਰ ਬਾਸਾ ਬਾਸੇਏ ਲਿਖ। ਭਾਵ ਬਾਹੀ ਸੀਤਲ ਰਾਜ ਲਿਖਾ। ਕਰ  
 ਭਾਸੀ ਬਾਸਾ ਲਿਖਿਯਾਏ ਭਾਸਾਏ ਕਰਕ। ਭੀਰ ਤਪਾਵ। ਬਖਸ਼ਿਸ਼ੁ ਸੁਖੀ ਬਾਸੇਏ  
 ਕੇਕਰਾ ਭਾਸੀ ਰਾਜੀ ਕਰਕਾ ਕਰਕਾ ਸੁਖਾ ਕਾ। ਕਰ ਭਾਸਾਏਏ ਭਾਸੇਏ ਕਰਕ

और शोभा, खोटी, दीवार आदि पर सड़के बंदूक काग बरसा था । भीनेका, और सुन्दरानों तथा सीरीमें मकनारीका काग भी पड़ बरसा था । ज्यों ही वह किसी मुनासरी किसी काममें बढाई गुमना था, ज्यों ही संजय वह मंगल वि में उगरे बंदूक काग बरसा । हम गलत था किसी मुनासरी समानता पदक बनानेमें, किसीकी जिन्ना बननेमें और किसीकी जगहतरा सड़नेके काममें जाता था । दागधरमें उसके सपपसापका ऐसा बोई भी भंग न था जिसमें वह दूसरीके आती बंदूककी हप्ता न रहता हो ।

सिलिनीमें जो उभोग और उगाह था, उसीके काग पद हुआ निपुन शिवदत्त हो गया । वह बड़ा परिसर्मी था; कुछ न कुछ काम निरन्तर ही बिधा करता था । सड़क बननेके लिए वह हमेशा मैदा रहता था । वह कभी कलौरमें रहता तो कभी रोमको चला जाता और यहाँमें मंदुभा, रोम, मैडि-समें घूम फिरबर फिर कलौरमें लौट आता । पिनिय और पेरिसमें भी वह कभी कभी दिखलाई देता था । वह अपनी दायाँ बायें दोनों ही करता था, हमसे अपने साथ बालुगमा सामान नहीं ले जा सकता था । भगण्य वह लहो जाता था यहाँ उसे अपने आवश्यक औजार रख बनाने पड़ते थे । वह रख ही अपने चिपोंकी कवरना करता था और रख ही उन्हें पिद्रित करता था । अपने हाथमें ही वह अंकित करता, खोदता, गलाता, और गढ़ता था । उसकी बनार् हुई मयके चीजमें उसकी प्रतिभाकी छाप लगी हुई है । उसे देखते ही वह मान्य हो जाता है कि उसमें सारी कारीगरी उसीकी है। ऐसा नहीं कि एक अनुपपने उसका टोपा—रूपरेखा बनार् हो और दूसरेने उसी टोपेके अनुसार रखना भी हो । छोटीसे छोटी चीज—कमरपट्टेका बकुमुभा, बदन, सुहर आदि भी—उसके हाथोंमें आवर सुन्दर कारीगरीका मज्जु हो जाती थी ।

सिलिनी हलबोनाल और सीत्रनाके लिए बहुत प्रसिद्ध था । एक मुनासरी लड़कीके एक पोटो हुआ था । उसे चीरनेके लिए एक छापर उसके घर आया । सिलिनी भी यहीं पड़ा था । उसने देखा कि छापरका औजार बेटील आर नहा है—उस समयके छापरोंके औजार प्रायः ऐसे ही हुआ करते थे—

नर माहलान बना, छापर माहय, पिये, १४ मि-टह लिए, आर रहर जाहण ।

१२१२ नाहक न आते तब तब आर नशर मन बनारण । वह कह कर

उसका कबानपर आया आर उसा समय उसन मंगलम पौहादका एक

## स्यामलम्बन ।

हुकड़ा छेकर एक मन्त्र मँथार कर लिया । निदान उगी महाराने बारदाने उस लड़कीके गोदेकी गकलतापूर्ण क पीर दिया ।

मैडिनीने अनेक उत्तमोत्तम मूर्तियाँ बनाई हैं । उसमेंसे नूतनी हस्तरेष ( मुद्रित ) की चौरीकी मूर्ति बहुत ही प्रसिद्ध है । परिचय देवकी कौमेकी मूर्ति भी उसकी कीर्तिको बढ़ानेवाली है । यह मूर्ति उसने कथोर्वक के साकुर कारमोंके लिए बनाई थी ।

जब उसने परिचयकी मूर्तिका पहला मगूना मोमका बनाकर टाकुरपा-हबको दिखलाया तब उम्होंने निश्चय रूपसे कह दिया कि हम मगूनेको कौमेमें बाल देना असंभव है—कौमेमें हमनी बारीकी नहीं उठ सकती । यह सुनकर मैडिनीको मोरा आ गया । उसने तात्काल ही मंङ्गल कर लिया कि मैं इसके बनानेका केवल प्रयास ही न करूँगा किन्तु इसे बनाकर ही छोड़ूँगा । पहले उसने मिट्टीकी मूर्ति मँथार की और उसे आगकी भट्टीमें देकर पका लिया । इसके बाद उसने उस पर मोम बढ़ाकर उसे ठीक बना ही बना लिया जैसी मूर्ति वह बनाना चाहता था । इस मोमके ऊपर उसने एक प्रकार की मिट्टी बढ़ाई और फिर उस मूर्तिको भट्टीमें रख दिया । हमने सोच लिया गया और मिट्टीके मोमों परमोंके बीचमें कौमा बलनेकी चोटी लगाई हो गई । इस प्रकार उसने नीला मँथार कर लिया, जब मूर्तिका बाह्यता बाकी रह गया ।

जब मिट्टीमें यह मूर्ति बलनेवाली थी उसके नीचे एक गढ़ा बनाया गया था । इस गढ़ेमें कौमेकी घातुपें रख दी गई और उसका चिपका हुआ रस बारीक बलियोंके द्वारा पीचकी बोझमें जानेका प्रयत्न कर दिया गया ।

पानु मायानेके लिए पहलकीने बहुतसा ईँचन हुकड़ा कर लिया गया था । भट्टीमें जब आग जलाई गई तब उसने उनका जोर दिखलाया कि नूकानमें आग कम गई और ऊपरका कुछ भाग जल गया । इसी समय भीची आ गई और मेह भी बरसने लगा । इससे मूर्ती कम हो गई और घातुपें न गल सकीं । मैडिनी कीर्तिके ईँचन पर ईँचन झोंकता रहा और आगको प्रभरित्य करना रहा, पानु दिनकी बीच बहिरु उठकी, वहीं पहुँच सकी । वह देता वह गया और बीमार हो गया कि उसे अपने कानकी दिशिमें रखे हुए होने लगा । उसने आचार होकर इस कामको बीकनेके मुहूर्त कर दिया और आग का-

पाद पर पड़ रहा । कुछ लोग उमकी चारपाईके आगपास बैठे हुए इस दुःखमें सहानुभूति प्रकट कर रहे थे कि इसी समय एक मौकरने उमके कमरेमें आकर कहा—मय काम बिगड़ गया, उमका सुधरना कठिन जान पड़ता है । यह सुनते ही मैलिनीको जोश आगया । बीमारीकी परवा न करके यह तुरन्त उठ गइल हुआ और भट्टीके पास चाल दिया । वहाँ जाकर देखा कि आगके कम हो जानेसे धातु जम गई है ।

एक पड़ीसीके सहोमे उमने शूची लकड़ियोंका ढेर उठवा मैगाया और उमका आगमें झाँकना शुरू कर दिया । आग फिर धधक उठी और धातु गलने लगी; परन्तु आँधी अब भी बड़े वेगसे चल रही थी और मेढ़ भी बरस रहा था । आगकी लपटसे बचनेके लिए मैलिनीने कुछ मेजें और कुछ पुराने कपड़े मैगाया जिनकी ओटमें खड़ा होकर यह लगातार एकट्ठी झाँकने लगा और कभी छोटेकी छट्टोंसे तथा कभी लम्बे चौखोंसे धातुको चलाते लगा । निदान धातु गल गई । इसी समय एक भयंकर आघात हुए और मैलिनीकी भोंगोंके सामनेसे एक ज्वालामय दीप्ति फिर गई । दुर्भाग्यसे भट्टीका ढँकना फट गया और धातु बहने लगी । यह देखकर कि धातु उचित वेगसे नहीं बहती है मैलिनी दौड़कर अपने रसोई घरमें गया और वहाँ उसे तौंवे और दस्तके जितने घर्तन मिले—सरह तरहकी लगभग २०० रखावियों, थालियों और देगचियों आदि—सब उठा लाया और उनको उसने भट्टीमें डाल दिया । निदान धातु सघेष्ट वेगसे बहने लगी और पर्सियसकी यह सुन्दर मूर्ति ढल गई । पाठकोंको याद होगा कि मैलिनीने भी इसी तरह अपने घरके अमवायको भट्टीमें झाँक दिया था ।

जान फ्लैक्समैन नामका एक और प्रसिद्ध शिल्पकार हो गया है । उसका पिता मिट्टीके सौंघे बनाया करता था । फ्लैक्समैन बाल्यकपनमें रोमी रहता था—उमसे घटते फिरते न बनता था और अपने पिताकी दुकानमें तकियोंके सहारे बैठा रहता था । उसे पुस्तकें पढ़नेका तथा चित्र खींचनेका बड़ा शौक था । एक दिन वह एक पुस्तक पढ़ रहा था कि पादरी मैथ्यूज उमका दुकान पर आया । उमने लड़केसे पुस्तकका नाम आदि पूछनेके बाद कहा "वह पुस्तक तुम्हारे पढ़नेके योग्य नहीं है । मैं तुम्हें एक और पुस्तक देगा उम पढ़ा करना ।" दूसरे दिन उमने सुप्रसिद्ध कवि होमरका एक

## स्वावलम्बन ।

टुकड़ा लेकर एक नश्वर तैयार कर लिया । निदान उसी नश्वरमे हाफ्टरने उस लड़कीके पोंदेको शकलतापूर्वक चीर दिया ।

सैलिनीने अनेक उपमोक्षम मूर्तियाँ बनाई हैं । उसमेंमे यूनानी इन्द्रदेव ( जुपिटर ) की चौड़ीकी मूर्ति बहुत ही प्रसिद्ध है । पर्मियम देवकी कॉमेकी मूर्ति भी उसकी कीर्तिको बढ़ानेवाली है । यह मूर्ति उसने फ्लोरेंसके टाकुर काम्मोके लिए बनाई थी ।

जब उसने पर्मियमकी मूर्तिका पहला नमूना मोमका बनाकर टाकुरसा-हबको दिखलाया तब उन्होंने निश्चय रूपसे कह दिया कि इस नमूनेको कॉमेमें ढाल देना अभ्यन्त्र है—कॉमेमें इतनी बारीकी नहीं उठ सकती । यह सुनकर सैलिनीको जोश आ गया । उसने तत्काल ही संकल्प कर लिया कि मैं इसके बनानेका केवल प्रयास ही न करूँगा किन्तु इसे बनाकर ही छोड़ूँगा । पहले उसने मिट्टीकी मूर्ति तैयार की और उसे आगकी भट्टीमें देकर पका लिया । इसके बाद उसने उस पर मोम चढ़ाकर उसे ठीक वैसा ही बना लिया जैसी मूर्ति वह बनाना चाहता था । इस मोमके ऊपर उसने एक प्रकारकी मिट्टी चढ़ाई और फिर उस मूर्तिको भट्टीमें रख दिया । इससे मोम पिघल गया और मिट्टीके दोनों पत्तोंके बीचमें कौसा बलनेकी पोली बगह हो गई । इस प्रकार उसने सीधा तैयार कर लिया, जब मूर्तिका ढालना बाकी रह गया ।

जिस मिट्टीमें यह मूर्ति बलनेवाली थी उसके नीचे एक गड़ा बनाया गया था । इस गड़ेमें कॉमेकी धातुयें रख दी गईं और उनका पिघला हुआ रस बारीक बलियोंके द्वारा मौचेकी पोलमें जानेका बरत कर दिया गया ।

धातु गलानेके लिए पहलेहीसे बहुतसा ईंधन इकट्ठा कर लिया गया था । भट्टीमें जब आग जलाई गई तब उसने इतना जोर दिखाया कि बूकानमें आग लग गई और छप्परका कुछ भाग जल गया । इसी समय भौंधी आ गई और मोह भी बरसने लगा । इससे गर्मी कम हो गई और धातुयें न गल सकीं । सैलिनी घंटोंतक ईंधन पर ईंधन झाँकता रहा और आगको प्रश्वलित करता रहा, परन्तु तिनती आँच चाहिए इतनी नहीं पहुँच सकी । वह ऐसा पक गया और बीमार हो गया कि उसे अपने कार्यकी मिद्धिमें संदेह होने लगा । उसने हाथार हाँक कर इस कामको नीकरोंके सुपुर्द कर दिया और आग चार-

पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें फ्लैक्समैन सरकारी कलाभवन या रायल ऐकादेमीमें भरती हो गया । यद्यपि वह औरोंमें अधिक मेल-जोल रखनेवाला न था, तथापि सारे विद्यार्थी उसे जान गये और उससे यड़ी यड़ी आशायें करने लगे । उनकी आशायें सफल भी जल्दी हुईं । पहले ही वर्ष उसे एक चाँदीका पदक मिला और दूसरे वर्ष वह सोनेका पदक प्राप्त करनेके लिए परिश्रम करने लगा । सभी लोगोंका यह विश्वास था कि सुवर्णपदक फ्लैक्समैनको ही मिलेगा; क्योंकि योग्यता और परिश्रममें उसमें बहुत कुछ कोई न था । परन्तु इस बार उसे सकलता न हुई, वह पदक ऐसे विद्यार्थीको मिला जिसका कि फिर कभी नाम भी न सुन पड़ा । युवा फ्लैक्समैनकी यह असफलता उसके लिए उलटी लाभदायक सिद्ध हुई । क्योंकि परास्त होनेपर हठमंक्ली मनुष्य निराशा नहीं होते, उनकी अन्तःशक्तिकी उष्णता घोट साकर और भी अधिक जोशमें बाहर निकल पड़ती है । उसने अपने पितासे कहा कि "मुझे समय दीजिए । अब मैं ऐसे ऐसे काम करूँगा कि जिनकी प्रशंसा करनेमें स्वयं रायल ऐकादेमीको अभिमान होगा ।" इसके बाद उसने दूना और चाँगुना परिश्रम करना शुरू कर दिया । उसने कोई भी तदपीर उठा न रखी । चित्र बनानेका काम वह लगातार करने लगा और धीरे-धीरे उसने बहुत अच्छी उन्नति कर ली । इसी बीचमें उसके पिताकी आर्थिक अवस्था बहुत खराब हो गई । मिट्टीके मॉर्चोंके व्यापारसे उसका निर्वाह होना बटिन हो गया । युवा फ्लैक्समैन नहीं चाहता था कि मैं अपने चित्रविद्याके परिश्रमको कुछ कम करूँ; परन्तु उसने हृदयको दृढ़ रखता और स्वार्थत्याग करके अपने अभ्यासके समयको कम करके पिताके काममें सहायता देना शुरू कर दिया । उसने होमरके काव्यको पढ़ा दिया और उसके बदले अपने हाथमें बची ले ली । "मेरे पिताका और मेरे माते बुटुम्पका पोषण जिस व्यापारसे हो, वह मुझे सुतीसे करना पारिए; इस बातकी चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं कि वह व्यापार जिनकी हलकी बिस्मका है । जैसे बने तैसे दरिद्रताको पास न पटकने देना ही मेरा काम है ।" व्यापारके सम्बन्धमें वह अकसर यही बात बरता था । बहुत समय तक उसे इसी तरह अपना समय खोना पड़ा, परन्तु इससे उसे लाभ भी हुआ । वह स्थिरतापूर्वक काम करनेका आदी हो गया और उसमें धैर्यगुणकी वृद्धि हो गई । इस तरह मन्वोनिग्रह



## स्वायलभ्यन ।

वीररसपूर्ण काव्य छाकर उसे दे दिया । लड़का उसे बड़े चावसे पढ़ने लगा उसने मन-ही-मन संकल्प किया कि मैं भी इन वीरोंके चित्र भंकिन करने लगूँगा ।

जैसी सब पुवकोंकी प्रथम चेष्टायें होती हैं वैसी ही फ्लैक्समैनकी रचना भी हुई । जब वे एक चित्रकारको दिखाई गईं तब उसने उनसे बड़ी नास मोह सिकोड़ी । परन्तु फ्लैक्समैन इतनेवाला न था; उसमें यथेष्ट उत्साह और धैर्य था । उद्योगशील भी वह पूरा था । वह पुस्तकें पढ़ने और चित्र बनानेमें निरन्तर परिश्रम करता रहा । उसने चीनी मिट्टी, मोम और मिट्टीसे खिलौने बनानेमें अपनी बालबुद्धिका उपयोग किया । उसके बनावे हुए बहुतसे खिलौने अबतक रखे हैं—इस लिए नहीं कि वे उत्तम हैं, बल्कि इन लिए कि प्रतिमाशील मनुष्योंके धैर्यपूर्वक किये हुए प्रारम्भिक कार्य कैसे हुआ करते हैं, लोग यह देख सकें । वह बहुत दिनोंके बाद चलनेके योग्य हुआ और लकड़ी आदिके सहारेके बिना यहाँ वहाँ आनेजाने लगा ।

पादरी मैथ्यूज बड़ा परोपकारी पुरुष था । उसने इसे अपने घर पर बुलाया । मैथ्यूजकी स्त्रीने इसे होमर और मिल्टनके काव्य समझाये और इसे इसकी स्वशिक्षा या आरमावलम्बिनी शिक्षामें भी सहायता दी । ग्रीक और लैटिन भाषायें भी इसे सिखाई जाने लगीं । इस विषयके पाठ वह अपने घर याद करता था । धैर्य और अध्यवसायपूर्वक परिश्रम करनेके कारण चित्र-विद्यामें भी उसने खूब उन्नति कर ली । वह इतना निपुण हो गया कि एक स्त्रीने उसे होमरकी रचनाओंके आधारपर छह नवीन चित्र बनानेका काम सौंपा । सबसे पहला काम उसे यही मिला था, इस कारण यह उसके जीवनकी बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी । काश्टरकी पहली कीस, बक्रीलका पहला मेहनताना, कानून बनानेवाली सभाके मेम्बरका पहला स्वाकथान, राजमन्त्रपर गायकका पहला गान, और लेम्बककी पहली पुस्तक जिस प्रकार बहुत ही स्मरणीय और जीवनकी बहुत ही महत्वपूर्ण घटना होती है, उसी तरह इस चित्रकारके लिए भी यह कार्य था । इस लिए उसने इसमें पूरा परिश्रम किया और उस अच्छी सफलता हुई । चित्रोंकी खूब प्रशंसा हुई और पुरस्कार भी अष्टा मिला ।

## शिल्पकार ।

पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें फ्लैक्समैन सरकारी कलाभवन या रायल ऐवाटे-  
मीमें भरती हो गया । यद्यपि यह औरोंसे अधिक मेल-जोल रखनेवाला न  
था, तथापि सारे विद्यार्थी उसे जान गये और उससे बड़ी बड़ी भाषाओं करने  
लगे । उनकी भाषाओं सफल भी जल्दी हुई । पहले ही वर्ष उसे एक चौदीका  
पदक मिला और दूसरे वर्ष यह सोनेका पदक प्राप्त करनेके लिए परिश्रम  
करने लगा । सभी लोगोंका यह विश्वास था कि सुवर्णपदक फ्लैक्समैनको  
ही मिलेगा; क्योंकि योग्यता और परिश्रममें उसमें यत्नकर कोई न था ।  
परन्तु इस बार उसे सफलता न हुई, यह पदक ऐसे विद्यार्थीको मिला  
जिसका कि फिर कभी नाम भी न सुन पड़ा । युवा फ्लैक्समैनकी यह अस-  
फलता उसके लिए उलटी लाभदायक सिद्ध हुई । क्योंकि परास्त होनेपर  
हृदयकलरी मनुष्य निराश नहीं होते, उनकी अन्तःशक्तिकी उष्णता घोट खाकर  
और भी अधिक जोशसे बाहर निकल पड़ती है । उसने अपने पितासे कहा कि  
“मुझे समय दीजिए । अब मैं ऐसे ऐसे काम करूँगा कि जिनकी प्रशंसा पर-  
भेमें स्वयं रायल ऐकाडेमीकी अभिमान होगा ।” इसके बाद उसने दूना और  
चौगुना परिश्रम करना शुरू कर दिया । उसने कोई भी तद्वीर उठा न  
रखती । पित्र बनानेका काम यह लगातार करने लगा और धीरे-धीरे उसने  
बहुत अच्छी उन्नति कर ली । इसी बीचमें उसके पिताकी आर्थिक अवस्था  
बहुत खराब हो गई । मिट्टीके सौंघोंके व्यापारसे उसका निर्वाह होना काठिन  
हो गया । युवा फ्लैक्समैन नहीं चाहता था कि मैं अपने पित्रविद्याके परिश्र-  
मको कुछ कम करूँ; परन्तु उसने हृदयको रूढ़ रखी और स्वार्थत्याग करके  
अपने अभ्यासके समयको कम करके पिताके काममें सहायता देना शुरू कर  
दिया । उसने होमस्के कामको पक़ दिया और उसके बदले अपने हाथमें  
बर्तन आ ली । “मेरे पिताका और मेरे सारे बुदुग्गका पोषण जिस व्यापारसे  
हो, वह मुझे नृत्तामें करना चाहिये, इस बातका चिन्ता करनेकी जरूरत  
नहीं है । यह व्यापार बिलना हल्का कामका है । जैसे बने तैसे दूरिद्रताको  
नहीं नष्ट करता है । व्यापारमें सम्बन्धमें यह अकस्मा  
नष्ट करता है । बहुत समय तक उस इसी तरह अपना समय खोता  
रहा । उसका नाम जाना ही हुआ । वह तद्वीरपूर्वक काम करनेका  
आदर रखता था । उसमें धैर्य, शक्ति बूझि हो गई । इस तरह मनोनिध

## स्वायत्तच्यन ।

करनेकी कमरत पड़ने लो उसे कठिन मालूम हुई होगी; परन्तु धनमें उसे समझे लाभ बहुत हुआ ।

सौभाग्यसे फौजदारीके विप्रचारुपकी बात जोरिया बेगपुरके कानों तक जा पहुँची । उसे चीनी मिट्टी और मिट्टीके बर्तनों पर अच्छे अच्छे चित्रोंके बमूने बनानेके लिए फौजदारीमें जैसे गुप्तकी बड़ी भारी जमान थी । उसने इस युवा विप्रचारको अपना सब काम सौंप दिया और यह बड़ी कुशलतासे उसे करने लगा । फौजदारीमें जैसे कुशल कारीगरको यद्यपि इस तरहका काम कुछ मालूम होता होगा, परन्तु वास्तवमें देखा जाय तो यह ऐसा न था । सामूची प्यासी, मुराहियाँ अथवा ऐसे ही अन्य छोटे बर्तनोंपर जो विप्रचार्य किया जाता है हमारी समझमें वही इस व्यापारका सदा काम करना है । क्योंकि जो बर्तन लोगोंके प्रतिदिनके काममें आने हैं, लाने-पीने उठने-बैठने हर समय तिनकी जरूरत पड़ती है, उनके प्रायः विप्र लोगोंके लिए इस सिपाही निशानके माखन बन आने हैं, इनका ही नहीं बल्कि इनकी निजी गुंवारकी निशानमें भी वे बहुमूल्य सहायता देखावे हो आने हैं । तिन निशानकारको अपनी उच्चरिती बहुत बड़ी आकांक्षा है वह कोई भी बहुपरिग्रम-साध्य बहुमूल्य चीज बनानेकी ओर आ इन छोटी छोटी चीजोंको बराबर अपने देशवासियोंको अधिक व्यावहारिक लाभ पहुँचा सकता है । अपनी इन कृति-योंने यह अपने लक्ष्य देशवासियोंको गुणवत्ता निशान दे सकता है, जब कि वही चीजकी जो कोई थंका बनाया लगीर कर अपने मूल्य वस्तुसंग्रहमें रख लेता है वहाँ उसे अवकाशान्त तो देल भी नहीं सकते । बेगपुरके समयके पहले मूल्यमें चीनी और मिट्टीके बर्तनोंके आकार और उनके प्रायः विप्र बड़े बड़े होते थे । इसलिए उगरे इन नीची बातोंमें उच्चरि कारेका रस संकल्प कर लिया था । उसके इस संकल्पको कार्यमें लीला करनेके लिए फौजदारीमें तिनका सब सदा इनका प्रयत्न किया । वह बेगपुरको समय वस्तुसंग्रह अथवा प्रचारक मिट्टीके बर्तनोंके मध्य में एक बड़ा बड़ा देना था जो वह वास्तविक कारणों और इतिहासके कारण पर निर्भर करता था । इन-मध्य बहुमत सब ही धीरे-धीरे जो लीला जो मादलीय इसका कारण बनाय हुए वास्तविक मध्यमके प्रचार है । इतिहासकारोंके प्रसिद्ध बर्तन तिनके मध्यम वास्तविक कारणोंके कारण वास्तविक प्रचार वास्तविक वास्तविक कारणोंके कारण

तारोंके समान, प्राचीन कारीगरीकी नकलें बना-  
ता । वहाँ जितने अंगरेज यात्री आते थे, वे सब  
और जो कुछ काम बनवाना होता था इसीसे  
उसने होमर आदि बहियोंके प्रयोगोंके आधारपर  
नाचे और उन्हें बहुत ही सरले दानोंपर बेचा ।  
(गमना १२) रु० मिलता था । परन्तु यह केवल  
रूपोंके और अपनी पत्ताकी उत्तम बनानेके लिए  
उसके चित्रोंपर लोग मुग्ध होने लगे और उसके  
इसी समय उसने बड़े बड़े आदिमियोंकी 'पर-  
अमण' आदिके प्रसिद्ध चित्र बनाये । यह अपने घर  
था कि इसी समय फ्लोरेंस और वरांसाकी वरग-  
मण बना लिया ।

उस समय भी पहले पहुँच गए थी, इस कारण उसे  
ना काम मिल गया । उसने तब मैम्सफील्डकी याद-  
नाई जो 'थेयर मिनिस्टरमें' आज भी वहाँ एतानके साथ  
जनेकी बर्तिका प्रसिद्ध कर रही है । उस समयके समयमें  
हम मूर्तियों देखकर बता था " यह छोटा मनुष्य तो  
... ! "

उसीके सभासदोंने फ्लोरेंसमेंके आनेका हाल सुना और  
मैम्सफील्डकी मूर्ति देखी, तब उन्होंने उसे बड़े आदरके  
से लिया और यह एक प्रख्यात पुरुष बन गया । यह  
दुबान-जिमने सीधे बेचनेवालेकी दुबानमें चित्र बनानेका  
एक सलाहदायक आचार्य समझा जाने लगा और सादर-  
लिया गया ! उसमें बटकर और बोई

ता और ... करने अनक प्रकारके  
... की ... विज्ञान प्राप्त की  
... की ... दूसरी नहीं दी

स्याद्यलम्बन ।

कार नहीं हो सकता जब तक कि यह रोम और फेलोस बगोंमें जाकर भाग  
कल ऐंजीलो आदिकी धनार्हे हुई अनमोल वस्तुओंको न देल के । वेनाइस  
इन सिद्धांतोंको सभी जानते थे । इनका निग्रह करके फेलिक्समैनने कहा “औ  
मेरी इच्छा नाभी निष्पकार होनेकी है । ” पानीने कहा-“ आप नाभी निष्प  
कार अथवा वनों और रोमनगर भी जल देनंगे । ” पानीने पूछा, “ परम  
यह कैसे हो सकता है ? मेरी तो आर्थिक अवस्था इनकी अच्छी नहीं है ।  
पानीने कहा, “ काम करो और मिलजुलकी बनो । मैं हममें हर तरह सहा  
यता देनेके लिए तैयार हूँ । मैं यह नहीं चाहती-कोई यह न कहे कि तुम  
जान फेलिक्समैनकी चित्रविद्यामें उन्नति न होने की । ” इसके बाद उन दोनों  
द्विज धन जमा हो आनेपर रोम जानेका वक्रा विचार कर लिया और  
फेलिक्समैनने कहा, “ मैं रोम जाऊंगा और वेनाइसको दिवशाऊंगा कि क्या  
पुनराकी हानिके लिए नहीं किन्तु कामके लिए होता है; प्यारी पुन, तुम में  
माय चाहता । ”

इस प्रतीति जोड़ने अपने साधारण घरमें लौंच करने के लिए और आनन्द के साथ व्यवहार कर दिये। परन्तु रोम जानेकी बात उनके सामनेसे कभी एक घड़ी भरके लिए भी दूर न हुई। उनका एक पैसा भी आनन्द के हाथोंकी छोड़कर निरवेक लचके न होता था। अपने संकल्पका उन्होंने किसीसे छिपे भी न दिया। राखल पेचारेमीने भी उन्होंने सहायता न माँगी, वे अपने धर्म, परिश्रम और मेहनत पर ही भरोसा रखते थे। इस बीचमें क्लैकमर्मनन बहुत ही छोटे चित्र बनाकर बेचते। मरीन कसियन चित्रोंके लिए संग्रहकर्ता बान्तिन, परन्तु उसके पास इनका दाम न था कि जिससे संग्रहकर्ता खरीद सके। इस लिए उसके पास जो कीर्तिसूचक बनानेके आईर हथौता होने लगे, उन्हें ही बनाकर वह अपना निर्वाह करता था। इस समय भी वह क्लैकमर्मनन का काम किया करता था, क्योंकि वह मजदूरीका पग हाथोंसे दे देता था। राखल वह कि इसकी वास्तवता तबोतब बतानी लगे और वह मुझ आगे और हमसंग बान्तिन बना गया। इसकी प्रशंसा भी निरन्तर दिन बतानी लगे। कहा कि आज इसका पग न मिला करने लगा और अपने समान काम करनेवाला इन का।

[illegible]



फैसलमेनने बहुत वर्षों तक मुश्किल और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत किया । बुढ़ापेमें उसकी प्यारी स्त्री चल बसी, जिसका उसे बड़ा दुःख हुआ । इसके बाद वह और भी कई वर्ष जीता रहा और इस बीचमें उसने अपने दो सबसे अधिक सुन्दर और भावपूर्ण चित्र बनाये ।

बहुतसे शिल्पकारोंको सफलता प्राप्त करनेके पहले बड़े बड़े कष्ट उठाने पड़े हैं जिनसे उनके साहस और सहनशीलतादि गुणोंका पूरा पूरा परिचय मिलता है । मार्टिनको अपने जीवनमें बहुत ही असह्य कष्ट सहने पड़े थे । जब वह अपना पहला बड़ा चित्र तैयार कर रहा था, तब उसपर कई बार भूखों मरनेतकड़ी नीशत आ गई थी । कहते हैं कि एक बार उसके पास केवल एक रुपया रह गया था । इसे उसने उसकी चमकके कारण रस छोड़ा था । इस रुपयेको लेकर वह एक रोटीशालेकी दुकान पर गया और एक रोटी मोल लेकर जब वह जाने लगा तब दुकानदारने उससे वह रोटी छीन ली और वह रुपया उस चित्रकारके मिरमें फेंककर भागा । इस तरह उस चमकदार रुपयेने उसे जरूरतके बन्ध छोड़ा दिया—वह सोटा निकला । भूखा चित्रकार घर आया और अपने सन्तुकको साइडर देसने लगा कि उसमें कोई दो बार दिनका सूना सूना रोटीका टुकड़ा मिल जाय तो मूल कुछ शान्त हो जाय; पर खेद कि वह भी न मिला । मार्टिनमें उसाहकी बड़ी ही जयशालिनी शक्ति थी । वह अपना काम वैसे ही उद्योगके साथ करता रहा । उसमें काम करते रहने और प्रतीक्षा करने रहनेका संघेष्ट चल था । जब उसका यह चित्र बनकर तयार हो गया और लोगोंने उसे देखा, तो उसकी बड़ी ही प्रसिद्धि हुई । और और प्रसिद्ध चित्रकारोंके समान उसका जीवन भी वही शिक्षा देता है कि परिस्थितियाँ चाहे जैसी कुरी हों; परन्तु प्रतिभा, परिश्रम और उद्योगकी सहायतासे एक न एक दिन अवश्य सफलता होती है । गुणी मनुष्यको अन्तमें अवश्य ही स्यानि मिलती है चाहे वह देरमें ही मिले ।

जब तक शिल्पकार स्वयं अपने काममें विल नहीं लगाता है तब तक पाठशालाका उत्तमम उत्तम शिक्षा और शासन उसको शिल्पकार नहीं बना सकन । उसका अपनी शिक्षा भाग ही करना चाहिए । स्वाशिक्षाके बिना कुछ बड़ा न सकता । जब पुगिन अपने अपना क पास रहकर घर बनानेकी कलामें





यह कह देना काफी है कि आर्यजातिका प्राचीन इतिहास उत्साह और वीरताके उदाहरणोंसे भरा पड़ा है । परन्तु अब वही आर्यजाति उत्साहशून्य हो गई है । अंगरेज इत्यादि जातियोंमें उत्साहकी मात्रा बहुत बड़ी हुई है और वही गुण उनकी उन्नतिका कारण है । उत्साह और साहसकी कमी ही हमारी हीनताका मुख्य कारण है ।

अपने उत्साहको बढ़ाते रहना बहुत जरूरी है । सचरित्रका आधार हमी बात पर है कि हम अच्छे कामोंके करनेकी प्रतिज्ञा करें । उत्साह मनुष्यको बड़ी बड़ी सुभीतोंमेंसे निकाल कर ऊपर उठाता है और उन्नतिके मार्गपर चलाना है । प्रतिभाशाली मनुष्यकी अपेक्षा उत्साही मनुष्य जियादा काम कर सकता है और उसे भारी भी बिरासा तथा भयका सामना नहीं करना पड़ता । किसी काममें सफलता पानेके लिए सुयोग्यताकी उतनी आवश्यकता नहीं है जितनी संकल्प शक्तिकी है । कोरी काम करनेकी शक्तिसे ही काम नहीं चलता, किन्तु उत्साहपूर्वक लगातार मेहनत करनेकी इच्छा भी होनी चाहिए । इच्छा करनेकी शक्ति मनुष्यके चरित्रबलका केन्द्र है, या मैं कहिए कि वह मनुष्यका सर्वस्व है । इसी शक्तिसे आदमी काम करनेमें लगा रहता है और उसकी हर एक चेष्टामें जान सी आ जाती है । सबी आशा उसीपर निर्भर है—और जीवनको सर्वोत्तम बनानेवाली चीज आशा ही है । निरुत्साही मनुष्यका दुनियाँमें कहीं भी ठिकाना नहीं । दिलकी मजबूतीके बराबर दूसरा गुण नहीं । चाहे मनुष्यका प्रयत्न निष्फल भी चला जाय, तो भी उसे इस बातमें संतोष मिलेगा कि मैंने क्याशक्ति प्रयत्न किया । जो मनुष्य धीरज रखकर सुभीतोंको झेलता है, ईमानदारी पर आरुढ़ रहता है, और कठोर दुस्ममें पड़कर भी अपने उद्योगके बलपर बढ़ा रहता है, उसे देखकर तीन मनुष्योंमें भी उत्साह और ईर्ष्य पैदा होता है ।

परन्तु केवल इच्छा करते रहना युवकोंके मस्तिष्कको रोगी बना देता है; इच्छाओंको शीघ्र ही कार्यरूपमें परिणत करना चाहिए । एक बार किसी अच्छे कामका इरादा करके उसे बिना हिचकिचाये तुरन्त ही पूरा कर डालना चाहिए । जीवनकी भ्रष्टाचार परिस्थितियोंमें कह और मेहनतकी लड़ाईके साथ सह लेना चाहिए, क्योंकि ऐसा करनेसे अत्यंत उत्तम और उपयोगी शिक्षा मिलती है । जीवनमें शरीर अथवा मस्तिष्ककी मेहनतके

दिना कोई काम निश्च नहीं हो सकता । काम करनेमें बाधों मुँह व मोड़ना चाहिए । उत्साहपूर्ण होकर ही काम भी नहीं हो सकता ।

उत्साहपूर्वक काम करने बिना कोई महान् कार्य काम नहीं हो सकता । मनुष्यकी उन्नति मुख्य करके अपनी हृष्टामें उत्साह करने और बलिदानोंका सामना करनेमें होती है और यह जानकर आश्चर्य होता है कि यद्यपि वे बातें जो देखनेमें असंभव सी मान्य होती हैं ऐसा करनेमें संभव हो जाती हैं । तीसरा आता स्वयं एक ऐसी चीज है कि यह संभव बाँटोंको प्रत्यक्ष कर दिखती है; हमारी हृष्टामें प्रायः उन बाँटोंकी सुषर होती हैं जिनको हम कर सकते हैं । परन्तु स्वयं और बाँटोंके मनुष्योंके साथ यह बात नहीं होती । ये हर एक कामकी असंभव बातें हैं जिनका मुख्य कारण यही है कि यह काम उनको असंभव सा लगता है । प्रायः एक मौखिक शक्ति अपने कमरेमें घूम घूम कर कहा करता था कि "मेरी प्रवृत्ति हृष्टा है कि मैं प्रायः काताँ और एक प्रविष्ट सेवागति हो जाऊँ ।" उसके यह तीस हृष्टा उसकी मरुस्थलमें अत्यन्त दुर्लभ । मनुष्य ही यह दुर्लभ एक सुमनित सेवागति हुआ और अन्तमें प्रायः काताँ हो गया ।

हृष्टामें कुछ ऐसी शक्ति होती है कि उसके द्वारा मनुष्य जो होना चाहे वही हो सकता है, अपना जो करना चाहे वही कर सकता है । एक संन्यासी कहा करता था कि "ऐसा तुम चाहो ऐसा ही बन सकते हो, क्योंकि हृष्टा-शक्तिका दैविक साथ ऐसा घनिष्ठ संबंध है कि हम सब दिखनेकी कुछ हदोंकी हृष्टा कर वही हो सकते हैं । ऐसा कोई नहीं है जिसकी दृष्टि हृष्टा आकाशकी, सौरी, नक्षत्रोंका उद्गार होनेकी हो और वह ईश्वर ही न हो ।" कहते हैं कि एक समय एक बहुत बड़ा व्यापारिक जहाज अफ्रीका के अधिक सागरमार्गके साथ घना रहा था । होकर जहाँ जहाँ जहाज था उसमें उत्साह दिया कि मैं इसे अधिक सागरमार्गके साथ घना रहूँगा । कि जब उस समय तक सागर न हो उठा वह कि मैं जहाँ तक जाऊँ । प्रवृत्ति बात है कि वह बहुत जल्दी जहाजका हृष्टा ही था । जहाँ जहाँ जहाजका हृष्टा ही था । जहाँ जहाँ जहाजका हृष्टा ही था । जहाँ जहाँ जहाजका हृष्टा ही था ।



मार काम करनेमें स्वतंत्र ही नहीं वह किसी निश्चित मार्ग पर कैसे चल सकते हैं ? निश्चय किस कामके होने यदि सब लोगोंने यह विश्वास न होता कि अनुपम उनका पालन कर सकते हैं और करते हैं । शन शन पर हमारा अंतःकरण यही बढता है कि इच्छा स्वतंत्र है । इच्छा ही एक ऐसी चीज है जिसपर हमें पूरा अधिकार है और उसको शुभ अशुभ मार्ग पर चलाना हमारे ऊपर पूर्णतया निर्भर है । हमारी भाइयें अथवा हमारी इच्छाएँ हमारी स्वामिनी नहीं हैं बल्कि हम उनके स्वामी हैं । उनके फंदेमें हमेंनेके समय भी हमारा अंतःकरण कहता है कि हम उनसे दूर भाग सकते हैं और अगर हम उनके स्वामी बननेकी प्रतिज्ञा करें, तो हम कामके लिए उनसे ही रद्द संरक्षणकी आवश्यकता है जिनका हममें मौजूद है ।

एक विद्वान्ने एक बार एक नव युवकसे यह कहा था—“हम उम्मीद तुमको हर एक काम निश्चय कर लेनी चाहिए; नहीं तो तुम पीछे पटनाओगे कि मैंने अपने पैरोंमें अपने आप कुरहाड़ी मारी । इच्छा एक ऐसी चीज है जो अचल सुगमतासे हमारी भाइयोंमें दायित्व हो जाती है । हम लिए रद्द इच्छा करना सींगों और उस पर अटक बने रहो । हम रीतिमें अपने अनिश्चित जीवनको प्रशिक्षित बनाओ और जिस तरह हवा चलनेसे सूखी पत्तियाँ उड़नी पिराती हैं उस तरह अपने जीवनको दायित्वमय बन होने दो । ”

एकमहानुभाव मनुष्य था कि युवक जैसा बनना चाहे बहुत कुछ किया ही सब सकता है, यदि वह प्रतिज्ञा कर ले, और उस पर अग्रगुरु रहे । उसने अपने युवकों एक बार यह लिखा था—“तुम अब जीवनकी उस धेनी पर आगये हो जहाँमें तुम्हें दाने बरसे मुहना है । तुमको अब हम दातके मुहना अवश्य देने चाहिए कि तुम निश्चित निदसोंके अनुसरण चलने हो, रद्द संरक्षण कर सकते हो और तुममें मनोबल है । नहीं तो तुम आलसी बन जाओगे और तुम्हारा स्वभाव और चरित्र दायित्वमय तथा निश्चय युवकोंका था हो जायगा और सब बात हमारा निरंतर विर उठना सुगम न होगा । मुझे विश्वास है । रद्द अवश्य अवश्य बहुत कुछ अपनी इच्छानुसार बना सकता है । मैं

“तुम्हारे पास काम है” मैं बहुत ही कम और मैं जीवनकी सब उच्चति

“तुम्हारे पास है” मैं बहुत ही कम और मैं जीवनकी सब उच्चति







## उत्साह और साहस ।

रुग्ण भी स्वयं न्यो देनेमें आसक्तिको आनेका मौका मिल जाता है। मैंने आदि-याशायोंको केवल इसी पत्रहमें हरा दिया कि उन्होंने समझकी कदर कभी न की। जब वे अपना समय स्वयं रीशाने लगे तभी मैंने उनको परास्त किया।”

चिटली सदीमें अनेक अंगरेज अफमरोंने भारतपर्यमें बड़ा उत्साह और साहस दिखाया था। सर चार्ल्स नेपियरमें बहुत साहस और भयंकर था। उन्होंने एक बार केवल दो हजार सैनिकोंमें, जिनमें केवल चार सौ अंगरेजी सिपाही थे, पैंतीस हजार बलखान् और राजपूतारी बन्दूकियोंका मुकाबला किया। यह सचमुच बड़े साहसका काम था, परन्तु नेपियरको अपने ऊपर और अपने आदिमियोंपर भरोसा था। बन्दूकियोंकी सेना कुछ ऊँचे पर थी। नेपियरने उस सेनाके मध्यभाग पर आक्रमण किया। तीस घंटों तक घोर युद्ध होता रहा। नेपियरकी छोटी सेनाके हर एक सैनिकने बड़ी शूरवीरता दिखाई; क्योंकि उन समयमें अपने सेनापतिको सा जोर भरा हुआ था। बन्दूकी बीसगुने होनेपर भी भगा दिये गये ! युद्धमें ही नहीं किन्तु सभी कामोंमें इस तरहके साहस, दृढ़ता और आग्रहसे कामयाबी होती है। कुछ ही अधिक साहस करनेसे पाजी मारी जाती है; थोड़ा ही और आगे बढ़नेसे मोरचा जीत लिया जाता है; पाँच मिनिट तक और धीरता दिखानेसे लड़ाईमें विजय होती है। चाहे तुममें शक्ति कम हो, परन्तु तुम अपने शत्रुकी बराबरी कर सकते हो और उस पर विजय पा सकते हो, यदि तुम अधिक एकाग्रचित्त हो कर कुछ देर तक और लड़ते चले जाओ। एक किसानके लड़नेने अपने पितासे यह शिकायत की कि “मेरी तलवार छोटी है,” पिताने उत्तर दिया कि “एक कदम बढ़ कर मारो।” यही बात जीवनके हर कामके निष्पत्तिमें कही जा सकती है।

बारन हमीरने चित्तौड़का उद्धार साहस और दृढ़ संकल्पसे ही किया। जिसका नाम था कि यह बालक जो केवल नामका राजा था—जिसके पास न धन था न सैन्य था और न राज्य था—ऐसे बड़े कामको कर सकेगा? परन्तु वह उत्तम उद्योग और साहसका विधायक था। साहस बड़ी चीज है। साहस ही सत्यका विजयान्तात्मको अन्त जान सौ सैनिकोंके साथ आग्रहका बड़ा काम करने में सफल कर सका। लड़ाया गया और राजा प्रतापका कुछ नर राजपूतोंके बलपर मुगलोंकी







## स्वायलम्बन ।

बहुरूपियेको इनाममें दे दी । सम्राट् अकबरने बालकजी इस बचुराई और गुणग्राहताको देखकर बड़ी प्रमत्तता प्रकट की और वीरबलको अपने पक्षी नौकर रक्ख लिया । यह कथा ठीक हो या न हो, परन्तु यह निश्चय है कि वीरबल छोटी उम्रमें ही बादशाहके पक्षी नौकर हो गये थे । वीरबलने अपने काममें और विशेष कर अपनी हाजिर-जगामीने बादशाहको थोड़े ही समयमें शिक्षा लिया ।

वीरबलने युद्ध-कौशल भी सीख लिया । वे कई बार युद्धपर भेजे गये और बादशाहने उनके साहस और वीरताकी भूरि भूरि प्रशंसा की । सन् १५८५ ईसवीमें वे युमुजुजई पट्टानोंमें युद्ध करनेके लिए भेजे गये । इसी युद्धमें वीरबल काम आये । बादशाहको उनकी सृष्टिसे जो शोक हुआ यह अकथनीय है । वीरबल कबिता भी अच्छी करते थे और बादशाहने उनको कबितापक्षी पदवी दी थी । बादशाहने उनको एक जागीर भी दी थी । बादशाह वीरबलको इतना चाहते थे कि वे उनको कभी अपनी आँखोंके सामनेसे दूर न करने थे ।

और बातोंमें भी जो युद्धमें अधिक शामिल हुए और लाभदायक हैं अनेक अनुषंगोंने कुछ कम उल्लाह और साहस नहीं दिखलाया । जिस तरह वीर योद्धाओंका स्मरण किया जाता है उसी तरह धर्मोपदेशकों और उपकारकर्ताओंको भी न भूलना चाहिए । हम भारतवर्षमें ही स्पर्श देनेने हैं कि हमारे धर्मोपदेशक कितना स्वार्थत्याग करने हैं । वे जो कुछ करने हैं वह अपना कर्तव्य समझकर करने हैं । वे इस जगलमें काम नहीं करने कि वेमा करनेमें हमको पता मिलेगा । हजारों कोषकी दूरीमें भ्रमरेज जैसे अपने घरबार और वृद्धाश्रितोंको छोड़कर हमारे देशमें आती हैं और हमारे बच्चोंको पढ़ना, लिखना, सीना, निगेना सिखावती हैं, रोगियोंकी सेवा शुद्धा करती हैं और अपने धर्मका प्रचार करती हैं । इस कामके लिए उन्हें हम देगकी भाँसावे सीखनी पड़ती हैं । यहाँकी सल्ल गमी भोजनी पड़नी है, और अनेक कष्टोंका सामना करना पड़ना है । क्या यह उल्लाह और साहसका काम नहीं है ? यूरोप और अमेरिका जैसे दूरवर्ती देशोंके अनेक विवासी यहाँपर आने हैं और हम उनको बाजारमें खर होकर इयाई धर्मका उपदेश करने हुए भजते हैं । इन उपदेशकोम अल्प साहस और प्रत्यक्ष वीरता होता



विनोदके सामान इकट्ठा करते थे, और रोगियोंकी सेवा शुभ्रता करते थे। इसमें महाह उनमें बड़ा प्रेम करने लगे और उनको आदरकी दृष्टिमें देखने लगे ।

जब जेजिअर गोआ पहुँच गये, तब उन्हें वहाँके लोगोंकी बुरी दशा देख कर बड़ा शोक हुआ । वे गोआ नगरकी सड़कों और गलियोंमें फिरने लगे । वे अपने हाथमें एक धंटी रखते थे, उसमें बजाने जाते थे और लोगोंमें मरि-  
ज्य निवेदन करते थे कि “ आप लोग अपने बच्चोंको हमारे पाम पहुँचानेके लिए भेजिए । ” कुछ ही समयमें उन्होंने बहुतसे विद्यार्थी इकट्ठे कर लिये । उनको वे हर रोज बड़ी मायधानीके साथ पढ़ाते थे । इसके साथ ही साथ वे रोगियोंकी भी सेवा करते और दरिद्रियोंका कष्ट दूर करते थे । दुस्त्रियोंका हाल सुनने ही वे उनकी सहायताके लिए पहुँच जाते थे । एक बार उन्होंने मनारके मडली पकड़नेवालोंकी दुर्दशाका समाचार पाया । बस वे तुरन्त ही उनके पाम पहुँच गये । उन्होंने उन लोगोंको ईसाई बनाया; उनको शिक्षा दी और उनके कष्ट दूर किये ।

यहाँमें फिर वे दक्षिणकी ओर और आगे बढ़े । नगर नगर और गाँव गाँव, मन्दिरोंमें और बाजारोंमें उनकी धंटी बजती चली जाती थी । लोग उनके पास आते थे और उपदेश सुनते थे । उन्होंने अपनी धर्म-पुस्तकोंके अनुवाद कई दक्षिणी भाषाओंमें करा लिये थे और उनको कण्ठस्थ भी कर लिया था । इन्हीं अनुवादोंकी वे लड़कोंको सुनाते थे और उनको रटा देते थे । फिर लड़के घर जाकर अपने माता पिताओं और पड़ोसियोंकी वही बातें सुनाते थे । कुमारी अन्तरीपपर पहुँच कर उन्होंने तीस धर्मोपदेशक तैयार किये और उनको तीस ही गिरजेमें नियत किया । वहाँसे वे ट्रावनकोर पहुँचे और पह-  
लेकी तरह गाँव गाँव घूमकर धंटीके द्वारा लोगोंको इकट्ठा करने लगे और उन्हें ईसाई धर्मका उपदेश देने लगे । इस कार्यक्रम उन्हें बड़ी सफलता हुई । इतने लोग ईसाई होत थे कि संस्कार करने करने उनके हाथ पक जाते थे और मग्न खोलने खोलने उनका गला पड़ जाता था और उनका आवाज तक न सुनाई देता था । बादमें उन्होंने स्वयं कहा था कि मुझे इनकी सफलताका आशा स्वप्नम भा न था । उनका जीवन ऐसा पवित्र, उत्साहयुक्त और सधा-  
मचा था और उनके काम ऐसे अच्छे थे कि वे जहो जान थे वहीं लोग उनके

धर्मके समुपायी हो जाते थे । उनके हृदयमें ऐसा दयाभाव था कि जो लोग उनको देखते थे उनकी बातें सुनते थे उनमें भी दयाका संसार हो जाता था ।

यह सोचकर कि प्रयागका काम बहुत बड़ा है और काम करनेवाले कम हैं जेव्हा वहाँमें मरका और जवानको घल दिये । वहाँ उनको विलकुल नई जानियाँ मिलीं जो मर्यादा नई भावों से लकी थीं। वहाँ जाकर भी उन्होंने रोगियोंकी सेवा की और लोगोंकी ईसाई धर्माचार । वे भूख, प्यास, भय और कष्ट सहन कर लेते थे, पकने न थे । निदान ग्राह धर्मके परिश्रमके बाद जब वे घोरकी ओर जा रहे थे रास्तेमें ही उनकी जगह आ दयाया और उनके शरीरका अन्त कर दिया ।

धैरिक धर्मोपदेशक स्वामी विवेकानन्दके जीवनमें भी कुछ कम उत्साह और साहसके दर्शन नहीं होते । प्रान्तिन जेव्हाके समान वे भी एक प्रतिष्ठित और धनदाय धर्म उत्पन्न हुए थे । धर्मसंबंधी प्रभु उनके मस्तकमें सदैव उद्यत करते थे । उनको दशबगारसे बड़ा प्रेम था । बी० ए० पास करनेके पंद्रह दिन उनकी भेंट स्वामी रामकृष्ण परमहंससे हो गई । उन्हें उक्त स्वामीजी के संबंधमें अपने कुछ प्रसंग आई कि वे उनके शिष्य हो गये और उन्होंने वेदा और भी अनेक शिष्य हो गये । सन् १८८१ में स्वामीजीका देहान्त हो उनके अनेक शिष्योंने संन्यासके मुक्तिको त्याग कर उन्हींके समान स्वर्गीय करनेका संकल्प कर लिया । विवेकानन्दने भी यही संकल्प और कुछ समय बाद वे ध्यान और अध्ययन करनेके लिए हिमालय चले गये । वहाँमें वे निष्पन्नकी चले गये और कुछ समय तक वहीं ध्यानाध्यासका अध्ययन करते रहे । इनके बाद वे भारतको लौटे और जगह धर्म के वादिक धर्मका प्रचार करने लगे । जिस समय वे भारत में थे, उस समय अमेरिका के शिक्षार्थी मगरम एक महा



## उत्साह और साहस ।

विद्वान् अंगरेज स्वामीजीके शिष्य हो गये और उन्होंने स्वामीजीको वैदिक धर्मके प्रचार करनेमें बड़ी सहायता दी ।  
 सन् १८९६ के अन्तमें स्वामीजी भारतपर्यको लौट आये । यहाँ आ कर स्वामीजीने कई स्थानोंपर आश्रम बनाये और भारतवासियोंको वैदिक धर्मके प्रचारकी आवश्यकता समझाई । इस देशके निर्धन और दुरिखा लोगोंके कष्ट दूर करनेके लिए स्वामीजीने बड़ी बड़ी कोशिश की । परन्तु इतना अधिक काम करनेमें स्वामीजीका स्वास्थ्य ( तन्दुरस्ती ) बिगड़ने लगा । यहाँ उनका उनको परदेश जानेकी सलाह दी, इस लिए वे फिर इंग्लैंड गये । यहाँ उनका स्वास्थ्य बहुत सुधर गया । इसके बाद वे अमेरिका चले गये । यहाँ पहुँच कर उन्होंने 'शान्तिआश्रम' और 'वेदान्त सोसायटी' नामक दो संस्थाएँ स्थापित कीं जो अब तक सैनफ्रेन्सिसको नगरमें मौजूद हैं और खूब काम कर रही हैं ।

उसी समय फ्रान्सकी राजधानी पेरिस नगरमें एक धर्मसभा होनेवाली थी । स्वामीजीको इस सभाने निमन्त्रण भेजा, अतएव स्वामीजी पेरिस गये और यहाँपर भी उन्होंने हिन्दूदर्शनशास्त्रपर व्याख्यान दिये । इसी बीचमें स्वामीजीका स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा और वे भारत पर्यको लौट आये । परन्तु उनको अपने स्वास्थ्यका इतना खयाल न जितना अपने महान् कार्यका था । उन्होंने फ्रांसमें एक विद्यालय स्थापित किया और दीन दुस्ती लोगोंके लिए एक आश्रम बनवाया । वैदिक धर्मके प्रचार करनेके लिए उन्होंने अनेक साधुओंको इकट्ठा किया और उनके लिए एक मठ बनवा दिया । स्वामीजी अनेक भारतीय युवकोंको शास्त्रकी शिक्षा स्वयं देते थे । इसी समय जापानियोंने स्वामीजीसे चलनेके लिए बहुत बड़ा आमह किया; परन्तु स्वामीजी उनके साथ सरे । उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो रहा था । परन्तु स्वामीजीने अपने उद्देशको न छोड़ा और वे भारतपर्यमें जी तोड़ कर आये । उनका बहुत सा समय अपने शिष्योंकी शिक्षा देनेमें ही बीता । इस बड़ा परिश्रमका वह परिणाम हुआ कि उनका स्वास्थ्य खराब हो गया । सन् १९०६ ईस्वीमें उनका स्वर्गवास हो गया ।





## उत्साह और साहस ।

विद्वान् अंगरेज स्वामीजीके शिष्य हो गये और उन्होंने स्वामीजीको वैदिक धर्मके प्रचार करनेमें बड़ी सहायता दी ।

सन् १८९६ के अन्तमें स्वामीजी भारतवर्षको छोड़ आये । यहाँ जा कर स्वामीजीने कई स्थानोंपर आश्रम बनाये और भारतवासियोंको वैदिक धर्मके प्रचारकी आवश्यकता समझाई । इस देशके निर्धन और दुखिया लोगोंके कष्ट दूर करनेके लिए स्वामीजीने बड़ी बड़ी कोशिशें कीं । परन्तु इतना अधिक काम करनेमें स्वामीजीका स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) बिगड़ने लगा । डॉक्टरोंने उनको परदेश जानेकी सलाह दी, इस लिए वे फिर इंग्लैंड गये । यहाँ उबका स्वास्थ्य बहुत सुधर गया । इसके बाद वे अमेरिका चले गये । यहाँ पहुँच-कर उन्होंने 'मान्तिआश्रम' और 'वेदान्त सोसायटी' नामक दो संस्थाएँ स्थापित कीं जो अब तक सैनफ्रेन्सिसको नगरमें मौजूद हैं और रूप काम कर रही हैं ।

उसी समय फ्रान्सकी राजधानी पेरिस नगरमें एक धर्मसभा होनेवाली थी । स्वामीजीको इस सभाने निमन्त्रण भेजा, अतएव स्वामीजी पेरिस गये और यहाँपर भी उन्होंने हिन्दूदर्शनशास्त्र व्याख्यान दिये । इसी बीचमें स्वामीजीका स्वास्थ्य फिर बिगड़ने लगा और वे भारतवर्षको छोड़ आये । परन्तु उनको अपने स्वास्थ्यका इतना खयाल न आया किना अपने महान् कार्यका या । उन्होंने काशीमें एक विद्यालय स्थापित किया और दीन दुखी लोगोंके लिए एक आश्रम बनवाया । वैदिक धर्मके लिए एक मठ बनवा दिया । स्वामीजी अनेक भारतीय युवकोंको शिक्षा देनेके लिए बहुत कुछ आमद किया; परन्तु स्वामीजी उनके साथ रहनेके लिए बहुत कुछ आग्रह किया; परन्तु स्वामीजी उनके साथ नहीं रहे । उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो रहा था । परन्तु स्वामीजीने अपने उद्योगको न छोड़ा और वे भारतवर्षमें जी तो बच गये । उनका बहुत सा समय अपने शिष्योंको शिक्षा देनेमें ही बीता । इस पक्ष पर ध्यानका यह परिणाम हुआ कि उनका स्वास्थ्य बहुत खराब हो गया और सन् १९०६ ईस्वीमें उनका स्वर्गवास हो गया ।





## स्वायत्तम्यन।

कान्तका प्रोध यहाँ तक बढ़ा कि अंतमें राममोहनरायको अपने पिताका घर छोड़ देना पड़ा। सोलह वर्षकी अवस्थामें जब हमारे देशके बालक अपना समय खेल-कूद और मनोविनोदमें ही निकाल देते हैं, राममोहनरायका एक ऐसा विचारके लिए, जिसको वे सत्य समझते थे, लोकनिन्दा सहना और अपने पिताका कोपभाजन बन कर धरमे निकल जाना साधारण बड़ताका काम न था।

घर छोड़ कर उन्होंने भारतवर्षके अनेक प्रदेशोंमें यात्रा की और फिर बौद्ध धर्मका अध्ययन करनेके लिए तिब्बत पहुँचे। तिब्बतमें भी उन्होंने अपने मनको स्वतंत्र हो कर प्रकट किया। लामाओंको इस कारण उनपर बड़ा प्रोध आया और एक बार वे उनको मार डालनेके लिए तैयार हो गये। परन्तु फिर भी राममोहनराय अपने विश्वासमें तनिक भी विचलित न हुए। इस प्रकार चार वर्ष तक देशाटन करके वे स्वदेश लौटे।

इतनेपर भी उनकी धर्म-परिग्राम नहीं मिटी। इसलिए उन्होंने स्वदेशमें लौट कर ईसाई-धर्मके तत्त्वोंको जाननेका सङ्कल्प कर लिया। उस समय उनकी अवस्था २२ वर्षकी हो गई थी। इसी अवस्थामें उन्होंने अँगरेजी पढ़ा आरंभ कर दिया। अनेक अमुकियायें होनेपर भी उन्होंने अँगरेजी का ऐसा अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया कि अँगरेज भी उनकी लेखन-शैली-की प्रशंसा करने लगे। अँगरेजी पढ़ कर उन्होंने बाइबिलको पढ़ा, परन्तु फिर भी उनके मनको शान्ति न मिली। इस लिए उन्होंने हिन्दी भाषा, जिसमें बाइबिल पढ़ा पढ़ल लिखी थी, सीखा और उर्दू भाषामें बाइबिल पढ़ी। तत्पश्चात् उन्होंने लैटिन और ग्रीक भाषाएँ भी सीखीं।

कुछ समय बाद उनके पिताका देहान्त हो गया। इस लिए गृहस्थीका भार राममोहनरायपर आ पड़ा। वे गंगापुर का कलेक्टरोंमें नियुक्त हो गये और अपना गृहकार्य भी निभाने लगे। उनके अग्रजों द्वारा माहव बड़ गुरुवाही य और उनसे सदा अभिप्रायका आचरण करने के लिये, काल बाद राममोहनरायके ही जीत भाइयोंका भी देहान्त हो गया। उनका जयदान भी अब राममोहनरायके ही मिल गइ। इस जयदानसे काफी भविष्यता होना थी। इसलिए वे राममोहनराय के लिये उत्तम शिक्षा दी। ३ फरवरी १८२३ में राममोहनराय का देहान्त हो गया और उनके विचारोंका स्वतंत्रताय प्रकट करने लगा। कुछ कालमें ही

बड़े बड़े लोग उनकी विद्या, बुद्धि और शक्त के कारण उनका आदर  
होने। देहली के बादशाहने उनको राजाकी उपाधिते विभूषित किया।  
आइ राजा रामनोहरराय इंग्लैण्ड और फ्रान्स गये। यहाँके राजाओंने भी  
हें अपने घर बुलाकर उनका बड़ा सम्मान किया। अंतमें राजा रामनोहन-  
नके अनेक प्रतिष्ठ प्रसिद्ध मनुष्य अनुयायी हो गये।

## आठवाँ अध्याय।

कार्यकुशल मनुष्य।

“किया हि बलवर्हिता प्रमोदति”। — कालिदास।  
“क्या तु त्वं मनुष्यको देखता है जो अपना काम मेहनतके साथ कर रहा  
है? वह राजाओंके यहाँ सम्मान पावेगा।” — तुलसीदासकी कहावतें।  
मनुष्य अपनी मूल कला है जो कहते हैं कि “व्यापारी लोग निर-  
क्षेत्रोंके हैं और पशुके समान व्यापारकी गाड़ीमें उठे रहते हैं। उनका  
काम यही है कि एक निपट मार्गमें कमी न हो, अर्थात् लकीरके फकीर  
बने रहें और अपने हस्तक कामको अपने आप चलने दें।” हाँ, यह सच है  
कि जिस तरह अनेक विद्वानबेला, साहिबमेयी और नीतिज्ञ संकीर्ण विचारके  
होते हैं उस तरह पशुमें व्यापारी भी होते हैं, परन्तु, ऐसे भी व्यापारी हैं  
जिन्हें समझ एवं विचारवान और विस्तृत है और जो बड़े बड़े कामोंके  
तकलीफें समझकर करते हैं।

“व्यापारी” शब्द का अर्थ है वह जो दूसरोंके काममें एक काम कर  
कर दूसरोंके काममें मदद करता है। यह शब्द व्यापार के लिए प्रयुक्त है।  
व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें मदद करना। व्यापारी का काम  
है दूसरोंके काममें मदद करना। व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें  
मदद करना। व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें मदद करना।  
व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें मदद करना। व्यापारी का काम  
है दूसरोंके काममें मदद करना। व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें  
मदद करना। व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें मदद करना।  
व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें मदद करना। व्यापारी का काम  
है दूसरोंके काममें मदद करना। व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें  
मदद करना। व्यापारी का काम है दूसरोंके काममें मदद करना।









## कार्यकुशल मनुष्य ।

क युवकको याद रखना चाहिए कि उसके जीवनका सुख दूसरोंकी ता और कृपापर इतना निर्भर नहीं है जितना स्वयं उसकी शक्तियोंपर । बुद्धिमानीके साथ श्रमपूर्णक उद्योग किया जाय तो उसका उचित फल बिना नहीं रहता । ऐसा उद्योग मनुष्यको उद्यतिके मार्गपर ले जाता उसके व्यक्तिगत परिश्रमको प्रकट करता है और दूसरोंको भी काम करनेमें सहित करता है । चाहे सब लोग समान उद्यति न कर सकें, परन्तु हर-

आदमी अपनी योग्यतानुसार उद्यति अवश्य कर सकता है । यह अच्छा नहीं है कि मनुष्यके लिए जीवनमार्ग हृदसे निपादा सुगम कर दिया जाय । श्रम करवा और कष्ट उठाना इस बातसे अच्छा है कि हमारे मन को कोई दूसरा कर दिया करे और हमको सोनेके लिए गुदगुदे विस्तर मिल जाय । सच तो यह है कि मनुष्यको काम करनेमें उत्साहित करनेके लिए जीवनके प्रारंभमें जरूरतसे कम मानानका होना इतना आवश्यक है कि यह एक बार एक प्रसिद्ध व्यापारीतासे किर्माने पूजा कि "कालतमें सफलता प्राप्त करनेके लिए सबसे बड़ा साधन क्या है ?" उसने उत्तर दिया कि "कुछ लोग अपनी योग्यतासे सफलता प्राप्त करते हैं, कुछ उत्तम संबंधोंके द्वारा, कुछ दैवयोगसे, परन्तु विषादांतर ये लोग सफलता प्राप्त करते हैं जिनके पास शुरूमें एक पैसा भी नहीं होता ।"

मेहनत करनेकी जरूरतको शक्तियोंकी उद्यति और जातियोंकी सम्यक्ताकी अमली जड़ मनसखा चाहिए । यदि किसी मनुष्यकी जरूरतें बिना हाथ-पैर हिलाये ही पूरी हो जाय करें और उसको किसी पानकी प्रतीक्षा, आकांक्षा अथवा उद्योग करनेकी जरूरत न रहे, तो उस मनुष्यके लिए इससे बड़ा फल दूसरा प्राप्त हो सकता है ! यह विचार कि 'जीवनका न तो कोई उद्रेक है और न उद्योग करनेकी आवश्यकता है,' मनुष्यके लिए सब दिशा-सौंसे अधिक कष्टदायक और अमल्य होगा । देखर रहते रहते मनुष्यकी जान तक खली जाती है ।

जिन मनुष्योंकी जीवनमें असफलता होती है वे प्रायः मोले भाले बन जाते हैं और दुःख ही समझ लेते हैं कि निश्चय उनके हाथ-पैर आदमी उनसे विपत्तिका कारण हुआ है । कुछ समय हुआ, एक प्रसिद्ध लेखकने एक पुस्तक लिखी जिसमें उसने अपनी व्यापारसंबंधी अनेक असफलताओं

ज्ञान लिखा है और साथ ही यह भी स्वीकार किया है कि “ मैं पहले बड़ी जानता । ” और फिर भी उसने यह मनीषा निकाला है कि इस जमानेमें लोग धनके उपायक अधिक हो गये हैं और यही मेरी असफलताका कारण हुआ । ऐमर टाइन भी अकस्मिकसे बड़ी धृष्ट करना था और इसका मनीषा यह हुआ कि उसको अपने कामोंमें असफलता हुई और उसके धन-पेमें उसके मित्रोंने उसके निषादके लिए चेरा झूठठा किया ।

यह मनुष्य ऐसे भी हैं जो यह समझते हैं कि हमारा जन्म दुर्भाग्यके लिए ही हुआ है, मेरा हमारे विरुद्ध है, हममें हमारा कुछ अपराध नहीं । इस प्रकारके एक मनुष्यके संबंधमें हमने यह सुना है कि उसको अपने दुर्भाग्यपर बहुत विश्वास था; वह कहा करता था कि “ यदि मैं दोरी बेचनेवाला होता, तो वास्तविक बिना किसीके ही पैसा होने लगने । ” एक लम्बी कथाएव है कि “ विभिन्न मृतकोंके साथ साथ खलती है । ” यह बतुवा देना गया है कि जो मनुष्य अपने भाग्यको रोया करते हैं वे असफलमें अपनी असफलता, दुर्भाग्य, अदूरदर्शिता अथवा उद्योगहीनताके परिणाम भुगतते हैं । सुप्रसिद्ध वास्तव ज्ञानमान जब लंडन नगरमें भावे से तब उनके पास केवल एक गिनी थी । उन्होंने गन कहा है कि “ संसारके संबंधमें हमारी सब शिक्षाएँ अल्पज्ञ हैं । मैंने ऐसे किसी गुणवान मनुष्यको नहीं देखा जिसकी क्षमता हुई हो । अगर किसी मनुष्यको सफलता न हो तो समझो कि उसमें उर्ध्वका अपराध है । ”

किसी व्यक्तिको अपनी नीति बदलनेके लिए मुख्यतः इन गुणोंकी आवश्यकता है—बहादुरता, उद्योग, साधना, धीर्य, समझती ताबंदी और तन-रत्न । वे बातें जरासे जरासे छोटी मान्य होती, परन्तु वे मनुष्यके मूल और कल्याणके लिए अत्यंत आवश्यक हैं । यह सब है कि वे छोटी छोटी बातें हैं, परन्तु मनुष्यका जीवन इनसे भी छोटी छोटी चीजोंसे बनता है । छोटे छोटे कामोंसे बिक कर केवल मनुष्यका ही सर्वज्ञ बनित नहीं किन्तु प्राणीय बनित तक बनता है । बड़ी बड़ी मनुष्यों अथवा अतिशय बड़ी अथवा बड़ी ही बड़ बड़ विद्वानों कि इनका जीवनभर उद्योग छोटी छोटी चीजोंकी व्यवसायकी चालवाय दृष्टि तथा होता । इनका कार्यहीनो दुर्भाग्यमें अथवा कुछ काम करने बन्द हैं । इस लिए इनको इन कामोंके करनेकी योजना

## शाल मनुष्य ।

प्राप्त करनी चाहिए—चाहे उसे अपने घरका प्रबंध करना हो या कोई रोजगार करना हो या किसी जातिका शासन करना हो ।

उद्योग-धंधे, कलासौंदर्य और विज्ञानके संबंधमें हम बड़े बड़े कार्यकर्ताओंके उदाहरण दे चुके हैं । वे यह दिखानेके लिए काफी हैं कि जीवनके हरएक काममें निरंतर उद्योग करनेकी जरूरत है । हम रोजगारों देखते हैं कि एकप्रवृत्ति होकर छोटी छोटी बातोंपर ध्यान देनेसे ही मनुष्यकी उन्नति होती है । परिधम सौभाग्यकी माता है । यह भी बहुत जल्दी है कि हम हरएक कामकी ठीक ठीक करें । जिस मनुष्यमें यह गुण मौजूद है समस्त लोग कि उसको उत्तम शिक्षा मिली है । देख-भाल, बोल-चाल और काम-काज सभी बातें ठीक ठीक होनी चाहियें । जो काम किया जाय वह अच्छी तरह करना चाहिए । थोड़ेसे कामको भी अच्छी तरह करना इससे अच्छा है कि हम उसमें दम गुने कामको अधूरा करके छोड़ दें । एक बुद्धिमान् मनुष्य कहा करता था—“ कुछ विज्ञान भी करना चाहिए । ऐसा करनेसे काम जल समाप्त हो जाता है । ”

मूझन दृष्टि रख कर मापधानीसे काम करना बहुत ही महत्वपूर्ण गुण परन्तु हमारा बहुत कम ध्यान दिया जाता है । कुछ दिन हुए एक प्रविज्ञानज्ञे कहा था कि “ मुझे हम बातसे आश्चर्य होता है कि अथवा हमें मनुष्य बहुत कम मिले हैं जो किसी विषयको अच्छी तरह साफ समझता मचने हों । ”

व्यापारसंबंधी छोटे छोटे मामलोंमें भी हमारे मनुष्योंको अपने पक्ष में एक गाम तरीका होता है । यदि कोई मनुष्य धर्मात्मा, योग्य सहायारी भी हो, परन्तु उसमें अमापधानीकी आदत हो, धारिणी करनेकी ओर बजर न हो तो उसका कोई भी विधाम न करेगा । इसके कामको बतबत जाँचना पड़ता है और इस लिए मनुष्य का धन, उलझन और तकलीफका कारण होता है ।

हर एक कामको विधि या विधिमूर्खक करना जरूरी है । संतोषपूर्वक अधिक काम हो सकता है । तिसिलका कथन कि “ यदि संशुद्धी रखनेके समान है । अच्छा रखने के लिए संशुद्धी रखनेके समान । ” वे स्वयं भी सच

भारत की प्रजा के साथ कर लेते थे । उनका सिद्धान्त था कि "बहुतेरे कामों को करने में जानी करने का यही तरीका है कि एक व्यक्ति एक काम किया जाए ।" और ये किसी काम को हम उम्मेदवार अपना न छोड़ने थे कि अधिक भयंकरा मिलने पर उसे फिर कर लेंगे । जब उनके पास काम बहुत हो जाता था तब ये अपने भोजन और आराम करने के समय को भी काम कर देते थे, परन्तु अपने काम के किसी हिस्से को बिना किये न छोड़ने थे । डी. वि. टाटा भी यही सिद्धान्त था कि "एक व्यक्ति एक ही काम करना चाहिये ।" यह कहा करते थे । कि "अगर मुझे कुछ करना होता है, तो जब तक वह समाप्त नहीं हो जाता तब तक मैं किसी और काम का स्वागत तक नहीं करता । अगर मुझे घर का कोई काम करना हो तो मैं पहाड़ चलाकर होकर डगी में जा जाता हूँ और उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ता ।"

'भारत का काम कष्टकर कभी मत छोड़ो, यह सिद्धान्त बड़े काम का है । ' जो कहा मक उस आज कभी मत करा, ' यह उनका सिद्धान्त उन लोगों का है जो आत्मीय और निष्काम हैं । ऐसे ही आत्मीय अपना सब काम काज अपने गुमानों पर छोड़ देते हैं परन्तु गुमानों पर हमारा विश्वास न करना चाहिये—अभी की बातों की देखो तो स्पष्ट करनी चाहिये । एक अंग्रेजी कदाचित् है कि "वाले गुम आदम हो कि गुमारा काम हो जाय, तो गुम उस काम को स्वयं आकर करो, और वाले गुम आदम हो कि वह काम न हो तो किसी और को भेज दो ।" अंग्रेजी भी इसी तरह की एक प्रसिद्ध कदाचित् है कि "काम काज महा काज ।"

एक आत्मीय अंग्रेजी एक दिन कुछ अमीरों की बैठक में आसानी से आकर जाकर बैठ गया था । वह अंग्रेजी कदाचित् हो गया इस दिन, इससे जानी जाना अमीरों के दली और बड़ी अमीर एक अंग्रेजी हिमा कहते कि यह सब दिन बिना बराबर रहा है । जब काम की बात लगे तब वह हिमा कहते अंग्रेजी कहते कि हमारा गुमारा काम हो जाय, तो गुम उस काम को स्वयं आकर करो, और वाले गुम आदम हो कि वह काम न हो तो किसी और को भेज दो । अंग्रेजी भी इसी तरह की एक प्रसिद्ध कदाचित् है कि "काम काज महा काज ।"



## स्वावलम्बन ।

धारण शीघ्रताके साथ कर लेते थे । उनका सिद्धान्त था कि “ बहुतसे कामोंको सबसे जल्दी करनेका यही तरीका है कि एक दफेमें एक काम किया जाय । ” और वे किसी कामको इस उम्मेदपर अधूरा न छोड़ते थे कि अधिक अवकाश मिलनेपर उसे फिर कर लेंगे । जब उनके पास काम बहुत हो जाता था तब वे अपने भोजन और आराम करनेके समयको भी कम कर देते थे, परन्तु अपने कामके किसी हिस्सेको बिना किये न छोड़ते थे । डीविट्टका भी यही सिद्धान्त था कि “ एक दफेमें एक ही काम करना चाहिए । ” वे कहा करते थे । कि “ अगर मुझे कुछ करना होता है, तो जब तक वह समाप्त नहीं हो जाता तब तक मैं किसी और बातका खयाल तक नहीं करता । अगर मुझे घरका कोई काम करना हो, तो मैं एकामात्र होकर उसीमें लग जाता हूँ और उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ता । ”

‘ आजका काम कलपर करी मत छोड़ो,’ यह सिद्धान्त बड़े कामका है । ‘ जो कल हो सके उसे आज करी मत करो,’ यह उलटा सिद्धान्त उन लोगोंका है जो आलसी और निकम्मे हैं । ऐसे ही आदमी अपना सब काम काज अपने गुमाशतोंपर छोड़ देते हैं; परन्तु गुमाशतोंर हमेशा विश्वास न करना चाहिए—असुरी बातोंकी देखरेख स्वयं करनी चाहिए । एक अँगरेजी कहावत है कि “ यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा काम हो जाय, तो तुम उस कामको स्वयं जाकर करो; और यदि तुम चाहते हो कि वह काम न हो तो किसी औरको भेज दो । ” हिन्दीमें भी इसी तरहकी एक प्रामिद कहावत है कि “ माप काज महा काज । ”

एक आलसी जमींदारके पास कुछ जमीन थी जिसकी आमदनी लगभग आठ हजार रुपया सालाना थी । वह जमींदार कजंदार हो गया, इस लिए उसने अपनी बाकी जमीन बेच बाकी और बाकी जमीन एक मेहनती किसानको बीस वर्षके लिए किरायेपर उठा दी । जब बीस वर्ष बीत गये तब वह किसान भेतिम वर्षका किराया चुकानेके लिए आया और उसने जमींदारसे पूछा कि “ क्या आप यह जमीन बेचेंगे ? ” जमींदारने विस्मित हो कर पूछा, “ क्या तुम खरीदोगे ? ” किसानने जवाब दिया, ‘ हाँ, अगर दाम पट जाय तो ले लूँगा । ” जमींदारने कहा कि ‘ यह अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है । मुझ इसका कारण बताओ कि मग निराला इतने दूनी जमीनसे भी,





घारण शीघ्रताके साथ कर लेते थे । उनका सिद्धान्त था कि “बहुतेरे कामोंको सबसे जल्दी करनेका यही तरीका है कि एक दफेमें एक काम किया जाय ।” और ये किसी कामको हम उम्मेदपर भरा न छोड़ने थे कि अधिक अवकाश मिलनेपर उसे फिर कर लेंगे । अब उनके पास काम बहुत हो जाता था तब ये अपने भोजन और आराम करनेके समयको भी कम कर देते थे, परन्तु अपने कामके किसी हिस्सेको बिना किये न छोड़ने थे । उीयि-टका भी यही सिद्धान्त था कि “एक दफेमें एक ही काम करना चाहिए ।” वे कहा करते थे । कि “अगर मुझे कुछ करना होता है, तो अब तक वह समाप्त नहीं हो जाता तब तक मैं किसी और बातका खयाल नक नहीं करता । अगर मुझे घरका कोई काम करना हो, तो मैं एकप्रविष्ट होकर उसीमें लग जाता हूँ और उसे पूरा किये बिना नहीं छोड़ता ।”

‘आजका काम कलपर कभी मत छोड़ो,’ यह सिद्धान्त बड़े कामका है । ‘जो कल हो मके उसे आज कभी मत करो,’ यह उलटा सिद्धान्त उन लोगोंका है जो आलसी और निष्क्रिय हैं । ऐसे ही आलसी भगवान सब काम काज अपने गुमानोंपर छोड़ देते हैं, परन्तु गुमानोंपर हमेशा विश्वास न करना चाहिए—जल्दी बातोंकी देखरेख स्वयं करनी चाहिए । एक भौगोत्री कहावत है कि “यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा काम हो जाय, तो तुम उस कामको स्वयं आकर करो, और यदि तुम चाहते हो कि वह काम न हो तो किसी औरको भेज दो ।” हिन्दीमें भी इसी तरहकी एक प्रसिद्ध कहावत है कि “आर काज महा काज ।”

एक आलसी जमींदारके पास कुछ जमीन थी जिसकी आमदनी लगभग आठ हजार रुपये सालाना थी । वह जमींदार कज्रदार हो गया, इस लिए उसने अपनी सभी जमीन बेच दाखी और बाकी जमीन एक मेहकनी किया-बको बीस वर्षके लिए किरायेपर उठा दी । अब बीस वर्ष बीत गये तब वह किसान भूमि बेचनेका किराया चुकानेक लिए आया और उसने जमींदारसे पूछा कि “क्या आप यह जमीन खरीदें ?” जमींदारने विस्मय हो कर पूछा, ‘क्या तुम मगानोगे ?’ किसानने जवाब दिया, ‘हाँ अगर नाम यह जाय तो ले लूँगा ।’ जमींदारने वह कि यह भगवान् आश्चर्यजनक बात है । मुझे इसका कारण बताओ कि मैं विचार इसमें नहीं जमीनमे भी









जिसका मुझे लगान भी नहीं देना पड़ता था, नहीं होना था, और गुम मुझे बराबर तीन हजार रुपये सालाना किराया देते रहे हो तिसपर भी उसको मोल लेनेके योग्य हो गये हो" उसने उत्तर दिया कि " इसका कारण तो स्पष्ट है। आप बेकार बैठे रहे और मैं कमर कम कर काममें लगा रहा। आप चारपाईपर पड़े पड़े चैन रिया करते थे और मैं प्रातःकाल उठ कर अपने काम-काजमें लगा जाता था। "

समयके मूल्यको समझ कर काम करनेमें विलम्ब न करना चाहिए। इटलीका एक विद्वान् कहा करता था कि " समय मेरी जायदाद है और यह एक ऐसी जायदाद है कि बिना जोते हुए ( परिधम किये हुए ) तो इसमें कुछ पैदा नहीं होता; परन्तु इसको सुधार लेनेमें परिधमी कार्यकर्ताका परिधम कभी निष्फल नहीं जाता। अगर इसे ग्राही पड़ा रहने दें, तो इसमें अहित-बर घाम और कटि पैदा हो जायेंगे। " कामकाजमें निरंतर लगे रहनेसे एक फायदा तो यह होता है कि मनुष्यका मन पापकी ओर नहीं जाता; क्योंकि बेकारीमें मनमें तरह तरहके अशुभ विचार उमड़े हुए चले जाते हैं। जब मनुष्य कामकाजमें लगे रहते हैं तब लड़ाई-सगड़े भी कम होते हैं। इसीके अनुसार एक महात्मा, जब उनके नौकरोंके पास कुछ काम करनेको न होता था, तब उनको यह हुक्म देते थे कि " मर चीजोंको साफ करो। "

कार्यकुशल मनुष्य कहा करते हैं कि " समय धन है " परन्तु वास्तवमें वह धनसे भी बढ़कर है। समयके उचित प्रयोगसे अपना सुधार, अपनी उन्नति और चरित्रकी उन्नति होती है। आलस्यसे अपना सुधार, अपनी उन्नति और चरित्रकी उन्नति करनेमें लगाया जाय, यदि एक घंटा रोज बचाया जाय और अपनी उन्नति करनेमें लगाया जाय, तो मर्त्य मनुष्य भी कुछ वर्षोंमें पुढिमान बन जाय, और यदि यही समय अपने काममें लगाया जाय तो उस मनुष्यका जीवन मार्फक हो जाय और मरने समय तक वह अनेक सुनकर्म कर डाले। यदि अपनी उन्नति करनेमें अपना समय हर रोज लगाय जाये तो एक सालक बाद इसका नतीजा मृत्यु तक मान्य होने लगता। उन्नत विचार और साधनानाके साथ प्रातःकाल उठ कर कुछ आ जगज नहीं घबरा और हम उनको अपने साथियोंके साथ लगे रहते हैं। उनके लो जानम न तो कुछ खच रहता और न कुछ नुकसान होता है। समयका उचित उपयोग करनेमें बहुत समय बच रहता।















## स्वायलम्बन ।

कम होते हैं, तो यह मानना पड़ेगा कि यह प्रतिदिनकी ईमानदारी मनुष्यके चरित्रके लिए बड़े गौरवकी बात है । व्यापारियोंको एक दूसरेका भी बड़ा विश्वास रहता है, क्योंकि वे आपसमें माल उधार देने रहते हैं । व्यापारके लेन-देनमें यह बात कुछ ऐसी साधारण हो गई है कि हमको बिल्कुल आश्चर्य नहीं मालूम होता । एक विद्वान्ने खूब कहा है कि “मनुष्य एक दूसरेके साथ जो भक्ति रखते हैं उसका यह सर्वोत्तम उदाहरण है कि सौदागर अपने दूर-दूरके मुनीमोंपर—जो शायद उनमें आधी दुनियाकी दूरीपर हैं—ऐसा पक्का विश्वास रखते हैं और बहुधा उन लोगोंको, जिनको उन्होंने शायद कभी नहीं देखा, सिर्फ उनकी ईमानदारीके भरोसेपर प्रचुर धन भेज देते हैं ।”

यद्यपि साधारणतया व्यापारमें ईमानदारीका बर्ताव होता है, तो भी बेईमानी और धोखेबाजीके मैकड़ों काम देखनेमें आते हैं । बहुतसे व्यापारी अच्छी चीजोंमें निकम्मी चीजोंकी मिलावट कर देते हैं, जैसे धीमें चर्बी अथवा दूधमें पानी; ठेकेदार बेगार डाल देते हैं, जैसे जुलाहे ब्राडिम उनकी जगह ऊनी-सूती कपड़े भेज देते हैं, कारीगर कौलादके बजाय डले हुए लोहेके औजार, बिना छिद्रकी मुद्दियाँ और उम्तरे जो केवल देखनेहीके होते हैं, इत्यादि अनेक निकम्मी चीजें दे देते हैं । परन्तु ऐसी बातोंको अमायातण समझना चाहिए, क्योंकि ऐसा वे लोग करते हैं जिनके विचार नीच हैं । ऐसे मनुष्य धनी हो सकते हैं, परन्तु सदाचारी नहीं हो सकते और न उनके चित्तको शान्ति ही मिल सकती है जिसके बिना सारी दौलत दो कौड़ीकी है । बिशप लेटिम्बरसे एक दूकानदारने एक चाकूके दो आने लें लिये, जो असलमें एक आनेका भी न था । इस विषयमें उसने अपन एक मित्रमें कहा कि “उस धूर्तने मुझको नहीं किन्तु अपने ही मन करणको धोखा दिया ।”

संभव है कि जो आदमी पक्का ईमानदार है वह उनका जल्दी धनाढ्य न हो जितना जल्दी बेईमान आदमी परन्तु जो सफलता योग्य या बेईमानोंके बिना प्राप्त करना है वही सच्चा सफलता है । चाहे मनुष्य कुछ समय तक असफल हो वह परन्तु उसका ईमानदार रहना चाहिए । चाहे सर्वस्व जाता वह परन्तु चरित्रका रक्षा करना चाहिए क्योंकि चरित्र स्वयं धन है । यदि अच्छे उदाहरणों मनुष्य चरित्रके साथ रह बना रहे, तो उसकी सफलता ना अशक्य होगी और उसकी इसका सफलता १०० मिले बिना नहीं रहेगा ।

## नौवाँ अध्याय ।



### धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

“आपके अनुसार ही खर्च गिन करना चाहिए,  
 दान संपन्न घर सन्तानके अर्थ रक्षना चाहिए ।  
 निधन वह सम्पत्ति-विषयक बाद जो रक्षता नहीं,  
 दुःख या घर लोहमुखाका स्वार वह चरता नहीं ॥”

—मैथिलीशरण गुप्त ।

“धन उधार दो न लो, क्योंकि खर्च देनेसे बहुधा खर्च और निग्रह दोनों  
 हाथसे चले जाते हैं और खर्च देनेसे किसानके कानमें सिधितता आ जाती है ।”

—शेक्सपियर ।

“जमीनमें गाड़ कर रखनेके लिए समझा गुलछरें बसानेके लिए धन इकट्ठा  
 मत करो; ही स्वतंत्र रखनेके लिए धन अवश्य इकट्ठा करना चाहिए ।”—यन्स ।

“धनके विषयमें कभी अज्ञानधानी न करो—धन बचैत्र है ।”

—युलियर लिटन ।

**कि**सी आदमीकी विवेक-मुद्रिही जौण यह जाननेसे हो सकती है कि  
 यह आदमी रचना किम तरह बनाता, बचाता और संचय करता  
 है । यह सच है कि मनुष्यके जीवनका मुख्य उद्देश रचना बना करना नहीं  
 है तो भी रचयोंको कुछ न समझना चाहिए, क्योंकि यह शारीरिक सुख और  
 सामाजिक कुशलका बहुत बड़ा साधन है । उदारता, ईमानदारी, व्यापारी-  
 लक्ष्य, सहायता, निरवयवता, इत्यादि अनेक अनेक गुण धनके  
 उपयोग में आनेसे सदा संचय हो जाते हैं । इनके विपरीत लोभ, कपट, अन्याय  
 आदि गुण धनके उपयोग में आनेसे नष्ट हो जाते हैं । जो धनके लिए  
 इन गुणोंका उपयोग करता है, वह धनके उपयोग में आनेसे नष्ट हो जाता है ।  
 जो धनके लिए इन गुणोंका उपयोग करता है, वह धनके उपयोग में आनेसे नष्ट हो जाता है ।









धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

धनका सदुपयोग और देनेमे नहीं

वती है और यह काम भीरोंको गिरा कर उनके परापर कर देनेमे नहीं  
 रन्तु उन्हींको धर्म, विवेक और सहायारकी ऊँची और उन्नत श्रेणी तक उठा  
 देनेमे हो सकता है। मातटेनने एक बार कहा था कि “नीतिशास्त्रके नियम  
 किसी साधारण मनुष्यके जीवनपर उतने ही लागू हैं जितने किसी महा-  
 प्रतापी मनुष्यके जीवनपर। प्रत्येक मनुष्यमें मनुष्यत्व या मानवी दृष्टि संप-  
 न्तरूपमे मौजूद रहती है। उसे अल्पतः अवस्थामेंसे व्यक्त करके बाहर लाने  
 और उसके आनन्दका अनुभव करना यह स्वयं उसीके हाथकी बात है।”  
 करनेपर मानद्वम होगा कि जिन बातोंके लिए हमको धन हय  
 है—देकारी, पीमारी और मौन। मं

और उसके ज्ञानन्दका अनुभव करना यह स्वयं उसीके हाथकी बात है। विचार करनेपर भातूम होना कि जिन बातोंके लिए हमको धन खर्च करना पड़ता है वे मुख्य करके तीन हैं—देकारी, बीमारी और मौत। मैं है कि पहली दो बातें कभी न हों; परंतु तीसरी बात अनिवार्य है। बुद्धि आदमीका वर्तन्य है कि यह इस तरह रहे और ऐसा प्रबंध करे कि उसको ही नहीं किन्तु उन लोगोंको भी—जिनका उसे पालन पोषण पड़ता है—किन्हीं मुसीबतके आ जानेपर जहाँ तक हो सके कम खर्च । इसलिए इंसानदारीके नाप रक्खा कमाना और उसको किफायत से खर्च करने जल्दी है। उचित रीतिमें खर्चा कमानेके लिए और प्रलोभनोंमें नुह मोड़नेकी

[illegible][illegible]

*[Faint handwritten notes at the bottom of page 70]*

[illegible]

1. 1950年 12月 1日 星期日

**स्थायीदम्बन ।**

बाबा नहीं कर सकता और मैंहरीके तिनोमें उसे वा तो भीष माँगनी पड़ती है वा गरीबोंमें नाम छिन्ना कर दियायती माथ पर नाम् वगैरह नवीरना पड़ता है । जब उसका रोजगार बिल्कुल जाता रहता है तब उसके पास इतना सामान भी नहीं रहता कि वह किसी और जगह जा कर कुछ काम करने लगा । वह एक ही जगहका हो जाता है और कहीं जा ना नहीं सकता।

स्वयंसेवा पानेके लिए जिस बातकी जरूरत है वह यही है कि इसको  
 किताबत करने रहना चाहिए । किताबत करनेके लिए न तो बड़े भारी साध-  
 नकी जरूरत है और न योग्यताकी । इस कामके लिए केवल सामान्य उद्योग  
 और मनावल काफी है । अगलमें घरका ठीक ठीक इन्तजाम करना ही  
 किताबतशारी है । प्रबन्ध, नियमबद्धता, दूरदर्शिता और किसी चीजको अपने  
 न सोना ये सब बातें किताबतशारीमें शामिल हैं । जो मनुष्य किताबत  
 करना चाहता है उसमें इस बातकी शक्ति भी होनी चाहिए कि वह अपनी  
 कामकी मातापर वर्तमान सुलझे हुई मोड़ सके । इसी शक्तिसे मासूम होता  
 है कि मनुष्य पशुधर्म से छेड़ है । किताबतशारी क्यूमीने सर्वथा निष्ठ है ।  
 सर्वोत्तम उदारता किताबतशीर आत्मीमें ही पाई जाती है । किताबतशीर  
 आत्मी धनका धूर्तिके समान नहीं दृष्टता, किन्तु वह यह समझता है कि वह  
 एक ऐसी चीज है जिससे सैकड़ों काम निकल सकते हैं । किसीने सच कहा  
 है कि “ इसको लपेटकी केवल प्रतिष्ठा न करनी चाहिए किन्तु उसको विचार-  
 पूर्वक काममें लाना चाहिए । ” किताबतशारीको दूरदर्शिताकी दुर्लभ, गंभ-  
 रकी मजिदी और स्वयंसेवाकी भाषा कहनी चाहिए । इससे हमारे अतिथी,  
 दोस्तमर्राके आवश्यकता और सामाजिक कुशलकी रक्षा होती है । मारात यह  
 है कि किताबत करना स्वाच्छन्दस्वच्छा एक सर्वोत्तम नव है ।

प्रतिनिधिमन्त्रालयका अध्यक्ष महोदयको अध्यक्षतामा भएको बैठकले निर्णय गरेको छ।

## धनका सदुपयोग और दुर्गुपयोग।

हरण्यक आदमीको अपनी आमदनीमें निर्याह करनेका प्रयत्न करना चाहिए। इस बातको ईमानदारीसे जड़ समझना चाहिए। जो मनुष्य ईमानदारीमें अपनी आमदनीमें अपना निर्याह करनेका प्रयत्न न करेगा, उसको जम्बर खेद-तानीके साथ किसी दूसरेकी आमदनीमें गुजर करनी पड़ेगी। जो मनुष्य अपने खर्चों परवा नहीं करते और दूसरोंके सुखका ख्याल न करके अपनी ही विषयवासनाओंकी पूर्तिमें रगे रहते हैं, वे बहुत ही उम्रसमय खर्चके मनुष्योगको समझते हैं जब उनका सर्वनाश हो चुकता है। ऐसे खर्चीले आदमी उदार स्वभावके होकर भी अंतमें निराश काम करनेको मजबूर हो जाते हैं। वे अपने धन और समय दोनोंको बर्बाद करते हैं, भविष्य कालपर भरोसा करने लगते हैं और भावी आमदनीकी आशा बाँधते हैं। इस लिए उन्हें अपने पीछे कजेंद्रा घोड़ा घसीटना पड़ता है और दूसरोंके अहमान उठाने पड़ते हैं जिससे उनके स्वतंत्रतापूर्वक काम करनेमें बड़ी बाधा आती है।

लांड बेकनका मत था कि "जब किराया करनेको जरूरत पड़े तो छोटी छोटी रकमोंकी आमदनीकी अपेक्षा छोटी छोटी रकमोंकी बचतका जियादा ख्याल रखना चाहिए।" जो खर्चा बहुतसे आदमी फिजूल खर्च कर देते या घरे घरे कामोंमें लगा देते हैं वही खर्चा प्रायः जीवनकी स्वतंत्रता और संपत्तिसे जड़ हो सकता है। जो लोग इस तरह खर्चा लुटा देते हैं वे अपने सबसे बड़े शत्रु हैं। हम उनको यह कहते हुए देखते हैं कि संसारमें यह अन्याय होता है; परन्तु जो मनुष्य आप ही अपना मित्र नहीं है वह कैसे आशा कर सकता है कि दूसरे उसके मित्र होंगे? माधाराग स्थितिके नियमोंकी मनुष्योंके पास दूसरोंकी सहायताके लिए हमेशा कुछ न कुछ बच रहता है; परन्तु खर्चीले और लापरवाह आदमियोंको, जो अपनी सब आमदनी खर्च डालते हैं, दूसरोंकी मदद करनेका मौका कभी नहीं मिलता। किराया यह मतलब नहीं है कि तुम फटेहाल रहो। रहनेमें और व्यवहारमें जो संकीर्ण विचारोंमें काम लेते हैं वे प्रायः अदूरदर्शी होते हैं और अंध रहते हैं।

अंगरेजीमें एक कहावत है कि खाली घैला सीधा खड़ा नहीं रहता। इसी तरह कजेंद्रा आदमी भी ईमानदार नहीं रह सकता। कजेंद्रा के लिए सत्यवादी होना भी कठिन है। इसीलिए कहा करते हैं कि







## धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

जब युवक अपने जीवनमें आगे बढ़ता है तब उसको अपने दोनों ओर लुभानेवालोंकी एक एक हम्पी दतार मिलती है और उनके लोभमें फँस जानेसे उनकी न्यूनताधिक अवबति अवश्य होती है। लुभानेवालोंका साथ करनेसे युवकके स्वाभाविक गुणोंका कुछ हिस्सा गुप्त रीतिसे निकल आता है। उनमें बचनेका यही उपाय है कि वह धीरतासे 'नहीं' कह दे और उनके अनुसार चले। जिसी प्रलोभनमें एक बार फँस जानेसे फिर उस प्रलोभनसे मुकाबिला करनेकी ताकत कमजोर हो जाती है। मगर किसी प्रलोभनका धीरताके साथ सामना करनेमें सदाके लिए एक तरहकी शक्ति आ जाती है और कई बार ऐसा ही किया जाय तो पैसी ही आदत पड़ जाती है। छोटी उम्रमें जो अच्छी आदतें पड़ जाती हैं उन्हींसे हमारे चरित्रकी रक्षा होती है।

हू मिलरने एक बार ऐसा दृढ़ संकल्प किया कि वे एक प्रलोभनसे लूय ही बच गये। जब हू मिलर मजदूरी करते थे तब उनके मित्र मिल कर कभी कभी शराबका जलमा बिया करते थे। एक दिन उन्होंने हू मिलरको भी दो गिलास शराब पिला दी। जब मिलरने धर पड़ें कर पड़नेके लिए किताब खोली, अक्षर उनकी आँखोंके सामने नाचने लगे और वे कुछ भी न पढ़ सके। मिलरने अपना उम्र बणका हाल यों लिखा है:—“उस समय मुझे अपनी दशा बड़ी नाच मात्तम हुई। मैं अपने ही बुध्दमसे बुद्धिकी ऊँची शेणीपरसे जिसपर मैं रहा करता था, नीचे गिर गया। यद्यपि वह दशा दुरादा करनेके लिए बहुत अच्छी न थी, तो भी मैंने पछा दुरादा कर लिया कि मैं शराबकी शक्तिपर अपने मानसिक सुखका कभी त्याग न करूँगा और परमानमाकी मददमें मैं अपने दुरादनें अटल बना रहा।” ऐसे ही दुरादे मनुष्यके जीवनमें परिचलन कर देते हैं और उसके चरित्रको आतोंके लिए पछा करते हैं। जिस प्रलोभनमें हू मिलर बच गये प्रत्येक मनुष्यक और पढ़े आदमीको उससे हमेशा बचन रहना चाहिए। शराब पीना बहुत बुरा है। इसमें तन्दुरस्तीको बड़ा भरा नुकसान पहुँचता है और पि नुस्खी आ बहुत होती है। सर या प्र र्कट कर करत य कि 'सबसे बड़ा पाप जो मनुष्यके गौरवको ब. व. द. ग. ह. शराब पीना है।' पछा नही बालक शराब पीना किपायत- ११ २० ह तन्दुरस्ती और हमानशराम ना बाधा दालता है। जिसी ५ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००









### धनका सदुपयोग और दुरुपयोग ।

उनके सिवाय और किसी अच्छी यातका खयाल नहीं है यह चाहे अमीर हो  
 जाय, परन्तु यह फिर भी संभव है कि उसका चरित्र दो कौड़ीका ही बना  
 रहे। धनने चरित्रकी उन्नति नहीं हो जाती; बल्कि जिस तरह जुगनूकी  
 चमकके कारण जुगनूकी भरी सूरत भी दिखालाई दे जाती है उसी तरह  
 धनकी चमकने उन्म धनके हामीकी चरित्रहीनतापर सबका ध्यान जाता है।  
 समय होगा कहने लगते हैं कि यह इतना पड़ा आदमी हो कर भी इतना  
 दुराचारी है।

बहुतसे लोग धनके लोभपर अपने घरिघरको न्यूँटाकर कर देते हैं। वे उन बंदरोंके समान हैं जिनको आक्रियानियामी यड़ी विधिपर रीतिसे पकड़ते हैं। वे लोग एक संग मुँहवाले धरतनको किमी पैदमें कम कर बाँध देते हैं और उसमें चावल रख देते हैं। रातको बंदर वहाँ आता है, उस धरतनमें हाथ डालता है और अपनी मुट्ठी चावलोंमें भर लेता है; परन्तु यह मुट्ठी यड़ी होनेके कारण धरतनके संग मुँहमेंसे बाहर नहीं निकलती। बंदरमें इतनी समझ नहीं कि मुट्ठी खोल कर अपना हाथ निकाल ले। यम इसी तरह सबेरे तक यह वहीँ पँसा रहता है और पकड़ लिया जाता है। इच्छित पदार्थको हाथमें रखते हुए भी यह अत्यन्त नृत्न मालूम होता है। इस संसारके बहुतसे मनुष्योंका भी यही हाल है।

[illegible]











जीवनकी व्यावहारिक मातृशालाके लिए जिनकी हम सामने दृष्ट हैं वगैरे विचारों लक्ष्मणजीकी उत्पत्ति है। भारतवर्षमें एक आन्दोलन आने एक मित्रको ईच्छेष्ट वय में आता और उगमें दिना कि “मैं भारतवर्षमें सुखसे रहना हूँ, क्योंकि मेरी वास्तविकता अच्छी है।” किसी व्यवस्थावर्षे निर्माण काय कर-येकी वांछ बहुत कुछ इगीतर निर्माण है। इसलिए लक्ष्मणजीका व्यवसाय बनना बहुत अच्छा है। मानसिक धर्ममें भी इसकी उत्पत्ति पड़ती है। विचारोंमें जो अर्थानुष्ठान, अर्थानुष्ठान और विचारों में देना पड़ती है और वे जो जीवनमें देना करने आते हैं, जो सब कारण न करनेका फल है।

एक भाइयों के मृत्यु के बाद जीवित इस बात का उदाहरण है कि उन्होंने  
शुरू में ही भीखारों के काम के लिए पैसा लाने का उपाय था। वे पहले से ही मुद्रा  
से, पत्रों, भाई, हरीश और कुलहाड़ी बनाने में बड़ी मेहनत करते थे। वे  
अपने रहने के कमरे में भी लकड़ें दिया करते थे, और इनसे बनने वाली  
पहिया गाड़ियों और तरह तरह की कलों के मरने बनाने में मारा ही लगाने  
रखते थे। अब वे बड़े हुए तब इनको अपने मित्रों के लिए छोटी छोटी मरे  
और भाइयों के बनाने में बड़ा आनंद आता था। बड़ी टन, पाट और  
कट्टी किस्म की बनाने में भीखारों के इसी तरह काम दिया करते थे। यदि  
वे कट्टी बनाने में ही इनकी आभोजन न कर लेते, तो बड़े दोस्तों का घर ही  
इनका काम कर सकते, जिनका कि उन्होंने कर दिया था। फिर भी इनकी  
और बनाने के काम इस पहले का भाव है इनकी प्राथमिक शिक्षा भी  
ऐसी ही हुई थी। कट्टी बनाने में उन्होंने अपने हाथों से लकड़ें काट लीं और  
इनसे उन्होंने अपनी उपाय मोचने की शक्ति को और बृद्धि कर ली। काम में  
काम की लक्ष्य दिया था। फिर मरने के हाथों की मेहनत करने करने इनकी  
इच्छा कर थी है कि अब उन्हें केवल मानविक परिश्रम ही करना पड़ता है,  
उन्होंने ही मानविक परिश्रम करने के अपनी प्राथमिक शिक्षा का लाभ  
उठाया है। यह बात ही मनुष्य का कर्तव्य है कि "मनुष्य मनुष्य के लिये काम  
करके फिर अपने मेहनत करती मनुष्य हुए। इनके लिये यह कहें कि वह  
कर्म का फल है। अपनी मनुष्यता मनुष्य के लिये और मनुष्य की इच्छा का  
वह लक्ष्य मनुष्य के लिये ही मनुष्य का कर्तव्य है।"









## अपना सुधार, सुविधायें और कठिनाइयाँ ।

पूरा अधिपार नामा हैं, तो उसमें जय पाहें मारी भाग्यानीमे काम मे मरने हैं । हम लिए निरंक यह बाकी नहीं है कि हमारे पास पुस्तकें रखनी हों ना हम यह जानते हों कि अमुक अमुक बातें अमुक अमुक पुस्तकें में मिलेंगी । जीवनके व्यवहारके लिए हमारा बुद्धिमें ही ऐसी बायेंकुशलता होती आदिष्ट कि हम उसमें जय पाहें काम मे सकें । यह बाकी नहीं है कि हमारे घरपर तो शरयोंका ढेर लगा हो और जेबमें एक पैसा भी न हो । हमका चाहने किरते हर एक अपने पास ज्ञानरूपी निहा रगना आदिष्ट, नहीं तो मीरा पढ़नेपर हमको दुखी होना पड़ेगा ।

व्यापारकी तरह भाग्योद्धारमें या अपनी उन्नति करनेमें भी निर्गन्तकि ह्य निष्काम और तत्परताकी जरूरत है । इन गुणोंकी वृद्धि सभी हो मरनी है जय नयपुष्पोंमें स्वावलम्बनशील होनेकी आदत डाल दी जाय और उनको शुरू शुरूमें जहाँ तक हो सके स्वयं काम करनेमें हतप्र कर दिया जाय । बहुत जियादा उपदेश करनेसे तथा रोक-टोक करनेसे स्वावलम्बनकी आदतें नहीं पढ़ने पाती । अपने ऊपर विद्यास न होनेसे हमारी उन्नतिमें बहुत बाधा आ जाती है । अपने पालंगने हुए घोड़ेको रोक लेना ही जीवनकी बाधी असफलताओंका कारण है । डाक्टर जानसन कहा करते थे कि “ मेरी सफलताका यही कारण है कि मुझे अपनी क्षक्तियोंपर भरोसा है । जिस मनुष्यको अपनी क्षक्तियोंपर भरोसा नहीं होता उसमें कार्यकुशलता भी नहीं होती और इसमें उसकी उन्नतिमें बहुत बाधा पहुँचती है । जो मनुष्य बहुत कम काम कर पाते हैं समझो कि वे कोशिश भी बहुत कम करते हैं ।

यह हमें मनुष्य अपना सुधार करनेकी इच्छा तो करते हैं परन्तु मेहनतसे जा उसमें लग्न बहुत जरूरी है — जा चुरात है । डाक्टर जानसन कहा करते थे कि आज केवल लोगोमें यह एक तरहका मानसिक रोग है कि वे अध्ययन करना बहुत उकता जात है । यह जान हम जमानेमें भी पाई जाती है । आज केवल बहुत लोगोकी पढ़नका इच्छा रहता है, परन्तु वे मेहनतसे जा नहीं आते और ऐसा तरहका दुःख करते हैं जिससे मेहनत कम करना पड़े । यह बाधा है कि हमको विज्ञान साधनका कोई सरल और बतला न जयगा दो एक पुस्तक पढ़-वडाकर हा हम मस्कृत साध जाये । वे उस नाहलाके समान है जिसने एक अध्यापक अपने पढ़नेके लिए इस दानपर







और उस दौलतका कैसा प्रयोग किया जाता है । यद्यपि किसी उपयोगी उद्देश्यको ध्यानमें न रखकर भी हम अपने मस्तकमें बहुतसा ज्ञान संग्रह कर सकते हैं; परन्तु ज्ञानके माय भलमनसाइन और बुद्धिमानी भी आनी चाहिए और माय ही माय सच्चरित्रता भी होनी चाहिए । नहीं तो यह ज्ञान दो कीड़ीका है । एक विद्वान् तो कोरी मानसिक शिक्षाको हानिकारक बनकामा करता था । वह हम पाप पर जोर दिया करता था कि ज्ञानकी जड़ोंको मुख्यस्थित इच्छारूपी मिट्टीमें जमना चाहिये और उसीमेंसे अपना भोजन खींचना चाहिए । यह सच है कि मनुष्य ज्ञान प्राप्त करनेसे अघम पापोंमें बच सकता है; परन्तु वह स्वार्थ-परतामें नहीं बच सकता । स्वार्थपरतामें उसी बन्ध छुटकारा मिल सकता है जब मनुष्य उत्तम नियम बना ले, उनके अनुसार चले और अच्छी आदतें डाल ले । यही कारण है कि निया ही हमारे देशमें ऐसे बहुत मनुष्य पाते हैं जिनका ज्ञान तो विशाल होता है, परन्तु चरित्र सर्वथा भ्रष्ट होता है; उनमें स्त्री-विद्या होनेपर भी व्यावहारिक बुद्धि बहुत कम होती है । ऐसे ज्ञानी मनुष्य अपने सच्चरित्रमें दूसरोंके लिए अनुकरणीय तो क्या होंगे, उल्टे उनकी दुर्दशा देखकर उन जैसे चरित्रमें सावधान रहनेके लिए लोग उनकी पटलर देने लगते हैं ! आज कल जहाँ तहाँ यही सुन पड़ता है कि “ज्ञान बल है” परन्तु पागलपन, अप्याचार और मृज्जा भी तो बल है ! यदि शिक्षा बुद्धिमानीके साथ न दी जाय, तो ऐसे ज्ञानमें हुए मनुष्य और भी भयंकर हो जायें और वह समाज, जो उस ज्ञानको बहुत अच्छा समझता हो, विनाश-समाज बन जाय ।

सम्भव है कि हम आज कल पुस्तकें पढ़ने-पढ़ानेमें बहुत विपदा महसूस समझते हों । चूँकि हमारे पास बहुतसे पुस्तकालय, विद्यालय और अत्रायक-घर हैं, हम लिए हम समझते होंगे कि हम बहुत उन्नति कर रहे हैं, परन्तु ऐसी सुविधायें सर्वोत्तम आशुवादमें जिनकी सहायता देनी है उनकी ही बाधा भी पहुँचा सकती हैं । जिस तरह घनके केवल स्वामी बन जानेमें उन्नतता नहीं आती, वही तरह अपने पास केवल पुस्तकालय रख लेनेमें विद्वान् नहीं आती । यद्यपि हमारे पास अब भी बड़ी बड़ी सुविधायें मौजूद हैं, तो भी बहुतके समान वह अब भी सच है कि निरीक्षण, ध्यान, आग्रह और चरित्रमेंके प्राचीन मार्गपर चलनेमें ही हम बुद्धिके स्वामी बन सकते हैं ।



कानन्दके गुरु महाराम रामकृष्ण परमहंस बहुत ही कम पढ़े लिखे थे; परन्तु उनके अनुभव ज्ञानकी इतनी प्रमिद्धि थी कि सैकड़ों विद्वान् उनके पास उपदेश सुननेको आया करते थे । महाराज शिष्याजीने कितनी पुस्तकें पढ़ी थीं ? महाराज रणजीतसिंह पढ़ना लिखना कब जानते थे ? सग्राद बख्श भी बहुत ही कम पढ़े थे ।

अतएव केवल बहुलमी पुस्तकें पढ़ लेने और याद कर लेनेमें कुछ महत्त्व नहीं है; महत्त्व तो पुस्तक पढ़नेके उद्देश्यमें है जिन उद्देश्यमें किं उस ज्ञानका उपयोग किया जाता है । ज्ञान प्राप्त करनेका यह उद्देश्य होना चाहिए कि हमारी बुद्धि परिपक्व हो और हमारे चरित्रकी उन्नति हो; हम अधिक उन्नत, सुखी और उपयोगी बन; आर जीवनके हरएक बड़े कार्यको सिद्ध करनेमें अधिक प्रोत्साहनी उत्साही और निपुण हो जायें । जो मनुष्य सदाचारको भूलकर कोरे पांडित्यकी प्रशंसा किया करते हैं उनका शीघ्र ही पतन होता है । हमको स्वयं अच्छा बनना चाहिए और कुछ करके दिललाना चाहिए । दूसरेके कामोंको पुस्तकोंमें केवल पढ़कर या मनन कर लेनेसे ही हमें संतोष न कर लेना चाहिए । हमारा सर्वोत्तम ज्ञान जीवनका अंश बन जाना चाहिए और हमारे सर्वोत्तम विचार कार्यरूपमें परिणत होने चाहिए । हम कमसे कम इतना तो कह सकें कि 'मैंने क्याशक्ति अपनी उन्नति कर ली । इससे अधिक और क्या हो सकता है ?' क्योंकि यह प्रत्येक मनुष्यका कर्तव्य है कि उसके ऊपर जितनी जिम्मेदारियाँ हैं और उसमें जितनी स्वाभाविक शक्तियाँ हैं उनके अनुसार वह अपनी उन्नति करे ।

आत्मशासन और आत्मनिरोधसे ही कार्यकुशलताका आरंभ होता है और इनका आधार आत्मसम्मान है । इससे आशाका विकास होता है और भाषा अन्त शक्तिकी सहेली और सफलताकी माना है । जो मनुष्य रद्द आशा करता है उसको चमत्कारोंके दर्शन होने हैं । छोटे छोटे मनुष्यके भी ये विचार होने चाहिये — "अपनी कर्म करना और अपना सुधार करना, यही मेरे जीवनका सच्चा कर्तव्य है । मैं एक बड़े समाजका अलग अंश हूँ और मेरे ऊपर बड़ी बड़ी जिम्मेदारियाँ हैं । इसलिये समाजके प्रति मेरा यह कर्तव्य है कि मैं अपनी प्रारंभिक, मूलकसम्बन्धी अथवा स्वाभाविक शक्तियोंको नष्ट न करूँ । नष्ट करना तो न रहा, बल्कि मेरा कर्तव्य है कि मैं



## व्याथलम्बन ।

करने पड़ते हैं और समाजमें चाहे किना ही सुधार हो जाय, परन्तु यदि-  
कांश मनुष्योंको प्रतिदिनके काम-काजोंसे छूटकाता नहीं मिल सकता—वे  
काम-काज तो उन्हें करने ही पड़ते हैं। उन्हें मेहनत न करना पड़े, इस प्रश्न-  
रही इच्छा रखना अनुचित है। यदि कोई इस प्रकारकी इच्छा करे भी, तो  
भी यह मजबूत नहीं हो सकती।

सब लोग मेहनत मजदूरीके काम नहीं छोड़ सकते, यह कमी संसारमें  
हमेशा रहेगी। फिर भी हमारी समझमें यह कमी कई अंशोंमें घूर हो  
सकती है। अगर हम धर्मजीवियों या मेहनत मजदूरी करनेवालोंके विचार  
ऊँचे कर दें, तो उनकी दृष्टा सुधर जाय—वे एक तरहके ऊँचे दर्जेके मनुष्य  
बन जायें। भेद विचार गरीब और अमीर दोनोंको प्रकाशित कर देते हैं।  
गरीबसे गरीब आदमीके पास भी, चाहे वह दुर्गतिसे दुर्गति होपड़ीमें रहता हो,  
वर्तमान और भूतकालके बड़े बड़े विचारवाद् मनुष्य पुस्तकोंके रूपमें आकर  
बैठेंगे। किसी अच्छे उद्देशके लिए अध्ययन करनेकी आदत सर्वोत्तम आवन्त  
और आमोच्चतिका कारण हो सकती है और आधारपर अत्यन्त साम्राज्य  
प्रभाव डाल सकती है। आलोचकसे भले ही धन न मिले, परन्तु उससे  
विचार तो सदैव ऊँचे रहेंगे। एक संदने एक संन्यासीसे पूछाके साथ पूछ  
कि "तुमने दर्शनशास्त्र पढ़कर क्या पा लिया?" बुद्धिमान् संन्यासीने उत्तर  
दिया कि "और कुछ नहीं तो मुझे अंतःकरणमें सत्संगति मिल गई है।"

बहुतसे मनुष्य आलोचकके काममें निराश और उत्साहहीन हो जाते हैं,  
क्योंकि वे संसारमें हतकी जड़दी नहीं फूलने फलने जितना वे अपने आपको  
योग्य समझते हैं। वे चीज सोचकर यह चाहते हैं कि उसका तुरन्त ही फल  
बन जाय। वे ज्ञानका शायद् निर्मीका चीज समझते हैं और इसलिए जब  
उनकी आशाके अनुसार ज्ञान नहीं आता तब उनका ज्ञान भी निकल जाती  
है। एक बार एक स्थूलतत्त्वज्ञानका कमा गेन गया। अध्यापकने इसका  
कारण जानना चाहा। मादूम हुआ कि मनुष्य आशाका यह आशा था कि  
उनके लड़के ज्ञाना पीनम पता में अधिक उन्नत हो जायेंगे परन्तु यह ज्ञान  
कम कि शिक्षा में कुछ लाभ न हुआ। उन्होंने अपना लड़का का स्कूल ज्ञानसे रोक  
लिया और अब वे उनका शिक्षा उनका कुछ नहीं उठाना चाहते।

आत्मोद्धारके विषयमें भी ऐसा ही नीच विचार कुछ लोगोंमें फैला हुआ है और समाजमें मानवी जीवनके विषयमें जो विग्नदृष्टियाँ न्यूनाधिकरूपमें सदा प्रचलित रहती हैं वे इस विचारको और भी प्रचल कर देती हैं । आत्मोद्धार एक ऐसी शक्ति है जो चरित्रको ऊँचा करती है और आध्यात्मिक गुणोंको पढ़ाती है; परन्तु अगर हम उसको दूसरोंमें बाँझी मारनेका अध्यास मनके द्वारा मजा खटनेवा साधन समझ लें, तो हम उसके मूल्यको बहुत कम कर देते हैं । यदि मनुष्य अपनी उत्पत्तिके लिए और समाजमें अपनी स्थितिको ऊँचा करनेके लिए परिश्रम करे, तो यह निस्संदेह आयन्त धेष्ट है; परन्तु ऐसा करते समय अपने आपको—अपने चरित्रको—बलिदान न कर देना चाहिए । मरत-यको शरीरका गुलाम बना देना बहुत पुरा है । जो मनुष्य सफलता प्राप्त न होनेपर अपने दुर्भाग्यको रोता है उसका मन बड़ा ही संकीर्ण और निकम्मा है; क्योंकि सफलता कोरे ज्ञानसे नहीं मिलती, किन्तु कामकाजकी बातोंमें परिश्रम करने और उनपर ध्यान देनेकी आदत डालनेसे प्राप्त होती है ।

यदि हम शिक्षा पाकर फेवल जोश दिलानेवाली और हँसानेवाली पुस्तकोंको पढ़-पढ़कर मनोविनोद किया करें, तो इसमें भी शिक्षाका व्यभिचार होता है । आजकल बहुतसे मनुष्य ऐसा ही करते हैं । हँसी, टट्टा और जोश दिलानेवाली बातोंके लिए आजकल लोग ऐसे पागलसे हो रहे हैं कि हमारी पुस्तकोंमें ये दोनों बातें खूब घुस पड़ी हैं । आज कलकी पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओंमें सर्वसाधारणकी रुचिके अनुसार खूब घटपटी बातें भरी रहती हैं, जो आनन्ददायक और हास्योत्पादक होती हैं और सब तरहके लौकिक और पारमार्थिक नियमोंका उल्लंघन करती हैं । आज कल उपन्यास पढ़नेका शौक बहुत बढ़ता जाता है परन्तु इस जमानेके अधिकांश उपन्यास ऐसे हैं जो सब लोभोग्र और विनोदकर नयनचक्रोंपर बड़ा पुरा असर डालते हैं । वे उनको व्याख्या करने का मेरा करार है । उनको आलस्य बना देते हैं और उनके जीवनका कुछ ही देते हैं ।

३३. शीघ्रम आराम करने का जो आदत आभीर प्रोत्तम हलका करने का । इससे प्रतिभाशाली व्यक्ति का लिखा पढ़ कराना करना अच्छा है; यह कि जीवन अच्छा जीनासक जाना मिलती है । इस प्रकारके व्यास यकी ३४. ३५. मनुष्य न्याय वृत्त पर रहा युद्ध, मना बड़ आराम पड़ते हैं







### उपसंहारः ।

पापन नहीं करता और मेरा विनम्र स्वर ही धार्मिक रहता है।" इस तरह उसने विपश्चय शक्ति को भी, जो भी वे न कर सके। ये कुछ बहुत बड़े-बड़े दुष्टी रहे और अंत में कुछ-कुछ कर मर गये।

[illegible]







[illegible][illegible][illegible][illegible]















उनमें स्वयं-स्वयं पड़ने आना।" यह आदमी मद्रासी महाशयके पास गया और उसने उनको स्वयं देकर ईश्वरचन्द्रकी सपना सुना दी। मद्रासी महाशय ईश्वरचन्द्रकी दयालुता देखकर रो पड़े और बोले कि "यदि मैं स्वयं हो, तो हम लोग घर आ सकते हैं।" आदमीने लौटकर ईश्वरचन्द्रमें यह बात बतली। ईश्वरचन्द्रने उसी रात मैं स्वयं भेंट दिये और उनका आदमी उन लोगोंको होशियारीके साथ जहाजर सवार कराके लौट आया।

चम्पद्वेके विल्लन कालिजमे संस्कृतके अध्यापक श्रीधर गणेशा जिनगी-पाण्डेया जन्म एक बड़े दरिद्र घरमें हुआ था। बाल्यापर्याय ही उनकी माताका देहान्त हो गया था। उनके पिता इनने गरीब थे कि कभी कभी उनको भीख मींगकर अपना निवाह करना पड़ता था। उन्होंने किसी तरह अपने पुत्र श्रीधर गणेशाको एक स्कूलमें भेजनेका प्रबंध कर दिया और श्रीधर गणेशने सीता ही अपनी उत्तमोत्तमताका परिचय दिया। स्कूलके अध्यापक उनसे बड़े प्रेम रहते थे। उन्हें कई बार छात्रवृत्तियाँ मिलीं, जिनमें उनका निवाह होता रहा। फिर उन्होंने मैट्रिकपरीक्षाकी परीक्षा पास की। इस परीक्षामें भी उनका नम्बर बहुत अच्छा रहा और उन्होंने छात्रवृत्ति पाई। फिर ये पूना कालिजमें दाखिल हो गये। उनकी अंगरेजी पाठ्यपुस्तकपर प्रिन्सिपल ऐसे मुग्ध हुए कि ये उन्हें अपने पाससे आर्थिक सहायता देने लगे। सन् १८७६ ईसवीमें इस कालिजमें उन्होंने एम० ए० की परीक्षा पास की। फिर ये तुरन्त ही पूना हाईस्कूलमें अध्यापक हो गये और इसके बाद विल्लन कालिजमें संस्कृतके अध्यापक नियुक्त हो गये और रतलाम, ग्वालियर इत्यादि कई स्थानोंमें उनके पास निमंत्रण आये—यहाँके राजा उनको ५००) मासिक धैतन देनेको तैयार थे; परन्तु उनको पूना कालिजमें ऐसा प्रेम था कि यह उन्होंने न छोड़ा। उन्होंने अपने जीवनका बहुत बड़ा भाग विधवाओंकी सहायता देनेमें बिता दिया।

भास्कर दामोदर पालंद्वेके पिता अत्यन्त दरिद्र थे। भास्करके बचपनमें ही उनकी माताका स्वर्गवास हो गया। श्रीधर गणेशाके समान उन्होंने भी बहुत कुछ उठाकर विधवापार्जन किया। अंतमें उन्होंने एलफिन्स्टन कालिजसे एम० ए० पास किया। फिर उन्होंने आपा साहब जमशेदीकरके यहाँ १००) मासिकपर नौकरी कर ली, परन्तु कुछ समय बाद उन्होंने यह नौकरी



















## स्वायत्तम्यन ।

मके घाम उस ग्राममें था जहाँपर उसने पहले संगतरासीका काम किया था। जब वह संधेरे सोकर उठता था और अपने कमरेकी मिट्टीमेंसे बाहर देखता था, तब उसको पहले पहल मकानोंकी वे चिमनियाँ दिखलाई देती थीं जो उसने स्वयं अपने हाथोंसे बनाई थीं। कुछ दिनों तक उसे यह चिन्ता रही कि ग्रामवाले कहीं मुझे पहचान न लें कि मैं वही पुराना संगतरास हूँ और इस लिए मेरे कारण इस प्रसिद्ध व प्राचीन विद्यालयपर कलंक न लग जाय। परन्तु उसको इस प्रकारकी चिन्ता करनेकी आवश्यकता न थी, क्योंकि वह परम योग्य अध्यापक निकला और एक बार एक सार्वजनिक सम्मेलन उसके निष्पत्तीकी क्रेष भाषाकी योग्यताकी श्रुति प्रशंसा की गई। इस बात उसके सभी ज्ञान पहचानवाले—सहयोगी, अध्यापक और निज्य उस सम्मान करने लगे; और जब उन लोगोंको उसके प्रयत्नोंकी, कठिनाइयों और प्राचीन स्थितिकी खबर पड़ी तब उन लोगोंने उसकी और प्रशंसा की।

सर सेमुएल रोमीलीने भी आत्मोद्धारके लिए कुछ कम परिश्रम न किया। वे एक जीहरीके पुत्र थे। उन्होंने बचपनमें बहुत कम शिक्षा पाई व परन्तु बड़े होनेपर उनको पढ़नेका ऐसा शौक लगा कि वे इस विषयमें कि उनके कुछ उद्योग करने लगे। उन्होंने १५-१६ वर्षकी अवस्थामें लैटिन भाषा अध्ययन करना शुरू किया। इससे पहले वे लैटिन व्याकरणके केवल कुछ छोटे छोटे नियम जानते थे। तीन चार वर्षमें ही उन्होंने लैटिनकी अधिकांश पुस्तकें पढ़ लीं। इसी बीचमें उन्होंने एक लेखकी कई पुस्तकें अनुवाद भी कर लीं और कुछ पुस्तकें कई बार पढ़ लीं। उन्होंने भूगोल प्राकृतिक इतिहास, और वर्तन-शास्त्रका अध्ययन किया और बहुतसे अन्य विषयोंका सामान्य ज्ञान भी प्राप्त कर लिया। उन्होंने वकालत भी की और कुछ समयमें वे उच्च धार्मिक सरकारी कर्तव्य निरव हो गए, परन्तु उन्होंने परिश्रम करना जारी न छोड़ा।

किन्तु जोनाथन अध्यापक हाकिम ग्लान भी १७२६ वर्षमें परिश्रम करके सार्वजनिक सेवामें अपना नाम लगा था। वे यह मानते थे इस लिए उनको शुरूमें एक सरकारी स्कूलमें जाना पड़ा। परन्तु समय उनके अध्यापक कहा करते थे कि "मैं इस मात्र तक गया हूँ जइसा मैंने सोचा था कि मैंने आया।" किन्तु









कि इसका सुधार हो ही नहीं सकता ।” मरिद्ध लेखक वाल्टर स्कॉट वधपनमें महामूर्ख था । उसके अध्यापकने उसके विषयमें यह कहा था कि “यह तो मूर्ख है और जन्म भर मूर्ख रहेगा ।” घैटरटनकी माता भी शुरू शुरूमें यही कहा करती थी कि “यह ऐसा मिठी है कि किसी मन-लवका न निकलेगा ।” ऐलफाइरी कालिज छोड़नेपर भी ऐसा ही मूर्ख बना रहा जैसा वह भरती होनेके समय था । परन्तु कालिज छोड़नेके बाद उसने बहुत विद्या सीख ली और वह एक सुप्रसिद्ध विद्वान् गिना जाने लगा । लार्ड क्लाइव-जिम्ने भारतवर्षमें अँगरेजी राज्यकी नींव डाली थी—एक मूर्ख लड़का था । उसके कुटुम्बवालोंने उसमें अपना पीछा धुड़ानेके लिए उसे भारतवर्ष भेज दिया था । मैपोलियन और घैटिंगटन दोनों ही लड़कत्वमें मंदबुद्धिके थे । उन्होंने स्कूलमें कभी कयाति न पाई । कैलममें और डाक्टर लुक जब स्कूलमें पढ़ते थे तब बहुत ही मूर्ख और उग्रधी थे । मास्टरने इन दोनोंको यह कह कर निकाल दिया था कि “वे मूर्ख कभी बड़ी सुधार सकते ।” मनुष्यव्रतिका परमहिमैवी ज्ञान दृष्टिसे गान करें तब स्कूलमें पढ़ना रहा, परन्तु तब तक उसके लिए काला भस्म भी बराबर ही रहा ।

डाक्टर आरनल्डने जो कुछ लड़कोंके विषयमें कहा है वह प्रोफ़् मनुजोंके विषयमें भी बिल्कुल सत्य है—“हम जो लड़कोंमें जो भेद देखते हैं उसका क्या कारण है ? उसका मुख्य कारण यही है कि उनमें उग्याहूँ कमी जियादनी है । स्वाभाविक योग्यताकी कमी जियादनीसे उनका चरक गरी पड़ना, जिनका उग्याहूँ कमी जियादनीसे वह जाता है । जिन लड़कोंमें बहुत परिश्रम करनेकी शक्ति है उसमें उग्याहूँ संचार भी शीघ्र ही हो जाता है । जिन मूर्ख लड़केमें आग्रह और उत्साह है वह उस क्षण लड़केसे आगे बढ़ जाता है जिनमें वे गुण नहीं होते । धीरे धीरे परन्तु निश्चितरूपसे काम करनेमें सफलता अवश्य होता है । कुछ लड़कोंकी हालत बड़े होना बिल्कुल उल्टा हो जाता है । इसका कारण अत्यन्तक परिश्रमकी कमी वा जियानता है । इसका वह लक्षण आशय होता है कि कुछ लड़के बड़े क्षण होते हैं परन्तु वह क्षण ही है कि वे सफल हो जाते हैं, और कुछ लड़के तब ही सफल हो जाते हैं जो बड़े क्षण होते हैं उसमें किसी तरहकी



पड़ता था । गर्मी, धूप, जाड़ा, मेह उनको सब कुछ रातोंमें सहन करना पड़ता था । उन दिनों कलकत्तेमें बाँकीपुर जाना भी बड़ा जोखिमका काम था, क्योंकि मार्गमें लुटेरोंका भय मद्धा लगा रहता था । एक बार कलकत्तेमें छोटने समय रामदुलालको मार्गमें रात हो गई । माणिकका हाथ उनके पास था । इस भयमें कहीं उस लपेटेको कोई मूट व छेदे भाग पामने गाँवोंमें किसीके घर नहीं टूरे, परन्तु एक पेड़के नीचे गरीब मुसाहिराकी तारा पड़ रहे । उन्होंने कष्ट उठा कर मारी रात उसी पेड़के नीचे काट दी । माणिकके घबकी रक्षा करना वे अपना परम धर्म समझने लगे । उनको अपने माणिकके कामके लिए जहाजवार भी जाना पड़ता था । वहाँ वे दो बार पारीमें डूबनेमें लगे । यही कर्मव्यपरायणता और ईमानदारी रामदुलालकी भारी उन्नतिका मुख्य कारण हुई । एक घटना ऐसी हुई कि त्रिपटे कातन रामदुलालके गरी दुरिद्विगाका भन हो गया । एक बार माणिकने रामदुलालको चीर सौ हाथों दे कर जहाज स्वर्गादनेके लिए टाला भेजा । टालामें जलमग्न जहाजोंका नीलाम हुआ करता था । रामदुलालने अपने माणिकके वहाँ रह व्यापार संबंधी ज्ञान लूच प्राप्त कर लिया था । जलमें डूबे जहाजोंके मूसका अनुमान करनेमें वे बड़े पिटहमन हो गये थे । जब रामदुलाल टाला पहुँचे उस समय नीलाम हो चुका था । अतएव उन्हें निराश होना पड़ा । परन्तु वहाँपर उन्हें माण्डूम हुआ कि इसी दिन एक दूसरे जलमग्न जहाजका नीलाम होनेवाला है । इस जहाजका बहुत बड़ा हाल उन्हें पड़छेमे ही माण्डूम था । जब नीलाम हुआ तो उस जहाजके नाम बहुत कम लगे । रामदुलाल ताड़ गये कि जहाजकी माण्डियल बहुत त्रिवागाकी थी, इस लिए उन्होंने अपने माणिकको बिना कुछ ही अपनी जोखिमग्न इस जहाजको खरीद लिया । खरीदनेके बाद वह बिगरेज व्यापारी वहाँ भा पहुँचा । उसने रामदुलालमें उस जहाजको खरीदना कहा । रामदुलालने एक साल स्वयं बना लकर उस जहाजको इस जहाजके हाथ बंध दिया । रामदुलालके मर्मेयका इस खरीदारी की कुछ भी खबर न थी । परन्तु रामदुलालने जोर कर बिजौरा मार्ग हाथ लगे अपने माणिकके सामने इस खबर का वद न माननेका मार्ग हाथ लद सुनाया । रामदुलालके स्वयं वद वदमान व भय न माननेकी कदर करना जानने लगे । इससे उस जहाज के कद वद माननेका समय न लकर रामदुलालकी ही है





## अपना सुधार, सुविधायें और कठिनाइयाँ।

शक्तियोंकी तेजी एक प्रकारका दोष भी हो सकती है। क्योंकि जो लड़का जल्द पाद कर लेता है वह पटुधा उतना ही जल्द भूल जाता है; और एक बात यह भी है कि उसको अगंठ उद्योग और आग्रहके गुणोंकी उन्नति करनेकी जरूरत नहीं पड़ती, परन्तु मंदमति युक्त इन गुणोंको काममें लानेपर मजबूत हो जाता है। ये गुण हरतरहकी अच्छी आदत डालनेके लिए बड़े मूल्यवान् हैं। डेवीने कहा था कि " मैं जैसा हूँ वैसा मैंने अपने आपको स्वयं बनाया है। " यही बात हरएक मनुष्यके विषयमें सच है। मनुष्य अपने आपको जैसा जी चाहे वैसा बना सकता है।

बढ़नेका मतलब यह है कि जब हम स्कूल या कॉलेजमें पढ़ते हैं तब हमारा सर्वोत्तम सुधार मास्टरोंद्वारा उतना नहीं हो सकता जितना हम बढ़े होनेपर मेहनत करके स्वयं कर सकते हैं। इस लिए मातापिताको इस बातकी जल्दी न होनी चाहिए कि उनके बच्चोंकी शक्तियोंकी उन्नति उचित समयसे पहले ही घटपट हो जाय। उनको चाहिए कि ये संतोषपूर्वक बाट देखते रहें; उत्तम उदाहरण और दान्त शिक्षाको अपना काम करने दें और दोष उनके भाग्य-पर छोड़ दें। उनको इस बातका ध्यान रखना चाहिए कि युवक किसी न किसी तरहका शारीरिक व्यायाम करता रहे, जिससे यह रूप तन्दुरुस्त हो जाय। उनको चाहिए कि ये युवकको आत्मोद्धारके मार्गपर लगा दें और उसके उद्योग और आग्रहकी आदतोंकी सावधानीके साथ वृद्धि करें। इसका परिणाम यह होगा कि अगर उसमें कुछ भी स्वाभाविक शक्ति है, तो वह ज्यों ज्यों बढ़ा होता जायगा त्यों त्यों जियादा मजबूतीके साथ और जियादा अच्छी तरह अपना सुधार करता चला जायगा।







## स्वार्थालम्ब्यता ।

बाल भी मनुष्योंके चरित्रपर बड़ा प्रभाव डालती हैं । वेस्टका कथन है कि “एक बार मेरी माताने मुझे प्यारसे पूछा था । इसका जवाब यह हुआ कि मैं चित्रकार बन गया ।” ये बातें देखनेमें छोटी बातें होती हैं, परन्तु मनुष्यका भारी सुख और मकलता बचपनमें ऐसी बातोंका योग मिल जानेसे निर्भर है । जब फ्रांससर्गेल बक्सटन अपने जीवनमें एक उध परत पहुँच गया तब उसने अपनी माताको लिखा था कि “आपने शुरूमें मेरे मस्तिष्क पर जो मित्रात्मक अंकित कर दिये हैं उनके असरका मैं निरंतर अनुभव किया करता हूँ । यदि जवाब मुझे लासकर उस एक अनुभूत होता है जब मैं दूसरोंके लिए कुछ काम करता हूँ ।” बक्सटन एक अनिश्चित मनुष्यका भी बहुत अहसान मानता था । बक्सटन इस मनुष्यके साथ खेड़ खेड़ा करता था, मारा होकर जाता था और शिकार रोड़ा करता था । वह मनुष्य छिपना पड़ता तो बिल्कुल न जानता था, परन्तु बड़ा समझदार और हानिर-उदाय था । बक्सटनने उसके विषयमें एक बार कहा था कि “वह मनुष्य स्वयं का हथ लिप बड़े कामका था कि वह ईमानदारी और आत्म-भौरवके नियमोंके अनुसरण करता था । जब मेरी माता मेरे पास न होती थीं तब भी वह कोई ऐसा बात न कहता था कि उसको मुनकर मेरी माता नाराज़ करती । वह ज्ञाने सामने मंदिर ईमानदारीका सबके ऊँचा आदर्श रखता था और बड़े बड़े शिष्टाचारोंकी पुस्तकोंमें जैसे पवित्र और उदार विचार मिलते हैं वेवे ही विचारोंसे वह मेरे मस्तिष्कको भरा करता था । वह मनुष्य मेरा प्रथम और सर्वोत्तम शिक्षक था ।” मैगडुलने अपनी मातासे जो शिक्षा पाई थी उसके विषयमें वह कहा करता था कि “यदि सारा संसार तराजूके एक पल्लुमें रखा जाय और मेरी माता दूसरे पल्लुमें, तो मेरी माता भारी निकलेगी ।” माताभोज समाजपर बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है ।

मनुष्यका कोई कर्म वा कार्य ऐसा नहीं है कि उसके साथ परिणामोंसे कुछ कम न देखा जाता हो । बातमेंसे बात निकलती चली जाती है और इसको यह कहना नहीं मान्य है कि उसका अन्त क्यों होता । हमारा कोई कर्म वा कार्य ऐसा नहीं है जो हमारे जीवनमें कुछ न कुछ फल-फलन न करता हो और दूसरोंसे दूसरेके जीवनपर भी प्रभाव न डालता हो । यदि हम कोई अच्छा काम करे या कोई अच्छी बात कहे, तो उसका फल











जिसे कल्याणका एक विरथायी भाँडार छोड़ जाता है, क्योंकि उसका जीवन नृसंहि जिसे आदर्श हो जाता है—नृमो अनुपम भविष्यमें उसके जीवनका अनुकरण कर सकते हैं। उसका जीवन नृमयमें सर्व वरजीवन कृष्णता रहता है और उसको हम बापके योग्य बनाना है कि वे पैदा ही जीवन व्यतीत कर सकें। अतएव जिसे पुष्पकमें किसी मनुष्यका जीवन-चरित्र दिया हो, वह बहुमुख कीर्तिमें मरी है। वह पुष्पक एक जीवन-वापी है या जो कहिए कि वह कुत्रि है। ऐसी पुष्पकें सर्वोत्तम उदाहरणोंमें मरी हुई होती हैं। हम उन उदाहरणीय महात्माओंके कामोंका अनुकरण करते अपना परम कल्याण कर सकते हैं।

यहां मरी हो सकता कि कोई मनुष्य महात्मा शोणाल कृष्ण गोमते, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर इत्यादिके जीवनचरित्र पढ़े और उसके विचारों से न हो जाय। ऐसे जीवनचरित्र पढ़नेसे वह मान्य होता है कि मनुष्य क्या हो सकता है और क्या कर सकता है। ऐसे जीवनचरित्र पढ़नेसे मनुष्यके पास विद्या नहीं पड़क सकती और उसके जीवनके उद्देश्य जैसे हो जाते हैं। सर्वोत्तम मार्ग के जानेसे, सर्वोत्तम पुष्पके पढ़नेसे और उसकी सर्वोत्तम कार्योंका अनुकरण करनेसे बड़ा लाभ होता है।

कभी कभी ऐसा भी हुआ है कि किसी मनुष्यको समय जानेके दिन हुए उधारे कोई बड़ी दिवाय हाथ वह गई जिसमें जीवनका कोई एक भाग नहीं था, और उस पुष्पके पढ़नेसे उस मनुष्यमें ऐसा उन्माद पैदा हो गया जिसे अविनाश की भाँसा भी न थी। अब एतद्वाक्यमें एतद्वाक्य की दिशा हुई पुष्पक पढ़ी नहींसे उसे विद्याप्यवका बड़ा भारी शोक हो गया। उस पुष्पकमें जीवनचरित्र लिखे थे। एतद्वाक्य पढ़नेसे एक वैदिक हो। वह एक नृमय बापक हो गया। हमने अपना भी वह जानेके दिन एक पुष्पक पढ़नेके लिए मारी। इसीसे हमको एक पुष्पक के ही जिसमें मनुष्य-जैसे जीवनचरित्र लिखे थे। अब उस पुष्पके पढ़नेसे हमके दिमागें बड़े बड़े होत पैदा हुआ कि वह हमी समयमें एक वैदिक जीवनवादी बनानेमें काम लगा। हमने अपने उसका एक जीवनचरित्र ही मारा जिसे जाना है। इसी तरह हमने भी एतद्वाक्यमें एतद्वाक्यमें एतद्वाक्यमें एतद्वाक्यमें एतद्वाक्यमें काम किया है। हमका काम यह था कि हमने एक पुष्पक पढ़ी थी जिसमें

जान हुआ जीवनधरित और ऐन्द्रलिते थे । 'प्रार्थिग लेपिभरके जीवन-धरित' का डाक्टर सुल्फर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपना जीवन धर्म-अधारके लिए अर्पण कर दिया ।

जो मनुष्य प्रसन्नतासे काम करते हैं वे सुषर्कोंके सम्मुख एक अर्पण उप-योगी उदाहरण उपस्थित करते हैं । इस उदाहरणका प्रभाव दूसरोंके मनुष्य ही पड़ता है । प्रसन्नतासे मनमें प्रहणशीलता आती है । प्रसन्नताके सामने भूत प्रेन उठते पैरों भाग जाते हैं—उनका हर काम भी नहीं पटवने जाता है । कठिनाइयोंसे निराशा नहीं होती है, क्योंकि उनका सामना करने समय हमको सफलताही आता रहती है; और समयमें ऐसी कुछ गुती पैदा हो जाती है कि उसके कारण मनुष्य सुयोगोंको हाथसे नहीं जाने देता और उसकी असफलता भी बहुत कम होनी है । जिसरी तपीपनमें जोरा होता है वह मनुष्य सदैव प्रसन्नचित रहता है । ऐसा मनुष्य स्वयं प्रसन्नतासे काम करता है और दूसरोंको भी काम करनेमें उत्साहित करता है । जोराके साथ काम करनेसे अत्यन्त साधारण कामोंमें भी गौरव आ जाता है । सबसे अधिक सारगर्भित काम बहुत ही होता है जो भरपूर उत्साहके साथ किया जाता है और जो ऐसे मनुष्यके हाथों या मस्तिष्कके द्वारा होता है जिसका चित्त प्रसन्न रहता है । हम कहा करते थे कि "सुखी प्रसन्नचित रहना पसन्द है, परन्तु हास रसदेकी आमदनीवाली जायदादका आलोक बनकर भी उदास रहना पसन्द नहीं है ।"

प्रिनसिल शार्प दिन भर सतत मेहनत करके शामके घण्टा गाना गाकर और बाजा बजाकर अपना जी खुश किया करते थे । फुफसवेल्थ वफसटन भी बड़े प्रसन्नचित रहते थे । उन्हें मैदानोंमें जाकर तरह तरहके खेल खेलना बहुत पसन्द था । वे अपने बच्चोंको साथ लेकर घोड़ेकी सवारी किया करते थे और उनके साथ सब तरहके घरेलू खेलोंमें शरीक होते थे ।

डाक्टर वार्नेल्ड एक उत्तम कर्मवीर थे । वे बड़ी प्रसन्नता और उत्साहके साथ काम करते थे । उन्होंने अपना सारा जीवन नौजवानोंको शिक्षा देनेमें लगा दिया । वे अपना काम मन लगाकर करते थे । उनकी मंडलीके सभी लोग प्रसन्नचित होकर काम करते थे । जो नया मनुष्य उनकी मण्डलीमें जाता था



उसको तुरन्त ही अनुभव होता था कि यहाँपर कोई बड़ा काम बहुत उत्साहके साथ हो रहा है। उस मंडलीके हर एक शिष्यको अनुभव होता था कि मेरे लिए यहाँपर काम मौजूद है और उस कामको करना मेरा कर्तव्य है; मेरा मुख भी उसीपर निर्भर है। इस तरह वहाँ प्रत्येक युवकमें काम करनेका उत्साह पैदा हो जाता था। उसको यह ज्ञानकर बड़ी खुशी होती थी कि मैं भी कुछ काम करके दूसरोंका उपकार कर सकता हूँ और इसलिये मेरा जीवन आनन्दमय हो सकता है। उसको अपने शिक्षक (डाक्टर आर्नेस्ट) से प्रेम हो जाता था और वह उनका आदर करता था, क्योंकि डाक्टर आर्नेस्ट उसको जीवनकी कदर करना और आत्म-सम्मान करना सिखाते थे और वह बतलाते थे कि संसारमें रहकर उसको क्या काम करना चाहिए और उसके जीवनमें क्या उद्देश होना चाहिए। आर्नेस्टके विचारोंमें संकीर्णता न थी। उनके विचार बड़े उदार और सच्चे थे। वे हरतरहके कामकी कदर करना जानते थे और किसी भी कामको बुरा न समझते थे। वे समाजके लिए और प्रत्येक मनुष्यके लिए हर एक कामकी उपयोगिताको खूब समझते थे। आर्नेस्टने जनसेवाके लिए बहुतसे मनुष्योंको तैयार किया था। उनमेंसे एक महाशय भारतवर्षमें भी आये थे। उन्होंने अपने एक पत्रमें अपने पूर्व शिक्षकके विषयमें यह लिखा था:—“उन्होंने मेरे ऊपर जो प्रभाव डाला है उसके बड़े स्थायी और महत्वपूर्ण परिणाम हुए हैं। उस प्रभावको मैं भारतवर्षमें भी अनुभव करता हूँ; इससे अधिक और क्या लिखूँ!”

जो मनुष्य सच्चे दिलसे और उत्साहके साथ परिश्रम करता है वह अपने पक्षीसियों और अभीर्बोंपर बड़ा अच्छा प्रभाव डालता है और बहुत कुछ स्वदेशसेवा कर सकता है। इस बातका उदाहरण सर जान सिंक्लेरके जीवनसे बढ़कर शायद ही कहीं मिल सके। सर जान सिंक्लेरके विषयमें एक महाशयने कहा है कि “उनके बराबर बिना थके हुए परिश्रम करनेवाला मनुष्य समस्त यूरोपमें कोई न था।” सर जान सिंक्लेर एक जमींदार थे। उनकी जमींदारी स्कॉटलैण्डके एक ऐसे जिलेमें थी जिसमें सम्यताकी हवा भी न पहुँची थी। वह जिला समुद्रके किनारे था और उसमें जंगल और पहाड़ोंकी भरमार थी। जब सर जान सिंक्लेर सोलह वर्षके हुए तब उनके पिताका देहांत हो गया, इस लिए उनको छोटी उम्रसे ही अपनी





समय पर ही जाना हुआ कि सर जान जमनेवाले लिए धर्मद्वयक रचना उत्तम करने हैं। उन्होंने सर जानकी सुनाकर कहा कि "आप जो बात चाहें उसीमें मैं आपकी सहायता करनेको तैयार हूँ।" यदि और कोई होगा तो हम समय पर अपनी उन्नति या अपने लाभकी इच्छा प्रकट करेगा; परन्तु सर जानने अपने स्वभावके अनुसार उत्तर दिया कि "मैं अपने लिए कोई अनुग्रह नहीं चाहता। मुझे तो सबसे ज़्यादा खुशी हम बातों में है कि आप एक हृषिकेश्वरी जातीय परिषद् स्थापित करनेमें मुझे सहायता दें।" पिछले हम बातचीत काजी बट्ट जी कि ऐसी परिषद् कभी स्थापित नहीं हो सकती; परन्तु सर जानने बहुत परिश्रम करके जनसाधारणका ध्यान हम और आपकी दिया और राजगभाके अधिकारों सदस्योंको अपने घरमें कर दिया। अन्तमें सर जान हम परिषद्के स्थापित करनेमें सफल हुए और वे स्वयं उसके सभापति नियत किये गये। हम परिषद्में कितना लाभ हुआ इसके लिखनेकी यहाँ जरूरत नहीं है, परन्तु उसमें हृषिकेश्वरी ऐसी जोत पैदा कि करोड़ों एकड़ जमीन जो पहले बंजर पड़ी थी उपजाऊ बना ली गई।

सर जान जिस कामको हाथमें लेते थे उसमें स्वयं उम्माद दिखाते थे जिससे बेकार मनुष्योंमें जागृति पैदा होती थी, आलसी मनुष्योंमें जोत पैदा होता था और आनायुक्त मनुष्योंमें उम्माद पैदा होता था। वे और लोगोंके साथ खुद भी काम किया करते थे। एक बार जब यह खबर लगी कि फ्रांसवाले हैरलीण्डपर आक्रमण करनेवाले हैं तब सर जानने मिस्टर पिट्टसे कहा कि "मैं अपने जिलेमेंसे एक अच्छी सेना तैयार करूँगा। आता है कि आप उसे अवश्य स्वीकार करेंगे।" इसके बाद सर जानने ६०० आश्रमियोंकी एक पलटन तैयार की। थोड़े ही समयमें हम पलटनमें १००० सैनिक हो गये और यह स्वयंसेवकोंकी अति उत्तम सेना समझी जान लगी। हम पलटनके सैनिकोंमें सर जानके ही समान देशभक्तिका भाव भरा हुआ था। सर जानने वह तरहके काम अपने हाथमें ले रखे थे, परन्तु फिर भी उनके पुत्रोंके व्यवहारका समझा समझा जाता था। इन पुत्रोंमेंसे उन्नीस जनों का लालन किया। उन्नीस जिनमें से एक पुत्र का लालन वह उस विधिवर सहायता के समझी जान लगी। उनका एक पुत्र १५।३८ नाम सम्मानित था। हम पुत्रोंके स्वभाव के अनुसार उनका लालन करने के लिए















मुन कर सिकन्दरने पोरसको क्षमा कर दिया और उसका सारा जीता हुआ राज्य फेर दिया । आपत्तिके समयमें सत्यशील मनुष्यका चरित्र अत्यन्त तेजसवीं साय प्रकाशित होता है और जब कोई भी चीज काम नहीं आती तब वह अपनी सत्यपरता और साहसके बलपर खड़ा रहता है ।

लार्ड हर्सेकिनेके विचार बड़े ही स्वतंत्र थे । वे जिन चरित्रके दिग्दर्शन अनुसार चलते थे वे ऐसे अच्छे हैं कि उनको हर एक युवकको अपने हृदय पर अंकित कर लेना चाहिए । वे कहा करते थे कि “गुरु जवानीमें मैं पहले पहल यही सीखा था कि मैं अपने भले बुरे समझनेवाले अंतःकरणके आज्ञाके अनुसार कर्तव्यपालन करूँ और अपने कामोंके फलको परमात्मा को दे दूँ । मैं इस उपदेशको जीवनपर्यन्त याद रखूँगा और सदैव इसीके अनुसार चलूँगा । मैंने अब तक इसी उपदेशके अनुसार काम किया है । मुझे कभी यह शिकायत करनेका मौका नहीं मिला कि इस उपदेशके अनुसार जब मैंने मुझे कोई छोड़िके हानि हुई है; बल्कि इसके अनुसार चलनेमें मुझे उन्नति और धनकी प्राप्ति हुई है; और मैं अपने बच्चोंकी भी इसी मार्गपर चलनेकी शिक्षा दूँगा ।”

जीवनका एक सबसे बड़ा उद्देश यह है कि मनुष्य अपने चरित्रको अच्छा बनावे । इस उद्देशकी प्राप्तिके लिए प्रयत्न करनेसे ही मनुष्यमें उन्नति पैदा हो जायगा और मनुष्यत्वकी महत्ताको वह ज्यों ज्यों समझना जायगा । तब ही उसका उद्देश सजीव और दृढ़ होता जायगा । जीवनका उद्देश कैसा होना चाहिए, चाहे हम वहाँ तक पहुँच न सकें । मिस्टर डिजरेल्लीने कहा है कि “जो युवक ऊपरकी तरफ न देखेगा वह नीचे देखने लगेगा । क्योंकि जो आत्मा ऊँचे विषयोंमें आनन्द नहीं पाता वह नीचे विषयमें मग्न हुए बिना नहीं रह सकता । अतः जो मनुष्य ऊँचा उद्देश नहीं रखता वह अवश्य ही नीचा हो जाता है । जॉन हर्बर्टन कैसा बुद्धिमानकी बात कही है:—“युवकोंके साथ नम्रताका वर्णन करा और अपने उद्देश के लक्ष्य पर ध्यान देना । ऐसा करनेसे युवक विनम्रता और उदारचित्त हो जायगा । अपने मार्गकी नीच न बनाओ । जो मनुष्य आकाशकी लक्ष्य तक निजाना मारना है उसका नीच और उस मनुष्य बटुन के नीचे नीचा न हो जाय । जो उन्नति निजाना मान कर नीचे चलता है ।”

जिस मनुष्यके जीवनका उद्देश ऊँचा है वह उस मनुष्यमें अवश्य अच्छा रहेगा

















विलियम फ्रांट और थॉर्नस फ्रांट एक किसानके लड़के थे । जिस ग्राममें वे रहते थे उसके पास होकर एक नदी बहती थी । एक बार उस नदीमें ऐसी बाढ़ आई कि उनकी सब चीजें बह गईं, यहाँ तक कि जिस जमीनपर वे खेती करते थे वह भी बह गई । गरज यह कि वह किसान और उसके दोनों लड़के सब तरहसे लबाड़ हो गये । इस मुसीबतने उनको बेचम कर दिया । साधारण के लोग वहाँमें मीकरीड़ी तथा-ग्रामें निकले । चलने चलने के लेंकशरके जिलेमें पहुँचे । वहाँ के एक पहाड़ी-पर बंद गये और उसपरसे आसपासकी जमीनको और इर्दगिर्द नदीको देखने लगे । वे इस जिलेमें पहले कभी न आये थे और न वहाँका कुछ ज्ञान प्राप्त था, इसलिए पहाड़ीपर चढ़े होकर वह देखते रहे कि अब किस तरहको चालना चाहिए । कुछ देर सोचनेके बाद उन्होंने अपनी चालाका मार्ग इस तरह निश्चित किया,—उन्होंने उस पहाड़ीपर एक छड़ीको सीधी गड़ी कर छोड़ दी और वह सोच लिया कि जिस तरह वह छड़ी गिरेगी उसी तरह चल पड़ेंगे । कम जिस तरह वह छड़ी गिरी उसी तरह वे लोग चल दिये । चलने चलने के एक ग्राममें पहुँचे । वहाँ उनको एक छात्रालयमें काम मिल गया और उन दोनोंने काम सीखना शुरू कर दिया । दोनों भाई वेने मेड-मर्न, मॅगमी और ईमानदार से कि उन्होंने छात्रालयेके मास्टरको अपने गुनीये शीघ्र ही प्रगट कर लिया । कुछ समय तक वे इसी तरह परिश्रम करने रहे और उन्होंने दूसरी उच्चति का की कि अपना निजी छात्रालय खोल दिया । इसके बाद वे बहुत जल्दी तक परिश्रम और उद्योग करने रहे और दूसरोंकी अपेक्षामें लगे रहे । इसका मर्ममा यह हुआ कि वे धनवान् हो गये और जिस कोशमें उनकी ज्ञान वृत्तान्त हो गई थी वे उनका बड़ा भाद्र करने लगे । उन्होंने कई छात्रालये और स्कूलोंके मिल मोल दिये जिससे उन जिलेके बहुतसे बालबालिकाँके लिए मीकरी और धर्म निकल आया । उन्होंने जिस काममें परिश्रम किया वह सब मोल समझ कर दिया । इससे उनको अच्छी सफलता हुई । उनके परिश्रमके कारण उस प्रगट रीतिवत् ही रीतिवत् मर्मा जाने लगी । यहाँ तरह कार्यद्वारा, अन्तर्, अन्तर् और चमका मर्मा हो गया । अच्छे विद्वान् चरमसे वे की उन्नतके साथ सब तरहके अच्छे कार्यके लिए सब देने लगे—उन्होंने सिद्धे बन्दारे, बहुत बन्दारे किये और मर्माके



अपने मुगीबनका हाल सुनाया और सर्दीफिकेट सामने रख दिया। रिडि-  
यमने कहा कि "एक दूरे तुमने हमारे विरुद्ध एक पुष्पक लिखी थी।"  
सौदागरका दिल धड़कने लगा और वह सोचने लगा कि अब मेरा सर्दीफि-  
केट भागमें झोंक दिया जायगा; परन्तु विलियमने ऐसा न किया। उसने उस  
सर्दीफिकेटपर अपने कारवालेकी तरफसे अपने दस्तखत कर दिये और  
सर्दीफिकेटको सौदागरके हाथमें देकर कहा कि "हमारा यह कायदा है कि हम  
द्विती इमानदार सौदागरके सर्दीफिकेटपर हस्ताक्षर करनेमें ह्मकार नहीं  
करते और हमने आज तक तुम्हारी इमानदारीके विरुद्ध कोई बात नहीं सुनी  
है।" उस सौदागरकी आँखोंमेंसे आँसुओंकी धारा बहने लगी। रिडियमने  
कहा कि "तुमको मान्य होना उस समय मैंने कहा था कि तुम पुष्पक  
लिखनेपर पश्चात्ताप करोगे। आविर रही बात हुई। परन्तु मैंने जो कुछ कहा  
था वह हम नीयतसे नहीं कहा था कि मैं तुमको घमडी देना चाहता था,  
किन्तु मेरा मतलब यह था कि द्विती दिन तुम हम लोगोंकी कद्र करोगे  
और तुमने हमको जो दुःख दिया है उसपर पछतावा करोगे।" सौदागरने  
कहा कि "मैं गणमुख पछता रहा हूँ।" रिडियमने फिर कहा कि "अच्छा  
तो तुम हम लोगोंको अब पहिचान गये कि हम कैसे आदमी हैं। लेकिन यह  
तो कहो कि अब तुम्हारी क्या हालत है—अब तुम्हारा क्या करनेका इरादा  
है?" सौदागरने उत्तर दिया कि "सर्दीफिकेट मित्र जानेवर मेरे मित्र मेरी  
सहायता करेंगे।" रिडियमने पूछा, "लेकिन मात्र कम तुम्हारी क्या  
हालत है?" उसने उत्तर दिया कि "महाजनोंके कई चुल्हानेके लिए मैं  
आपना सर्वस्व दे चुका हूँ और अब मैं आपने कुटुम्बके निर्वाहके लिए ज़रूरी  
चीज़ें भी नहीं खरीद सकता हूँ। यदि मैं अपना सब करने न चुकाला,  
तो मुझे सरकारसे पुनः ध्यानारक लिए सर्दीफिकेट भी न मिल सकता।  
रिडियमने कहा कि 'माइंग'द्वारा, मैं यह नहीं देख सकता कि तुम्हारी बीबी  
और बच्चे इस तरह दुःख जानें। इसका कुछ खास दिव्य मुझसे यह हम निंद  
है जो उन्हें के साथ न जानें। हे! हे! तुम मान क्यों हो? अब  
मेरे पास एक रास्ता है जिससे मैं आपको इससे बचाऊंगा। आपकी बीबी  
आपके बच्चों को भोजन कराऊंगा और मैं आपको उनसे निकल कर बाहर छोड़ दूंगा। मैंने  
आपको बहुत से लोगों से कहा है कि वे मेरी मदद करें। मैंने बहुत से लोगों से कहा है कि वे मेरी मदद करें। मैंने बहुत से लोगों से कहा है कि वे मेरी मदद करें।



सोचा तब इस काममें भी राजराजजी उनके पास सहायक रहे और निरंतर सागर प्रेमकी बरीकत राजराजजी भी माछामाछ हो गये । वे मरुत बनाने के काममें बहुत ही भिपुण थे । उनका स्वभाव ऐसा अच्छा था कि सर्वसाधारण उनका बड़ा सम्मान करते थे । सरकारने भी उनकी मूर्ख इज्जत की थी—उनके 'जे० पी०' परये अलंकृत कर दिये था । वे जन-सेवामें मूर्ख लोग देने के और अच्छे कामोंमें अपनी गिरहका हजारों रुपया खर्च कर देते थे ।

सच्चा सज्जन वही है जिसका स्वभाव सर्वोत्तम आदमीके अनुकरणसे बना हो । सज्जनोंकी छेड़ता और शक्ति सब युगोंमें मानी गई है । 'सज्जन' शब्द बना नहीं है । सज्जन अपनी सज्जनतासे मुँह नहीं मोड़ता, चाहे वह कद और मध्यमें ही क्यों न फैला हो । सज्जनता एक तरहका पर है, क्योंकि अपने उदार मनुष्य सज्जनका आदर करता है । जो मनुष्य कोरे-पदाधिकारी होते हैं, परन्तु उनमें सज्जनता नहीं होती उनके सामने कुछ लोग फिर नहीं झुकते, परन्तु सज्जनका वे भी आदर करते हैं । सज्जन मनुष्यके गुण फैलावसे निर्मित नहीं हैं किन्तु सचरित्रतावर—उनके अधिकारकी सीमाओंपर नहीं किन्तु उनके स्वाभाविक गुणोंपर निर्मित हैं । किसी कविने कहा है कि "सज्जन वह है जो ईमानदार हो, अकमनस्याहकता बनाव करता हो और अपने दिक्में सब सोचता हो ।"

सज्जनमें एक गुण अवश्य होता है । वह यह कि उसे बड़ा स्वभाव रहता है, क्योंकि वह अपनी कदर करता है—अपने आत्मो नहीं समझता । वह अपने चरित्रकी भी कदर करता है—सबसे चरित्रकी केवल उन्हीं वालोंकी कदर नहीं करता जो दूसरोंको रिक्तार्थ देते हैं किन्तु उन वालोंकी भी करता है जिन्हें वह स्वयं देखता है । वह इन वालोंकी कदर करता है जिसको उसका अंतःकरण अच्छा बैठता है । और वृत्ति वह अच्छा सम्मान करता है, इस लिए वह दूसरोंकी भी कदर करता है । मनुष्य मात्रको मानवका मात्र समझता है और इस विधासे उसके बचन, काम, कृत्यपुत्रा भी दया भा जाती है । अस्टिडस मद्रनेव मोरिबिन्द राजदेके कारण कहा जाता है कि एक दिन वे कच्छरियों का सौं थे । राजासे एक कृत्रिम कच्छरिका बोझा चरनीय रहने लगी थी । वह बड़ी दृढ़ बोझका निराश रहने लगती थी । इस लिए वह गई थी और वहीं आकर उसने इन





जाने पैलिगटनको माफूस थी, परन्तु वे अभी किसी भीतर प्रकट न की गई थी । इस भेदको जाननेके लिए निजामका मंत्री पैलिगटनको १५ लाख रुपये भी त्रिपारा देने लगा । पैलिगटन पहले कई सेकंड तक उस मंत्रीके मुँहकी ओर चुपचाप देखते रहे और फिर यों बोले, “अच्छा, तो तुम इस भेदको त्रिपारा सकते हो ? किसीके कहोगे तो नहीं ?” मंत्रीने जवाब दिया कि “मैं इस भेदको बेसाक त्रिपारा सकता हूँ ।” तब पैलिगटनने हैराण कहा कि “तब ऐसा ही मुझे समझो । त्रिपारा तरह मुम बनने भेदको त्रिपारा सकते हो उस तरह मैं भी अपना भेद त्रिपारा सकता हूँ ।” तब वह वर पैलिगटनने मंत्रीको मुकदमा प्रमाण दिया और बेचारा मंत्री सजाके सारे बंदीगै मुक्त ही चला दिया ।

पैलिगटनके नामेंदार सार्वजिन आर पैलेजली भी ऐसे ही उदात्तरिण थे । एक बार इंग्लैंड इटाली कम्पनीने पैलेजलीको मैगूरकी रिजर्गके उपलक्ष्यमें १५ लाख रुपये भेंटकर देना कहा, परन्तु पैलेजलीने साफ इन्कार कर दिया । पैलेजलीने कहा था कि “इस बातकी जरूरत नहीं है कि इस समय मैं वह बलाभाई कि मेरा चरित्र किमता स्वरूप है और मैं त्रिपारा हूँ इसकी मरणा किमती नहीं है । इस दो वर्षों वर्षों बानोंके उपराग्न कई बाने और भी हैं त्रिपारे कारण मैं इस भेदको मरणीकार करता हूँ । मैं इस भेदको अच्छा नहीं समझता । मैं धन्यगी सेनाके त्रिपारा और किमती यीजरी पुन्यदाह नहीं करता । मेरी सेनाके इन वीर मैकिरीके त्रिपारेमें वहि कुछ कमी की जायगी तो अवश्य ही मुझे बड़ा दुःख होगा ।” पैलेजलीने भेदको अपनी कार करनेका जो इरादा कर दिया था उसे कोई भी न बदल सका ।

धन और परका सभी मृतकनाके साथ कोई प्रतीति दीव्य नहीं है । निर्विक मृत्यु ही सदा मरणा हो सकता है—उसके भागोंमें और सेजसगीके कारणोंमें मृतकता हो सकती है । वह ईमानदार, सदा, सदा, सदा, संवरी, सादगी, अद्विती कदा करनेवाला और कल्याणकारी हो सकता है—और इसीका सदा मरणा बनना कहते हैं । त्रिपारा मृत्युके साथ यह न हो परन्तु इसके साथ मरणा ही वह एक मृत्युने सदा मरणा करता है । त्रिपारा सदा सदा न हो परन्तु एकके साथ त्रिपारा ही सदा सदा मरणाके साथ सदा सदा नहीं है । न तो सदा सदा है और त्रिपाराके साथ सदा सदा सदा ही सदा ही सदा ही है ।



## स्वायलम्बन ।

बुदबुदाहट न की । जहाज डूब गया और उसके साथ वे वीर पुरुष भी डूब गये । उन सज्जनों और वीरोंकी जय हो । ऐसे पुरुषोंके उदाहरण कभी मिल नहीं सकते हैं । त्रिम तरह उनकी स्मृति अमर है, उसी तरह उनके उदाहरण भी अमर हैं ।

सन् १९१२ ईसवीमें अटलाण्टिक महासागरमें टाईटैनिक नामक जहाज भी इसी तरह डूबा था । इस दुर्घटनाका हाल हम लोगोंने समाचारपत्रोंमें पढ़ा था और उसकी सुष हम अभी तक नहीं भूले हैं । इस अवसरपर भी अनेक वीरोंने अपनी वीरताका परिचय दिया था । टाईटैनिक ऐसा मजबूत बनाया गया था कि लोगोंको आशा थी कि इस जहाजको कोई भीज हानि न पहुँचा सकेगी, परन्तु मनुष्य सोचता कुछ है और होता कुछ है । टाईटैनिक समुद्रमें तैरती हुई एक हिम-शिलाने टकराया गया और उसमें छिद्र हो गया । नावें इतनी न थीं कि सब लोग उनमें बैठकर अपने प्राण बचा सकते । कायर मनुष्योंके साथ उस जहाजमें अनेक वीर पुरुष भी थे । ईंग्लैंडके सुप्रसिद्ध मामिस्ट्रस 'रिच्यू आफ रिच्यूज' के संवादक स्ट्रेड जैसे महानुभाव भी उस जहाजमें सफर कर रहे थे । जब जहाजमें टकराव लगी और उसमें पानी भरने लगा तब कप्तानने हुक्म दिया कि "पहले स्त्रियों और बच्चोंको नावोंमें बिछलाकर बचाया जाय ।" कप्तानकी आज्ञा पाने ही सब पुरुष पीछे हट गये और स्त्रियों और बच्चे नावोंमें बैठ कर चले दिये । बहुतसे वीरोंने उस समय दूसरोंके प्राण बचाये और वे स्वयं जलमें डूब गये ।

"आये नहीं आठ सौ जन भी नौकायें भर गईं तमाम,  
सोलह सौ यात्री निर्भय हो मर कर अमर कर गये नाम ।  
बढ़ मरना भी दर्शनीय है, है सजोबताका वह चित्र,  
उप स्वर्गीय भावकी भाषा प्रकट करेगी कैसे मित्र ।  
बढ़ देखो अस्तरसे धनपति तथा स्ट्रेडसे नैतिक वीर,  
एक एक सामान्य मनुष्यकी रक्षा कर तब रहे शरीर ।"

सज्जन मनुष्यको पहचाननेके लिए कई तरहसे परीक्षा की जा सकती है, परन्तु एक परीक्षा ऐसी है जिसमें कभी धोखा नहीं होता—बढ़ अपने अभी-भीतर छिप्त प्रकार प्रकट करता है ? वह स्त्रियों और बच्चोंके साथ कैसा



६—कर्नल सुरेशविश्वास । अत्यन्त आश्चर्यजनक घटनाओंसे भरा हुआ एक अद्भुत जीवनचरित । अतिशय डरपोक कहलानेवाले बंगालियोंका एक आधारा अशिक्षित लड़का दुनियां भरमें मटकते मटकते केवल स्वावलम्बनके मूलसे अन्तमें अमेरिकाके एक राज्यका सेनापति कैसे हो गया और शरीर-शास्त्र, घनस्पतिशास्त्र आदिका महान् पण्डित कैसे हो गया, यह इसके पढ़नेसे ही मालूम हो सकता है । मू० ॥)

७—आयरलैण्डका इतिहास । पराधीन आयरलैण्डका इतिहास नवयुवकोंके लिए बहुत ही शिक्षाप्रद है । इसके पहले भागमें देशका गैलिकवाद इतिहास और दूसरे भागमें अर्ल आफ चार्लमोंट, हेनरी प्रटन, उल्स्टोन-राबर्ट एमेट, डेनियल ओकावेल्, स्मिथ ओन्नायन, आइजिक बट, और पॉर्नेल इन आठ प्रसिद्ध प्रसिद्ध आयरिश देशभक्तोंके जीवनचरित हैं जो देशसेवकोंको मार्गदर्शकका काम दे सकते हैं । मू० ॥॥॥२)

### दूसरोंके प्रकाशित किये हुए—

गेरीवालडी

ले०—केलकर

१॥)

स्वीसेप मेजिनी

॥ छात्रपतराय

१॥)

### अस्तोदय और स्वावलम्बन

अर्थात्

गिम्ना, पढ़ना, और अपने पैरों खड़े होना ।

यह एक गुजरानी विद्वानके लिखे हुए सुप्रसिद्ध ग्रन्थका अनुवाद है जो विल्कुल मूलक हैल्प ( स्वावलम्बन ) के उपाय लिखा गया है और विल्कुल भारतीय भावों तथा उदाहरणोंसे भरा हुआ है । स्वावलम्बनक पटनवालोंको इस नी एक बार अवश्य पढ़ना चाहिए । स्वावलम्बनका पाठ विम्वलानक लिए यह भी बहुत उपयोगी ग्रन्थ है । इसके प्रारम्भिक भागमें यह शिक्षा विशेष मिलती है कि पढ़ना और बड़ना, वृद्धि और क्षति, उद्यान और पतन प्राकृतिक है, इनमें हम और शोक न करना चाहिए । गुजरानीमें यह वाक्य ग्रन्थ है और आठ नी बार उप चुका है । मू० १॥२)





